आज़ादी का अमृत महोत्सव

रेशम वाणी

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अंक : 55 (जून, 2022)

"सोंधी सुगंध, मीठी सी भाषा, गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा"

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, भारत
CENTRAL SILK BOARD, INDIA

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस
(केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)
पिस्का नगड़ी, राँची - 835303 (झारखण्ड)

प्रधान सम्पादक की कलम से...

रेशम, अंक–55 (जून, 2022) सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मन प्रफुल्लित हो रहा है। रेशम वाणी के माध्यम से हम तसर रेशम उद्योग की नूतनताओं को प्रबुद्ध पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा पत्रिका में साहित्यिक विधाओं को समाहित कर इसे बहु पुष्प रूपी माला के रूप में प्रस्तुत करना भी हमारा ध्येय है। हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। आजादी के 75 वर्षों की लम्बी यात्रा में हिन्दी ने भी कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। 14 सितम्बर, 1949 को जब हिन्दी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया गया तो इसके सामने दुरुह परिस्थितियाँ मुँह बाए खड़ी थी। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी को राजभाषा बनाने के पीछे सबसे बड़ी वजह यही थी कि हिन्दी ही एकमत्र भाषा परिलक्षित हो रही थी जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोनी की क्षमता रखती थी। हिन्दी इन अपेक्षओं पर खरी उतरती चली गई और पूरे देश की क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करती हुई निरंतरता को प्राप्त करती रही। भारत के माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह ने हिन्दी दिवस संदेश में इस बात का उल्लेख किया है कि राजभाषा हिन्दी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

यह हिन्दी के प्रभाव का ही परिणाम है कि यह अब रोजगार की भाषा बन रही है। भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी के समक्ष काफी चुनौतियाँ हैं किन्तु अपनी सहजता, सरलता व बोध गम्यता के बल पर हिन्दी इन चुनौतियों का भी डटकर मुकाबला कर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी कदम–से–कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है।

भारत विश्व का एकमात्र देश है जहाँ रेशम की चारों प्रजातियाँ–शहतूत, तसर, मूगा एवं एरी का रेशम उत्पादन होता है। यह व्यवसाय मुख्यता निर्धन एवं जनजातीय आबादी द्वारा आर्थिक आय अर्जित करने हेतु अपनाया जाता है। किसी भी अनुसंधान का उद्देश्य होता है कि उसके सार्थक परिणामों का लाभ उसके उपयोगकर्ता को मिले। अनुसंधान के परिणाम यदि उपयोगकर्ता को उनकी भाषा में सहज रूप से उपलब्ध होंगे तो वे नवीन तकनीकियों को अपनाते हुए अभीष्ट फल प्राप्त कर सकेंगे। तसर रेशम उद्योग में विकसित नवीन तकनीकियों को कीटपालकों एवं अन्य हितधारकों तक उनकी भाषा में उपलब्ध कराना हमारा मुख्य उद्देश्य है और इस उद्देश्य की प्राप्ति में रेशम वाणी के माध्यम से प्रकाशित तकनीकी आलेख काफी कारगर सिद्ध हो सकते हैं। तसर रेशम कीटपालकों की आजीविका में वृद्धि कर उनका सामाजिक–आर्थिक उत्थान हमारा परम ध्येय है। इस ध्येय की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए यह संस्थान निरंतर विविध प्रकाशनों के माध्यम से प्रत्यत्नशील है जिसमें हमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित रहता है।

हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि रेशम वाणी के लिए आप सभी का रचनात्मक सहयोग हमें यथावत् मिलता रहेगा। पत्रिका में निरंतर परिमार्जन का क्षेत्र सदैव खुला रहता है। उसके लिए हमें आपकी प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा रहेगी। आपकी प्रतिकियाएँ हमें आगामी सुधारों के लिए प्रेरित करेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ. के. सत्यनारायण)
निदेशक

रेशम वाणी
अंक : 55
(जून, 2022)

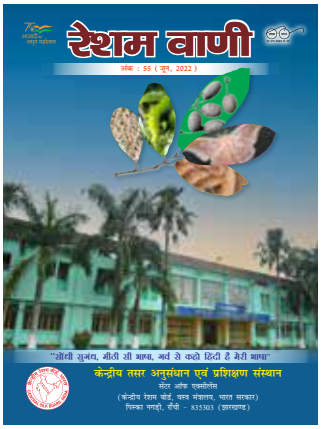

प्रधान सम्पादक
❖ डॉ. के. सत्यनारायण
निदेशक

प्रबन्ध सम्पादक
❖ डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय
वैज्ञानिक–डी

सम्पादक
❖ कमल किशोर बडोला
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सम्पादन सहयोग
❖ हिमांशु शेखर राय
वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी)

शब्द संसाधन
❖ सिकन्दर रविदास
आशुलिपिक, ग्रेड–I

छायांकन
❖ तिमिर अधिकारी
वरिष्ठ कलाकार

विभागीय पत्रिका
❖ निःशुल्क वितरण हेतु

सम्पर्क
सम्पादक, रेशम वाणी,
केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
पिस्का नगड़ी, राँची – 835303, झारखण्ड
दूरभाष : 0651.2775626.
फैक्स : 0651.2775629
ई–मेल : ctrtihindi@gmail.com
ctrtiran.csb@nic.in
वेबसाइट : www.ctrtiranchi.co.in

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार और मत रचनाकारों के निजी हैं उनसे संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय–सूची

भाषा और साहित्य

❖ देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिन्दी की भूमिका खंड–खंड इतिहास में अखंड हिन्दी	यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी	2
❖ भाषा का भाव और संस्कार समझना भी आसान नहीं है	ओम प्रकाश मंजुल	7

तकनीकी आलेख

❖ तसर रेशम उद्योग का भावी परिदृश्य एवं विभिन्न पहलू/आयाम	डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय	10
❖ तसर के सरिहन पारि–प्रजाति संरक्षण में विशाल साल वृक्षों की भूमिका	डॉ. शांताकार गिरि	12
❖ पूर्व वसन्त ओक तसर कीटपालन	ए.एस.वर्मा	15

कहानी

❖ लतीफ बाबू	नवीन कुमार सिन्हा	21
❖ गाँव के गले में फाँसी	अंकुश्री	25
❖ तरक्की	डॉ.देवांशु पाल	30
❖ और, रजनीगन्धा मुरझा गये...	महेश कुमार केशरी	33
❖ बादाम	डॉ. रंजना जायसवाल	36

लघुकथा

❖ हल्के गहने	सविता दास सवि	24

व्यंग्य

❖ सिफारिश बम	राजेन्द्र परदेसी	19

काव्य-कोना

❖ दास्ताने किस्मत	अनीस अहमद खान	29
❖ क्यों सूरज डूब जाता है...	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	32
❖ बचपन की यादें	रामप्रीत	38
❖ हँसें ओस की बूँद	डॉ. राजीव गुप्ता	39
❖ हुई प्यार की जीत		
❖ पाठकों की प्रतिक्रिया	–	39

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिन्दी की भूमिका
खंड–खंड इतिहास में अखंड हिन्दी

यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी*

प्रस्तावना :

भारत विमर्शों का देश है। आरण्यक संस्कृति, वैदिक अथवा पौराणिक कालखंड रहा हो, प्रत्येक कालखंड अपने–अपने विमर्श रखते रहे हैं। हमारे ऋषि–मुनि साहित्य के रचयिता रहे हैं। अपने मूल से जो लोग शक, तातारी, हूण, मंगोल आदि थे और आक्रमणकारियों के अस्तित्व में विदेशों से आये थे, अपनी पहचान खो कर, हिन्दुस्तानियों के साथ घुल–मिल जाने के कारण उनका विदेशीपन विलुप्त हो गया और वे विशुद्ध भारतीय समझे जाने लगे। हिंदी साहित्य के इतिहास की परतों को कुरेदें तो भारत के बुनियाद में अतीत इतिहास के संस्कृत के साथ ही जैन, बौद्ध, सिख, मुस्लिम आदि साहित्य मिलेंगे। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देवनागरी आन्दोलन ने जब हिन्दी आंदोलन का नाम ग्रहण कर लिया, देहलवी और उर्दू जैसे शब्दों से बचने के लिये हिन्दी के विद्वानों ने 'खड़ी बोली' का एक नया नाम गढ़ा लिया और उसकी प्राचीनता खोजते हुए उससे वर्तमान हिन्दी का विकास तलाश करने में जुट गये। जबकि तथ्य यह है कि किसी रचनाकार ने अपनी भाषा को 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक, खड़ी बोली में कभी नहीं कहा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस सच्चाई को एक प्रकार से स्वीकार भी किया है। वे 'खड़ी बोली' का अर्थ 'उर्दू' मानते थे। 'अग्रवालों की व्युत्पत्ति' शीर्षक पुस्तक में उन्होंने 1881 ईसवी में लिखा भी था 'इनका, मुख्य देश पश्चिमोत्तर प्रांत है और बोली स्त्री और पुरुष सबकी 'खड़ी बोली' अर्थात 'उर्दू' है।' एक अंतहीन गुलामी से जकड़ चुके हिन्दुस्तान ने अपने मौलिक स्वराज के लिए जूझना आरम्भ किया तो पसर चुके सामाजिक कुरीतियों, धर्मिक–सांस्कृतिक संघर्षों के मध्य राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिए चिंतकों के स्वरूप में साहित्यकारों द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गयी। हिन्दी साहित्य में शोषणवादी व्यवस्था, अंग्रेजी लूट, सामाजिक अंधविश्वासों पर गम्भीरता से लिखा गया। हिन्दुस्तान ने साहित्य के कुछ डग भरे ही थे धर्म की चौहद्दी में एक युगीन और अंतहीन खाई पैदा कर दी गई। धर्म के अनुयाइयों ने समाज के बाशिंदो के साथ–साथ भाषा को भी बाँट दिया। भाषा के इस बँटवारे में एक ओर आम बोलचाल की भाषा 'हिन्दुस्तानी' से 'अरबी'–'फारसी' तर्जुमा की बोलचाल के सहज शब्दों को भी बाहर कर इसकी जगह पर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को प्रमुखता दी गई, तो वहीं दूसरी तरफ 'हिन्दुस्तानी' भाषा में 'अरबी'– 'फारसी' तर्जुमा की बोलचाल के सहज शब्दों को संस्कृत से परहेज कर जारी रखा गया। फलस्वरूप सहस्त्राब्दी के उस छोर के शताब्दी से सदी के इस पड़ाव तक हिन्दी दो भाग में बँटकर पली–बढ़ी और बड़ी हुई। एक 'उर्दूनिष्ठ हिन्दी' और एक 'संस्कृतनिष्ठ हिन्दी'।

ऐतिहासिक उल्लेख :

समाज अलग– अलग भाषा, पृथक–पृथक संस्कृति, विभिन्न संस्कारों के साथ जीवन–यापन करता है।

सातवीं शताब्दी की यह मान्यता भी कि ब्राह्मणेतर सभी चिंतन पद्धतियाँ ब्राह्मण विरोधी हैं, सिद्ध योगियों के वैचारिक सैलाब की लपेट में आ गयी थी। साधना पद्धतियों में वैषम्य के बावजूद सूफियों और सिद्धों के वैचारिक फलक की आधरभूमि, जीव, ब्रह्म और जगत के पारस्परिक रिश्तों से निर्मित थी। यही स्थिति जैन रचनाकारों की भी थी। आठवीं शताब्दी में पालशासक धर्मपाल (770–810 ईसवी) के समकालीन बौद्ध धर्म की वज्रयान और सहजयान शाखा के प्रवर्तक तथा आदि सिद्ध हिन्दी के प्रथम कवि सरह (सरहपा, सिद्ध सरहपा, जिनका मूल नाम 'राहुलभद्र', 'सरोजवज्र', 'शरोरुहवज्र', 'पद्म' तथा 'पद्मवज्र' नाम भी) था। सरहपा के शिष्य शबरपा (जन्म 780 ईसवी सन्) ने ग्रंथ 'चर्यापद' लिखा। शबरपा के शिष्य लुइप, चौरासी सिद्धों में सर्वोच्च, जिनके शिष्य उड़ीसा के तत्कालीन राजा और मंत्रा हो गए थे। विरूपा के दीक्षित शिष्य मगध के डोम्भिया (जन्म 840 ईसवी सन्) ने इक्कीस ग्रंथों की रचना की, जिनमें 'डोम्बि–गीतिका', योगाचार्य और अक्षरद्विकोपदेश प्रमुख हैं। जालंधरपा के दीक्षित शिष्य कर्नाटक के कण्हपा (जन्म 820 ईसवी सन्) और बिहार के सोमपुरी निवासी के लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताए जाते हैं। यह पौराणिक रूढ़ियों और उनमें फैले भ्रमों के विरोधी थे। नवीं शताब्दी का मध्य भाग में गुरु गोरखनाथ (गोरक्षनाथ) जी नाथ सम्प्रदाय के योगी थे। दसवीं शताब्दी में पुष्पदंत ने धर्मिक उद्देश्य से तीन रचनाएँ 'महापुराण', 'णयकुमार चरिउ' तथा 'जसहर चरिउ' की। सन् 933 ईसवी में जैन आचार्य देवसेन ने ग्रंथ 'श्रावकाचार' रचकर 250 दोहों में श्रावक–धर्म का प्रतिपादन किया है। दोहा छन्द में कवि ने गृहस्थ के कर्तव्यों पर भी विस्तार

*साहित्यकार, 3/16, कबीर नगर, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी–221005, उत्तर प्रदेश।

से विचार किया है। हेमचंद्र (1088–1172 ईसवी सन्) गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह (993–1142 ईसवी सन्) और उनके भतीजे कुमारपाल (1142–1173 ईसवी सन्) के यहाँ उनका बड़ा मान था। ये अपने समय के सबसे प्रसिद्ध जैन आचार्य थे। हेमचंद्र ने कई लक्ष श्लोकों के ग्रंथ बनाए जिनमें प्रमुख हैं– 'अभिधन चिंतामणि आदि कई कोश 'काव्यानुशासन', 'छंदोनुशासन', 'देशीनाममाला', 'योगशास्त्रा', 'धतुपारायण', 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' और 'परिशिष्ट पर्च' आदि। अपने व्याकरण के उदाहरणों के लिए हेमचंद्र ने एक 'द्वयाश्रय काव्य' 'कुमारपालचरित' नामक एक प्राकृत काव्य की भी रचना की है। इस काव्य में भी अपभ्रंश के पद्य रखे गए हैं। संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश तीनों का समावेश कर इन्होंने व्याकरण ग्रंथ 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' जो सिद्धराज के समय में बनाया। हेमचंद्र कृत 'हेमचंद्र शब्दानुशासन' से अपभ्रंश के एक बहुचर्चित दोहे का पहला चरण भल्ला हुआ जु मारिया भैंणी म्हारा कन्त।

अब इसे नस्तालीक लिपि में लिख कर इसी लिपि में पढ़ने पर 'भल्ला शब्द भला, जु शब्द जो, भैंणी शब्द बहनी, म्हारा शब्द हमारा पढा जायेगा।' अर्थात इस चरण को इस प्रकार पढेंगे भला हुआ जो मारया बहनी हमारा कन्त।

यह अपभंश की तुलना में एक विकसित भाषा है और हिन्दवी से कहीं अधिक देहलवी/तथाकथित खडी बोली के निकट है। बौद्धों के प्रति ब्राह्मणों का वह घृणा भाव जिसका उल्लेख मृच्छ कटिका के सातवें–आठवें अध्यायों में हुआ है, नवीं–दसवीं शताब्दी तक ठंडा पड़ चुका था। शंकर, कुमारिल और उदयन की बौद्ध धर्म विरोधी भूमिकाएं, भी इस समय तक लगभग अर्थहीन होने लगी थीं। हुजवेरी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'कशपफुलमहजूब' से पता चलता है कि दसवीं शताब्दी में अविभाजित हिन्दुस्तान का लाहौर ब्राह्मणों, बौद्धों, सिद्धयोगियों और अनेक सूफी चिंतकों का केंद्र बन चुका था। मुल्तान की सूफी खानकाहों में सिद्ध योगियों का आना–जाना भी था। पृथक–पृथक धर्मिक आस्थाओं के साथ सूफियों और सिद्धयोगियों के मध्य वैचारिक आदान–प्रदान, जैन और सूफी कवियों के प्रेम में संयोग वियोग के अनेक दोहे कथ्य और शिल्प की दृष्टि से परस्पर मेल खाते हैं। प्रारंभिक सूफी कवियों ने मसनवियाँ (कथा काव्य) नहीं लिखे। सूफियों के मल्फूजात और चिट्ठियों में जो कुछ दोहे उपलब्ध हैं, उनमें से कुछ तेरहवीं शताब्दी से पूर्व के लगते हैं। उनकी हिन्दवी या अपभ्रंश रचनाएँ दोहों की शक्ल में ही उपलब्ध हैं। परन्तु तेरहवीं शताब्दी ईसवी से पूर्व किसी भी मुस्लिम रचनाकार की कोई प्रामाणिक रचना भी उपलब्ध नहीं है। सन् 1184 ईसवी में शालिभद्र सूरि ने 205 छंदों का खण्डकाव्य 'भरतेश्वर–बाहुबली रास' और 'बुद्धरास'। मुनि जिनविजय ने इस ग्रंथ को जैन–साहित्य की रास–परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना है। सन् 1184 ईसवी में जैन पंडित सोमप्रभसूरि ने 'कुमारपालप्रतिबोध' नामक एक गद्य–पद्यमय संस्कृत–प्राकृत काव्य लिखा, जिसमें समय–समय पर हेमचंद्र द्व ारा कुमारपाल को अनेक प्रकार के उपदेश दिए जाने की कथाएँ लिखी हैं। यह ग्रंथ अधिकांश प्राकृत में ही है– बीच–बीच में संस्कृत श्लोक और अपभ्रंश के दोहे आए हैं। सन् 1200 ईसवी में आसगुकवि ने पैंतीस छंदों का एक लघु खण्ड काव्य 'चन्दनबाला रास' जालौर में रचा। सन् 1209 ईसवी में जिन धर्मसूरि ने 'स्थूलिभद्र रास' काव्य की रचना की। काव्य की भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव अधिक है, फिर भी इसकी भाषा का मूल रूप हिन्दी है। धर्मिक दृष्टि से प्रेरित होने पर इसकी भावभूमि और अभिव्यंजना काव्यानुकूल है। सन् 1213 ईसवी में सुमतिगणि ने 'नेमिनाथ रास' की अठावन छंदों में रचना की। रचना की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानी हिन्दी है। सन् 1231 ईसवी में विजयसेन सूरि की रचित काव्यकृति 'रेवंतगिरी रास' है। यात्रा तथा मूर्तिस्थापना की घटनाओं पर आधरित यह रास वास्तुकलात्मक सौंदर्य का भी आकर्षण प्रस्तुत करता है। प्रकृति के रमणीक चित्र इस काव्य तथा कलापक्षों का श्रृंगार करते हैं। 'आराधना' (1273 ईसवी सन् के लगभग) दो पृष्ठों में जैन–आराधना प्रक्रिया का प्रतिपादन है। 'अतिचार' (1283 ईसवी सन्), 'नवाकार व्याख्यान टीका' (1301 ईसवी सन्),'सर्वतीर्थ नमस्कार स्तवन' (1302 ईसवी सन्) और 'अतिचार' (1312 ईसवी सन्) इन सभी पर अपभ्रंश का प्रभाव है। इनमें संस्कृत के तत्सम तथा समस्त शब्द भी प्रयुक्त हैं। सन् 1304 ईसवी में जैनाचार्य मेरुतुंग ने 'प्रबंध चिंतामणि' नामक एक संस्कृत ग्रंथ 'भोजप्रबंध' के ढंग का लिखा, जिसमें बहुत–से पुराने राजाओं के आख्यान संग्रहित किए। तरुणप्रभ सूरि कृत अनूदित व्याख्यात्मक ग्रंथ 'तत्त्वविचार प्रकरण' (चौदहवीं सदी), 'षडावश्यक बालावबोध' (1354 ईसवी सन्) है, जिसमें जैन धर्म संबंधी शिक्षात्मक कथाएं हैं। सधरु अग्रवाल का 'प्रद्युम्नचरित्रा' (1354 ईसवी सन्) ब्रजभाषा के आद्यवधि प्राप्त ग्रंथों में सबसे प्राचीन माना गया है। इसमें चौबीस तीर्थकरों की वन्दना के पश्चात् प्रद्युम्न की कथा का वर्णन किया गया है। शालिभद्रसूरि कृत 'पंचपाण्डवचरितरास' पौराणिक कथा पर आधरित जैन काव्य में पाण्डवों की कथा को अहिंसा पर आधरित रखा गया है। इसका प्रणयन ईसा की चौदहवीं शताब्दी के अंत में किया गया है। पन्द्रह सर्गों में विभाजित इस काव्य में युद्ध और अहिंसा में से अहिंसा का चयन ही कथा का मुख्य लक्ष्य है। इस काव्य की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानी हिन्दी है। उदयवन्त (विजयभद्र) कृत 'गौतमरास', घटना और भाव समन्वय से युक्त एक सरस खण्डकाव्य है। जैन तीर्थंकर महावीर के प्रथम गणध्र गौतम इस काव्य के चरितनायक हैं। जिसकी भाषा अपभ्रंश–प्रभावित राजस्थानी हिन्दी है। जाखू मणियार कृत 'हरिचंदपुराण' (1396

ईसवी सन्) कथ्य, अभिव्यंजना तथा भाव–गाम्भीर्य की दृष्टि से यह काव्य भक्तिकाल में रचित ब्रजभाषा– काव्य का आरंभिक निदर्शन है। देवप्रभ द्वारा चौदहवीं शताब्दी के अंत में रचित 'कुमारपालरासो' जैन रास–काव्यों तथा वीर–प्रशस्तिपरक रासो काव्यों की प्रवृत्तियों का समन्वय करती है।

जैन कवि पदमनाथ कृत 'कान्हड़ दे प्रबंध' ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी के आरंभ में रचित काव्यकला के पूर्ण विकास एवं पद्य के साथ गद्य के प्रयोग से युक्त रचना है। इसकी रचना–पद्ध ति रासो–काव्यों की शैली से भिन्न है। इसमें महाराजा कान्हड़ देव का चरित वर्णित है। 'तपोगुच्छ गुर्वावली' (1425 ईसवी सन्) में तपोगच्छीय जैन आचार्यों की नामावली और उनका वर्णन है। इसका गद्य यत्रा–तत्रा अलंकृत और सानुप्रास है। जैन कवि पदमनाथ की 'डूंगर बावनी' (1486 ईसवी सन) जिसका नामकरण कवि ने अपने आश्रयदाता डूंगर सेठ के नाम पर किया है। इसमें 53 छप्पय हैं जिनमें दया, दान, कर्म–पफल, नम्रता आदि में ही जीवन– साफल्य माना गया है एवं सप्त व्यसन (जुआ, मांस–भक्षण, सुरापान, वेश्यागमन, आखेट, चोरी, परनारी–रमण) से बचने का परामर्श दिया गया है। जैन कवि ठाकुरसी की रचनाएँ 'कृपणचरित्र' और 'पंचेन्द्रीवेलि' हैं, जिनका रचनाकाल (1523–1526 ईसवी सन्) है। इनकी हस्तलिखित प्रतियाँ मुम्बई के दिगम्बर मन्दिर और जयपुर के वधीचन्द मन्दिर में सुरक्षित है। जैन श्रावक जटमल ने प्रेमविलास प्रेमलता की कथा (1556 ईसवी सन्) की रचना लाहौर में की थी। कवि ने इसका आरम्भ जैनाय नमः से करते हुए अपना परिचय एवं तत्कालीन शासक का नाम भी दिया है। इसकी कथावस्तु मौलिक है, जिसमें लोकोत्तर घटनाओं की प्रधानता है। बनारसी दास जैन का भक्तिकालीन नीति कवियों में मुख्य स्थान है। ये जौनपुर के रहने वाले एक जैन जौहरी थे, जो आमेर में भी रहते थे। इनके पिता का नाम खड़गसेन था। ये 1586 ईसवी सन् में उत्पन्न हुए थे। सम्राट अकबर के प्रशंसक थे। जहांगीर के दरबार में भी गए थे। शाहजहाँ के दरबार में तो इन्हें विशेष मान प्राप्त था। 'नवरस पद्मावलि', 'नाटक समयसार' (कुंदकुंदाचार्य कृत ग्रंथ का सारद), 'बनारसी विलास' (फुटकल कवित्तों का संग्रह), 'अर्द्ध कथानक', 'नाममाला' यकोशद्ध, 'बनारसी पद्धति मोक्षपदी', 'ध्रुववंदना', 'कल्याण मंदिर भाषा', 'वेदनिर्णय पंचाशिका', 'मारगन विद्या' और 'भाषा सूक्तिमुक्तावली' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। राजसमुद्र का जन्म 1590 ईसवी सन् में बीकानेर में हुआ था। इनका बचपन का नाम खेतसी था। 1599 ईसवी सन् में जिनसिंह सूरि से दीक्षा लेने पर इनका नाम राजसमुद्र हो गया। इनकी 'शालिभद्र चौपाई', 'गजसुकमाल चौपाई', 'प्रश्नोत्तर रत्नमाला', 'कर्मबत्तीसी', 'शीलबत्तीसी' और 'बालावबोध' प्रमुख रचनाएँ हैं। इनका मुख्य विषय नीति है। इनकी भाषा राजस्थानी है। कुशलबीर के नीति ग्रंथ–'भोज चौपाई', 'सीलवती रास', 'कर्म चौपाई', 'वर्णन संपुट' तथा 'उद्दिम–कर्म–संवाद' हैं। सोजत नगर के निवासी थे। ये कल्याणलाभ के शिष्य थे और इनका रचना–काल (1637 से 1672 ईसवी सन्) है। इनकी भाषा राजस्थानी है और शैली उपदेशात्मक है। आनन्दध्न की निर्गुण भक्ति के भजनों की रचनाएँ मिलती हैं। इनकी 'आनन्दध्न चौबीसी' और 'आनन्दध्न बहोत्तरी' नामक कृतियाँ प्रसिद्ध हैं। जिनदत्तसूरि की 'उपदेश रसायन रास', प्रज्ञा तिलक की 'कच्छुलि रास', सार मूर्ति की 'जिन पद्म सूरि रास', कनकामर मुनि की 'करकंड चरित रास', पल्हण की 'आबूरास', देवेन्द्र सूरि की 'गय सुकमाल रास', अम्बदेव सूरि की 'समरा रास', अभय तिलकमणि की 'अमरा रास' हरिभद्रसूरि की 'नेमिनाथ चरिउ', राजशेखर सूरि की 'नेमिनाथ पफागु', नयनंदी की 'सुंदसण चरिउ' और पदम कीर्ति की 'पास चरिउ' आदि भी उल्लेखनीय हैं। रमल जैन कृत 'मोक्षमार्गप्रकाश' एवं द्वीपचन्द्र जैन कृत 'चिद्विलास' जैन धर्म की दार्शनिक रचनाएं हैं। दोनों खड़ीबोली के विशिष्ट गद्यकार हैं। दौलतराम जैन बसवा निवासी कृत 'भाषा–पद्मपुराण' अथवा 'पद्मपुराण वचनिका' राजस्थानी–ब्रजभाषा प्रभावित खड़ीबोली में प्राकृत की जैन राम–कथा का व्याख्यामय अनुवाद है। इनकी दूसरी प्रख्यात वचनिका 'आदि पुराण वचनिका' है जो भगवान ऋषभदेव तथा राजा श्रेयांस के जन्मों की कथा से सम्बद्ध जैन प्राकृत–ग्रंथ 'आदिपुराण' का व्याख्यामय अनुवाद है। इनकी अन्य गद्य रचनाएं हैं–'पुण्याश्रव कथा कोश वचनिका', 'वसुनन्दिश्रावकाचार वचनिका', 'परमात्म प्रकाश वचनिका', 'श्रीपाल चरित्र वचनिका' तथा 'हरिवंश पुराण वचनिका'। दौलतराम जैन इंदौर निवासी कृत 'मल्लिनाथ चरित्र वचनिका', टेकचंद जैन कृत 'सुदृष्टि–तरंगिणी वचनिका' और अभयचंद कृत 'हितोपदेश वचनिका' गद्य की विशेष उल्लेखनीय रचनाएं हैं। ये खड़ीबोली के विशिष्ट गद्यकार हैं। जिनसमुद्र सूरि रचित 'भर्तृहरि वैराग्य–शतक टीका' ब्रजभाषा–मिश्रित खड़ीबोली में उल्लेखनीय टिप्पण–टीका है।

मलिक मुहम्मद जायसी (1477–1542 ईसवी सन्) हिन्दवी (हिन्दवी में ब्रज या अवधी जैसी कोई विभाजक रेखा नहीं थी) के कवि, हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के सरल और उदार सूफी महात्मा कवि थे। शेख बुरहान और सैयद अशरपफ के शिष्य जायसी मिस्र में प्रधानमंत्री मलिक वंश के थे। मलिक मोहम्मद जायसी (1467–1542 ईसवी सन्) उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के जायस के रहने वाले थे। हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्री धारा के कवि थे। 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'इतरावत', 'कहारनामा', 'चंपावत', 'चित्रावत', 'जपजी', 'धनावत', 'पद्मावत', 'पोस्तीनामा', 'मटकावत', 'मसला या मसलानामा', 'मुकहरानामा', 'मुखरानामा', 'मेखरावटनामा', 'मैनावत', 'मोराईनामा', 'लहतावत', 'सकरानामा', 'सखरावत',

'सुर्वानामा', 'सोरठ', 'स्फुट कवितायें', 'होलीनामा' समेत 21 प्रमुख रचनाएं हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मध्यकालीन कवियों की गिनती में जायसी को प्रमुख कवि का स्थान दिया गया है। पद्मावत दोहा और चौपाई, छंद में लिखा गया महाकाव्य है। मलिक मुहम्मद जायसी ने

अरबी तुर्की हिन्दवी, भाषा जेती आहि।
जामें मारग प्रेम का, सभै सराहैं ताहि।

लिखकर हिन्दवी में व्याप्त प्रेम तत्त्व का संकेत किया।

सैयद इब्राहीम 'रसखान' (1548 –1628 ईसवी सन्) हिन्दी के कृष्ण भक्त, विठ्ठलनाथ के शिष्य एवं वल्लभ संप्रदाय के सदस्य तथा रीतिकालीन रीतिमुक्त अकबर के समकालीन मुस्लिम कवि थे। रसखान ने भागवत का अनुवाद फारसी और हिंदी में किया है। रसखान के सगुण कृष्ण की सारी लीलाएं बाललीला, रासलीला, फागलीला, कुंजलीला, प्रेम वाटिका, सुजान प्रासंगिक है। रसखान ने नबीश्री हजरत मुहम्मद तथा हजरत अली की प्रशंसा में भी पद लिखा है। अबुल फैज फैजी (जन्म 1574 ईसवी सन्) की हिन्दी रचनाएं इसका ज्वलंत प्रमाण हैं। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने 'चन्दायन' की भाषा को हिन्दवी कहा। सैयद निजामुद्दीन मधनायक (जन्म 1591 ईसवी) कृत मधनायक श्रृंगार', मीर अब्दुलवाहिद (मृत्यु 1608 ईसवी) कृत 'हकाइके–हिन्दी', आदि महत्वपूर्ण विमर्श है। मीर अब्दुल जलील (1662–1726 ईसवी सन्) ने ऐसी चतुष्पदियां लिखकर जिनमें एक चरण अरबी का, एक फारसी का, एक हिन्दवी का और एक तुर्की का होता था, हिन्दवी के सार्वभौमिक महत्त्व को दर्शाया था। निजामुल्मुल्क आसफ जाह वजीर फर्रुखसियर बादशाह की प्रशंसा में मीर जलील ने लिखा था

'असीस दे के कही हिन्दवी मों यों संबत।
रहे जगत में अचल बास ये वजीर सदा ।'

हिन्दवी नस्तालीक लिपि में लिखी जाने वाली भारतीय भाषा, को हिन्दी कहने का भी प्रचलन था जो आगे चलकर देहलवी/उर्दू के लिए भी जारी रहा। शेख अब्दुल्लाह अंसारी (रचनकाल 1663 ईसवी सन्) ने इस्लामी शरीअत पर 'फिकए–हिन्दी' शीर्षक पुस्तक लिखी जिसकी भाषा को हिन्दी बताया–

केते मसले दीन के, अबदी कहैं अमीन।
फिका हिन्दी जबान पर, बूझो करो यकीन।

मुल्ला मसीह ने जहांगीर के समय में पांच हजार छंदों में मसीही रामायन नामक एक मौलिक रामायण की रचना की। इस रामायण को सन् 1888 ईसवी में लखनऊ के मुंशी नवल किशोर प्रेस से प्रकाशित किया गया। बुल्बुल बीजापुर के कवि ने

हरीरे–हिन्दवी पर कर तूं तस्वीर।
लिबासे–पारसी है पाये–जंजीर।

लिखकर फारसी की तुलना में हिन्दवी का वर्चस्व घोषित किया। जिन रचनाकारों पर संस्कृत के संस्कारों का प्रभाव था और जो अपनी रचनाएं नागरी या कैथी लिपि में लिखने के अभ्यस्त थे, वे अपनी भाषा को 'भाखा' कहते थे। अब्दुल गनी महाराष्ट्र के कवि ने इब्राहीम आदिलशाह की प्रशंसा में 'इब्राहीमनामा' लिखा, जिसमें इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख किया कि मैं अरब और अजम ईरान की कृत्रिम भाषाएं नहीं जानता। मैं केवल हिन्दवी और देहलवी जानता हूं–

'जबां हिन्दवी मुझसों हौर देहलवी।
न जानूं अरब हौर अजम मसनवी।'

स्पष्ट है कि हिन्दवी के साथ 'और देहलवी' लिखना इस तथ्य को स्पष्ट संकेतित करता है कि देहलवी एक स्वतंत्रा भाषा थी। यही भाषा, हिन्दवी/हिन्दी, जो नस्तालीक लिपि में लिखी जाती थी, के सहयोग से आगे चलकर उर्दू कहलायी।

झज्झर निवासी शेख महबूब आलम (17वीं शतब्दी) ने 'मसाइले–हिन्दी' में लिखा–

कयामत के अहवाल में हिन्दी कही किताब।

अथवा

तलब बहुत उस यार की देखी साँची सूझ।
लिखी किताब इस वास्ते हिन्दी बोली बूझ।

मीरजा गालिब अपनी उर्दू गजलों के लिए भी हिन्दी शब्द का प्रयोग करते थे । 30 जनवरी 1855 ईसवी सन् को सैयद बदरुद्दीन के नाम अपनी चिटठी में लिखते हैं –'आप हिन्दी और फारसी की गजलें मांगते हैं, फारसी गजल तो शायद एक भी नहीं कही। हां हिन्दी गजलें किले के मुशायरों में दो–चार कही थीं। स्पष्ट है कि गालिब के समय तक आते–आते हिन्दी, हिन्दवी, देहलवी और उर्दू एक दूसरे के पर्याय बन चुके थे। हिन्दवी, हिन्दी अथवा देहलवी कही जाने वाली भाषा का जो नस्तालीक लिपि में लिखी जाती थी, उसका पालन–पोषण मुस्लिम साहित्यकारों ने ही किया। हिन्दवी को 'भाखा' कहने और इसे देवनागरी में लिखने वाले लेखकों की स्थिति कुछ भिन्न नहीं थी। यहां एक बात और भी स्पष्ट होती है कि प्रारंभ से उत्तर मध्यकाल तक हिन्दवी, हिन्दी या देहलवी के मुस्लिम साहित्यकारों ने अपनी रचनाएं नस्तालीक लिपि में ही लिखीं। इस लिपि में एराब, स्वर–चिह्न, नहीं लगाये जाते। फलस्वरूप अध्ययन की जिज्ञासा से जब इन साहित्यकारों ने प्राचीन अपभ्रंश को नस्तालीक में लिप्यान्तरित किया तो तशदीद द्वित्त्व–चिह्न और एराब न होने के कारण अनेक शब्दों के रूप परिवर्तित हो गये और ध्वनियां भी अपेक्षाकृत कोमल हो गयीं। उदाहरण स्वरूप कुतुबन कृत 'मृगावती' (1503 ईसवी)। गुरु गोविन्द सिंह (22 दिसम्बर 1666–7 अक्टूबर 1708 ईसवी सन्) ने कृष्णावतार की रचना के लिए भाखा को अभिव्यक्ति का जरिया बनाया

'दसम कथा भागवत की, भाखा करी बनाय'।

किन्तु न तो हिन्दवी के पक्षधरों ने और न ही भाखा प्रेमियों ने अपनी भाषा को किसी क्षेत्र–विशेष से जोड़ा, न ही उसमें धर्म–विशेष की गंध देखने का प्रयास किया। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक इलाकाई बोलियों से इतर भारत में संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दवी, हिन्दी, देहलवी, भाखा, रेख्ता, उर्दू आदि ऐसी ही भाषाएं थी। आज जिन भाषाओं को हम ब्रज या अवधी के नामों से जानते हैं, उनके रचनाकारों ने 18वीं शती के लगभग अन्त तक उनका ब्रज या अवधी होना कभी स्वीकार नहीं किया। दकनी पहली भाषा कही जा सकती है जिसने अपनी पहचान इलाके के आधर पर बनाने का प्रयास किया। संभवतः इसीलिए उसका साहित्य दक्षिण की चौहद्दियां नहीं लांघ पाया। जो रचनाकार फारसी साहित्य और भाषा के संस्कारों से जुडे थे और अपनी रचनाएं नस्तालीक यवर्तमान उर्दू लिपिद्ध में लिखते थे, वे अपनी भाषा को हिन्दवी/हिंदी, और देहलवी कहते थे। अवध की गंगा–जमुनी सभ्यता का प्रभाव हिंदी और इससे जुड़ी क्षेत्राय भाषाओं अवधी, ब्रज और भोजपुरी पर भी पड़ा। मुगलकाल से लेकर अंग्रेजी शासन और पिफर आजाद भारत में अब तक गैर मुस्लिम और मुस्लिम लेखकों और कवियों ने हिंदी में भी अपना उत्कृष्ट योगदान दिया। मुगल काल में हिन्दवी के प्रति सम्राटों का विशेष लगाव होने के कारण फारसी के अनेक प्रतिष्ठित कवियों ने भी हिन्दवी, हिन्दी को समृद्ध करने का प्रयास किया। मुहम्मद आरिफ जान (1710–1773 ईसवी सन्) कृत 'रसमूरत', 'अंग शोभा', 'मदन मूरत' और 'मंगल चरन' ग्रंथ हैं। कासिमशाह (1736 ईसवी सन्) कृत 'हंसजवाहर', नूर मुहम्मद (1764 ईसवी) कृत 'अनुराग बाँसुरी' तथा 'इन्द्रावती' आदि उल्लेखनीय है। इंशा अल्ला खां 'इंशा' (1756–1817 ईसवी सन्) का जन्म तो पं. बंगाल की मुर्शिदाबाद में हुआ था लेकिन उनके पूर्वज दिल्ली आकर बस गए और फिर इंशा अल्ला लखनऊ आ गए। इंशा अल्ला खां 'इंशा' की लिखी 'रानी केतकी की कहानी' (उदयभान चरित) को हिंदी की पहली गद्य रचना माना जाता है। इसकी रचना 1803 ईसवी सन् में की गई जबकि 1841 ईसवी सन् में यह मुद्रित हुई। शाह नजफ अली (1809–1845 ईसवी सन्) कृत 'चिंगारी', अवध के बादशाह वाजिद अली शाह (जन्म 30 जुलाई 1822– निधन 1 सितंबर 1887 ईसवी सन्) के समय में हिन्दी–अवधी–ब्रज में अनेकों ठुमरियां, ख्याल, टप्पे और दादरे लिखे गए। वाजिद अली शाह खुद भी संगीत और साहित्य के प्रेमी थे, इसलिए उनके दरबार में हिन्दी–अवधी–ब्रज भाषा के रचनाकारों को बहुत अहमियत दी जाती थी। खुद वाजिद अली शाह की प्रसिद्ध 'ठुमरी बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए', आज भी बेहद लोकप्रिय है। अवध में वाजिद अली शाह के शासनकाल में भी हिंदी, अवधी और ब्रज भाषाओं का खूब विकास हुआ। सैयद अहमद देहलवी कृत फरहंगे–आसफिया के प्रथम खंड से इसी युग के एक मुस्लिम रचनाकार का लगभग इसी आशय का एक दोहा है–

बाँह छुडाए जात है, निबल जानि के मोहि।
हिर्दय में से जाय तो, मरद बदूंगी तोहि।

सन् 1857 ईसवी सन् भारतीय समाज जिस त्रासदी से जूझ रहा था उसका चित्रण उस काल के कवियों और लेखकों की कृतियों में देखने को मिलता है। उस समय एक अंतहीन गुलामी से उपजी समस्याओं अस्मिता का प्रश्न, गुलामी का दर्द, गरीबी और भूख की चुभन, स्त्रियों एवं पिछड़े वर्ग की दयनीय स्थिति आदि हमारे साहित्य के मूल विमर्श रहे। तब के साहित्य में सांप्रदायिकता एवं आतंकवाद के विमर्श नहीं थे जो बीसवीं शताब्दी के अंत और इक्कीसवीं शताब्दी का सबसे महत्वपूर्ण विषय बन कर सामने आए हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में हिंदी हिन्दुओं की भाषा और उर्दू मुसलामानों की भाषा के रूप में स्वीकार की जाने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में पंडित प्रताप नारयण मिश्र के

जपौ निरंतर एक जबान।
हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।।

जैसे महामंत्र ने विद्वानों की सोच का धरातल ही बदल दिया।

सन 1947 ईसवी सन् के भारत विभाजन के बाद की रचनाओं में सांप्रदायिकता एवं दहशत के विमर्श केंद्र में आ गए। अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक सभी इसी धूल–माटी की पैदाइश हैं। सभी के पूर्वज यहीं जन्में और यहीं जीवन पूर्ण किए। सभी की भाषा, संस्कृति संवेदनाएं, समस्याएं, गरीबी और बेरोजगारी भी एक जैसी ही है। अलग–अलग पंथ पृथक–पृथक रास्तों से उसी एक ईश्वर तक ले जाते हैं। बीसवीं सदी में हिन्दी के ईसाई धर्मावलम्बी विद्वान बेल्जियम से भारत आये एक मिशनरी फादर कामिल बुल्के (1 सितंबर 1909–17 अगस्त 1982 ईसवी सन्) थे। भारत आकर जीवनपर्यंत हिन्दी, तुलसी और वाल्मीकि के अनुयायी रहे। सन् 1972 से 1977 ईसवी सन् तक भारत सरकार की केंद्रीय हिन्दी समिति के सदस्य बने रहे। इन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1974 ईसवी सन् में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। रामकथा : उत्पत्ति और विकास, 1949 ईसवी सन्, हिन्दी–अंग्रेजी लघुकोश, 1955 ईसवी सन्, अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश, 1968 ईसवी सन्, मुक्तिदाता, 1972 ईसवी सन्, नया विधान, 1977 ईसवी सन्, नीलपक्षी, 1978 ईसवी सन् उनकी महत्वपूर्ण कृति है। अगस्ट सरडेल, अलेक्जेंडर फॉकनर, ई एच पॉमर, ई बी ईस्टवीक, ए एच हार्ली, ए एफ रुडोल्पफ हार्नलि, एच एच विल्सन, एच एस केलॉग, एच सी

शेष पृष्ठ 20 पर...

भाषा का भाव और संस्कार समझना भी आसान नहीं है

ओम प्रकाश मंजुल*

भाषा और साहित्य

अकसर भाषा और साहित्य की चर्चा साथ–साथ की जाती है। एकाग्रचित्त होकर साहित्य का अनुशीलन करने पर भी जैसे साहित्य को समझना सरल नहीं होता, उसी प्रकार भाषा के भावों एवं संस्कारों को समझ पाना भी सरल कार्य नहीं होता है। साहित्य का सृजन–लेखन मात्र मानव करता है, जबकि भाषा–बोली के सृजन–संवाद में पशु–पक्षी, यहाँ तक कि जड़ पदार्थों की भी प्रत्यक्ष भूमिका होती है। शायद यही कारण है कि किसी साहित्यिक संग्रह या फिल्म को 'गीत गाया पत्थरों ने' नाम दिया गया है। एक गधे का आलाप सुनकर समूह के सारे गर्दभ 'ढेंचू' –'ढेंचू' के स्वर में संवाद करने लगते हैं। कुत्तों, बंदरों, कौओं और मेढकों जैसे प्राणियों में भी बोलीगत यही स्वभाव व संस्कार पाया जाता है। इस संदर्भ में हमेशा से नायक–नायिका की भूमिका का निर्वाह करते आ रहे तोता–मैना की कहानी कभी पुरानी नहीं पड़ सकती। परीक्षा हॉल में पिछली सीट पर बैठा एक परीक्षार्थी जब पेन से अपनी मेज खटखटाता है, तब इस खटखटाहट में भी शब्द रूपायत हो जाते हैं। यह खटखट आगे बैठे परीक्षार्थी से कहती है, 'ए–ए ,पीछे देखो। मेरी बात सुनो।' भाषा का तत्वदर्शन अति सूक्ष्म मीमांसा की अपेक्षा करता है, क्योंकि भाषा का क्षेत्र क्षितिजीय (ीवतप्रवदजंस) भी है और लंबीय (अमतजपबंस) भी। अति व्यापक भी है और अति सूक्ष्म भी। 'कोस– कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी' से भी समझा जा सकता है कि साहित्य के सापेक्ष भाषा का उच्छाल तरंगों वाला महासागर कहीं अधिक विस्तृत एवं गहरा है। भाषा ऐसा महोदधि है, जिसमें जितनी बार और जितनी गहरी डुबकी लगाएँगे, उतने ही अधिक और मूल्यवान रत्न हम करतलगत कर सकेंगे।

अब मैं आपको भाषा का खेल साझा करने के लिए लिये चल रहा हूँ। हालाँकि यह महज खेल (चवतज) ही नहीं है। यह शब्दों का जादू भी है और चक्रव्यूह तथा भूल–भुलैया जैसा शब्दों का जटिल जाल भी, जिसमें मुझ जैसे अज्ञ–अल्पज्ञ की बिसात ही क्या, बड़े–बड़े विद्वान और भाषा वैज्ञानिक भी फँसकर रह जाते हैं। भाषा की उत्पत्ति एवं विकास के सम्बन्ध में भाषात्मक अनुसंधान एवं शोध के अगणित प्रयासों के बावजूद आज तक कोई सर्वमान्य निष्कर्ष नहीं निकल सका है। आज भी हम सर्वसम्मति से प्रामाणिकता के साथ यह नहीं कह सकते कि बाइबिल के 'पहले दिन आया या सूर्य' की तरह पहले शब्द आया या शख्स। हिंदी को 'देवनागरी' यानि 'देवों की भाषा' और इंग्लिश को 'एंजिल्स' लैंग्वेज', यानि 'देवदूतों की भाषा' कहा जाता है। हिंदी और इंग्लिश में ऐसे सैकड़ों शब्द हैं, जो उच्चारण और अर्थ में समान हैं। अकिंचन इस सम्बन्ध में इसी पत्रिका के पूर्व अंक में प्रकाशित अपने लेख में बहुत लिख चुका है। अस्तु,

यहाँ उसकी पुनरावृत्ति नहीं करना चाहता। कृपया भाषा वैज्ञानिक बताएँ – यह हिंदी का इंग्लिश पर प्रभाव है या इंग्लिश का हिंदी पर ? भाषा व बोली का प्रभाव सम्पर्क एवं संसर्ग दोनों रोगों की तरह फैलता है। भाषा–बोली से सम्बन्धित कोई गलती हो जाए, तो कालांतर में वह पूरे विश्व में फैल जाती है और सबसे पहली गलती तो हम 'गलती' को 'गल्ती' बोल कर ही करते हैं। अन्य शब्दों की शुद्धता के बारे में क्या कहा जाए ? जैसा पूर्व निवेदन किया जा चुका है, इस सम्बन्ध में अकिंचन पूर्व लेख में काफी लिख चुका है। तथापि कुछ रोचक व जिज्ञासापूर्ण तथ्य, जिनका वर्णन पूर्व अंक के लेख में नहीं किया जा सका, यहाँ प्रस्तुत हैं।

उच्चारण व लेखन सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ इसलिए हो रही हैं कि वाचक या लेखक स्वयं शब्दों का शुद्ध उच्चारण या उल्लेख नहीं जानते। हमारे कई मित्र बीसियों बरस से 'देवनागरी' तथा 'हिंदी' को केंद्र बनाकर अनेक सभाएँ–परिषदें बनाए आ रहे हैं, जबकि देवनागरी में उस समय तक कितने संशोधन– परिवर्तन हो चुके थे, का ही उन्हें ज्ञान नहीं था, अब तो 20 वर्ष और अधिक हो गये हैं। अधिक क्या, 'हिन्दी' का ही 'हिंदी' मानकीकृत हुए कई वर्ष हो चुके हैं। (हालाँकि इससे उनकी विद्वता में कोई कमी नहीं आती, जानकारी में कमी अवश्य आती है।) अलबत्ता इन मामलों में तब वास्तव में अफसोस होता है, जब कोई जिम्मेदार और समझदार व्यक्ति घोर अवहेलना करता है। यहाँ मैं उत्तर प्रदेश से प्रकाशित 'साहित्य भारती' की सम्पादक, डॉ. अमिता दुबे की हिंदी की घोर उपेक्षा के वर्णन का मोह वरण नहीं कर सकता। प्रसंगवश 26/8/2020 को उनका अकिंचन को एक लिफाफा मिला था। इस पर छपा था–'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास हिन्दी भवन, दूरभाष–––'। कुछ त्रुटियाँ इसलिए हो जाती हैं कि विद्वान लेखकों के द्वारा व्यवहृत अशुद्ध शब्दों को भी पाठक अपनी अज्ञानतावश शुद्ध समझता है एवं अशुद्ध शब्दों को पढ़ते आने की आदतवश अशुद्ध शब्द को ही शुद्ध शब्द समझता रहता है। यहाँ मैं अपना ही व्यक्तिगत उदाहरण देना चाहूँगा। मैंने 2 वर्ष पूर्व राष्ट्रीय पुस्तक न्यास,

*प्रधानाचार्य, कामायनी काय स्थान, पूरनपुर–262122, जिला–पीलीभीत (उत्तर प्रदेश)

भारत की पत्रिका में छपने के लिए हिंदी पर एक लेख भेजा था। डेढ़ साल बाद उनका फोन आया, 'मंजुल जी ! हमने आपका लेख टाइप करा लिया है। उसे पत्रिका में दे रहे हैं। आपके पास टाइप भेज रहे हैं। देख लीजिए, अभी कुछ संशोधन या सुधार की आवश्यकता हो तो कर लीजिएगा।' जब मैंने उनका टाइप पढ़ा, तो मैंने देखा कि इस लेख की तरह ही उस लेख में भी मेरे द्वारा लिखित, सर्वप्रथम शब्द 'अक्सर' को उन्होंने 'अकसर' टाइप किया था। मैंने कहा, 'आपने तो खुद पहला ही शब्द गलत लिखा है। 'अक्सर' को 'अकसर' कर दिया। 'उन्होंने ने उत्तर दिया,' मंजुल जी ! अब मानकीकरण संस्थान, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा 'अक्सर' को 'अकसर' में मानकीकृत कर दिया गया है। (मुझे लगा वे फोन पर मेरी अज्ञानता के लिए हल्के से हँस भी रहे थे)। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि एक ही चीज के लिए प्रयुक्त दो भिन्न शब्द होते हुए भी दोनों सिद्ध व शुद्ध शब्द होते हैं। उदाहरणार्थ गुरु–महिमा से संदर्भित प्रसिद्ध श्लोक को ही लें। जगद्गुरु शंकराचार्य, श्रद्धेय कृपालु जी महाराज एवं बृज के परम भक्त व विद्वान संत, पूज्य रमेश बाबा जी महाराज जैसे महापुरुष इसे इस प्रकार बोलते–लिखते हैं, 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः।।'

जबकि परम तपस्वी विद्वान, पूज्य श्रीराम शर्मा आचार्य जैसे गुरुजनों के द्वारा इसे, 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुरेव महेश्वरः 'वाले रूप में कहा– लिखा गया है। यहाँ पर श्गुरुर्देवो' और 'गुरुरेवो' दोनों ही शब्द सही हैं। विद्या विवाद के लिए नहीं, ज्ञान के प्रचार के लिए होनी चाहिए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से शिक्षित दो विद्वान संस्कृत में लिखे ,'घी कटोरी में है' और 'कटोरी में घी है' की शुद्धता को लेकर ही 6 महीने तक विवाद करते रहे जबकि दोनों ही वाक्य सही व शुद्ध हैं। एक विद्वान लेखक ने अपनी पुस्तक में 'आर्द्र' को गलत ठहरा कर उसकी जगह 'आद्र' व 'आर्द' दोनों को सही ठहराया है, जबकि 'देवी पुराण' सहित अनेक पुराणों में माँ भगवती को 'आर्द्रचित्ता' कहा गया है। 'आद्र' में 'द' के बाद और आर्द' में 'द' से पूर्व रेफ बोला जाता है, फिर बताइए दोनों ही शब्द सही कैसे हो सकते हैं ? टंकण–मुद्रण में चंद्रबिंदु और अनुस्वार का अंतर अब लगभग खत्म हो चुका है। आज का पाठक यह मानकर पढ़ने लगा है कि चंद्रबिंदु के लिए ही अनुस्वार का प्रयोग किया गया है। 'हँसना स्वास्थ्य के लिए जरूरी है' वाक्य को पढ़कर पाठक वेसाख्ता हँसने को laughter ही समझेगा swan नहीं। आजकल कुछ स्वयंभू एजेंसियाँ निघंटु और वेद भी रचने लगी हैं। इनमें सबसे आगे हिंदी की प्रिंट मीडिया है। यह अपने लवेद (आधुनिक वेद) के द्वारा शब्द का शुद्ध रूप विकृत कर उसे ऐसे परोसती है, जैसे उसे मानकीकृत कर दिया गया है।

कुछ वर्ष पूर्व विश्व के एक नंबर वन (नंबर वन होता ही एक है) दैनिक ने 'कैरियर' शब्द को 'करियर' कहना शुरू कर के कैरियर का कैरियर ही चौपट कर दिया और शेष श्रेष्ठ अखबारों ने अक्ल का उपयोग किए बिना उसकी नकल कर डाली। इसी प्रिंट मीडिया ने 'काश्मीर', 'आसाम', 'आधीन' इत्यादि को 'कश्मीर', 'असम', 'अधीन, में सीमित कर दिया। टंकण–मुद्रण में कभी–कभी राई भर लापरवाही लेखक के लिए पहाड़ जैसी भारी पड़ जाती है। एक प्रसिद्ध पत्रिका के एक लेख में एक विद्वान लेखक के द्वारा लिखे गए '––––so blinded by our urge' को टंकक ने by के y लेटर को दुबारा टाइप कर अगले our से पहले जोड़कर your कर दिया। यानि, बात को बिल्कुल उल्टा कर लेखक के लिए लज्जाजनक व हास्यास्पद स्थिति बना दी।

जैसा मैं शुरू में ही कह चुका हूँ, भाषा विवेचन का कार्य निरा खेल (निद) नहीं है। यह खेल ऐसा चक्रव्यूह या भूल–भुलैया भी है, जिसमें भाषा के बड़े–बड़े योद्धा फंस कर रह जाते हैं। देखिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

'ऋ' के योग से बने शब्दों का उच्चारण विद्वान भिन्न–भिन्न प्रकार से करते हैं। 'ऋ' को कुछ लोग 'रि', कुछ 'रु' और कुछ 'रियु' बोलते हैं। मसलन, 'कृषि' को कुछ लोग 'किरिषि', कुछ 'कुर्षि' और कुछ 'क्यूरिषि' बोलते हैं। 'ऋ' से निर्मित इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण सम्बन्धी जिज्ञासा को कोई भी विद्वान शांत नहीं कर सका। मैं चाहता हूँ इस प्रकरण में कोई विद्वान शुद्ध उच्चारण के बारे में बताए। इस प्रकरण में एक रोचक प्रसंग सुना रहा हूँ –प्रसंग 13–14 वर्ष पूर्व कालिदास अकादमी, उज्जैन द्वारा आयोजित 'कालिदास समारोह' से सम्बद्ध है। इसमें एक ख्यातिलब्ध साहित्यकार भी अपना सम्मान प्राप्त करने के लिए सपत्नी गए थे। दक्षिण भारत से पधारे, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, जो हिंदी के उद्भट विद्वान थे, ने अपने उद्बोधन में शकुंतला के वन्यप्राणी– प्रेम का अति हृदयग्राही वर्णन किया था। कार्यक्रम से लौटते समय लेखक की पत्नी लेखक पर नाराज होते हुए बोली,! क्यों जी ! आपने कभी नहीं बताया कि महर्षि कण्व मुर्गा–मुर्गी भी पालते थे, जबकि मुख्य अतिथि ने बताया था कि कण्व के आश्रम के मुर्गा–मुर्गियों के साथ शकुंतला खूब खेला करती थी। इस पर लेखक महोदय खूब हँसे। बात ही कुछ ऐसी थी। वह यह, कि मुख्य अतिथि दक्षिण भारत के होने के कारण 'मृर्गियों' को 'मुर्गियों' बोल रहे थे। दक्षिण में 'कृषि, 'ऋषि', 'मृग' आदि को 'क्रुषि', 'रियुषि', 'म्रुग' आदि कहा जाता है। उत्तर भारत के लोग एक वचनकर्ता के साथ 'है' तथा बहुवचन कर्ता के साथ 'हैं' का प्रयोग करते हैं, जबकि मध्य और दक्षिण भारत के लोग दोनों के ही साथ 'है' का प्रयोग करते हैं। प्रश्न है कि ये तथ्य लगभग सभी जानते हैं, पर इस हासोत्पादक स्थिति के लिए

यह समझ में नहीं आ रहा कि उत्तर ,मध्य तथा दक्षिण भारत के विद्वान जब हिंदी, इंग्लिश, उर्दू आदि अनेक भाषाओं के शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर लेते हैं, तो 'कृषि' या 'संस्कृति' को एक जैसा शुद्ध एवं मानकीकृत क्यों नहीं बोल पाते ? 'ज्ञ' को अधिकतर लोग 'ग्य' बोलते हैं जबकि कुछ लोग 'ज्य'। कृपालु जी महाराज, बाबा रामदेव, तथा आर्य समाजी 'ज्ञ' को 'ज्य' बोलते हैं, जबकि पूज्य श्रीराम शर्मा आचार्य उनके अनुयाई तथा अन्य अनेक विद्वान 'ज्ञ' को 'ग्य' बोलते हैं। 'ष' के उच्चारण को लीजिए। सामान्य से लेकर उच्च शिक्षित जन भी 'ष' को मूर्धन्य श की आवाज में ही बोलते हैं, पर कुछ लोग इसे 'ख' भी बोलते हैं। इनमें तुलसीदास अग्रगण्य हैं। उन्होंने 'ष' का प्रयोग सामान्यतः 'ख' के उच्चारणार्थ ही किया है। तुलसी की ऐसी अनेक अर्धालियों में से मात्र दो–तीन अर्धालियों को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है। 'कपिन्ह विभीषनु आवत देखा। जाना कोउ रिपु दूत विशेषा।।' (सुंदरकांड 1/43) यहाँ तुलसी का 'ष' से आशय 'ख' के उच्चारण से ही रहा होगा, अन्यथा वे अर्धाली के पूर्वार्ध में 'ख' का प्रयोग न करते)। जबकि लक्षिमन देख उमाकृत वेषा। चकित भए भ्रम हृदय विशेषा।।' (बालकांड 1/53) में तुलसी को मूर्धन्य ष का उच्चारण ही अभीष्ट था। तभी उन्होंने अर्धाली के दोनों अर्धान्तों पर कहीं भी 'ख' वर्ण का प्रयोग नहीं किया। इन दोनों उदाहरणों से इतर, 'जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा। तुम्हहिं लागि धरिहउं नरबेसा।।' (बालकांड 1/187) में तुलसी ने वेषा के स्थान पर 'बेसा' (वेसा' भी नहीं) का प्रयोग किया है। निश्चित रूप से यहाँ दोनों ही विरामांतों से पूर्व उनका मंतव्य 'ष' के उच्चारण से रहा होगा। तुलसी ने 'ष' के उच्चारण और उपयोग के विविध प्रयोग क्यों किये ?, 'श' के लिए अधिकतर 'स' तथा 'व' के लिए अधिकतर 'ब' का प्रयोग क्यों किया ? इसे तुलसी सदृश हिंदी और संस्कृत के प्रकांड पंडित ही बता सकते हैं। तुलसी का 'ष' का प्रयोग बहुत कुछ इंग्लिश के 'ch' के प्रयोग जैसा है। 'ch' का उच्चारण 'school chair' तथा 'chivalry' में क्रमशः 'क', 'च' तथा 'श' होता है। बड़े–बड़े विद्वानों को मैंने हिंदी में 'क्रीडा', 'ब्रीडा', 'नीड' लिखते हुए पाया है। जबकि इन शब्दों में 'ड' के नीचे बिंदु लगना चाहिए।

मैं तो अल्पज्ञ हूँ, मुझे लगता है कि बहुज्ञ भी नहीं जानते कि कवींद्र रवींद्र (रवींद्रनाथ ठाकुर) से लेकर राष्ट्रपति (यशशेष) प्रणव मुखर्जी तक बंगाल के सभी बंधु 'व' को 'ब' क्यों बोलते हैं?, पर्वत वासी संस्कृत के प्रकांड विद्वानों सहित सभी पर्वतीय जन 'स' को 'श' क्यों बोलते हैं ?, 'सिंह' को 'सिंघ' क्यों कहा जाता है ?, 'ॐ' को 'ओ३म' क्यों लिखा जाता है, 'अहिंसा' को इंग्लिश में 'ahimsa' ही क्यों लिखा जाता है, 'ahinsa' क्यों नहीं ? इत्यादि। हिंदी में ही नहीं, इंग्लिश आदि में भी भ्रांतियाँ मिलती हैं। भ्रांति की इंग्लिश confusion को ही देख लीजिए। इसका पर्यायवाची illusion भी है और delusion भी। जबकि honest के विलोम dishonest की तरह यह दोनों परस्पर विलोम होने चाहिए। offer को लीजिए। छात्र विषयों को ऑफर करते (लेते) हैं और संस्थाएं लोगों को नौकरियाँ ऑफर करती (देतीं) हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। शब्दकोश का अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि blunt के दो अर्थ होते हैं– एक गुट्ठल और दूसरा तीखा कथन, यानि तेज भी। (दोनों ही एक दूसरे के उलटे हैं)। चेचक जब बड़ी (बड़ी माता) होती है, तो उसे इंग्लिश में small pox कहा जाता है।

कुछ रोचक भाषाई उदाहरणों से लेख को पूर्ण करना चाहता हूँ। अस्वस्थ होने पर लोग अकसर कहा करते हैं, 'तबियत ढीली है' या 'तबियत टाइट है', जबकि ढीली और टाइट परस्पर विलोम शब्द हैं। बारिश जब रूक जाती है, तब कोई कहता है, 'खुल गया' और कोई कहता है, 'बंद हो गया'। जाहिर है खुलना और बंद होना एक–दूसरे के विपरीत हैं। 'जल' शब्द ही प्रयोगवश दो विरोधी स्थितियाँ पैदा कर देता है। एक, प्यास लगी है, जल दो। दो, आग से दूर रहो, जल जाओगे। कुछ वर्षों पूर्व भारत में महानगरों के नाम– परिवर्तन की ,जो हवा चली थी, उसमें रातों–रात नाम में चमत्कारी परिवर्तन हो गए। कलकत्ता (Calcutta) भी कोलकाता (Kolkata) हो गया। विद्वान जानते होंगे, इन नामों की वर्तनी में किस नियम, सिद्धांत या परंपरा का निर्वहन किया गया है ? इसी कोलकाता का ही एक भाषात्मक प्रसंग बताते हैं। सन् 2012 में मैं कुछ लोगों के साथ कोलकाता भ्रमण के लिए गया था। ठीक विधानसभा भवन के निकट एक इमारत के गेट पर लिखा हुआ था, 'कारी गोरी केंद्र'। कोलकाता जहाँ कई विशेषताओं के कारण विख्यात है, वहीं वेश्यावृत्ति के लिए भी जाना जाता है। 'कारीगोरी केंद्र' को पढ़कर मेरे दिमाग में आया कि शायद यहाँ दोनों ही वर्ण वाली वेश्याएँ रहती हैं– कारी (काली) भी और गोरी भी, कि तभी मेरी नजर इस शीर्षक से नीचे कोष्टक में कुछ पतले फोंट में लिखे शीर्षक पर पड़ी। यह था– (carpentery center) तब मेरी सामने आया कि जिसे मैं वेश्याओं का अड्डा समझ रहा था, वह कारीगरी का केंद्र है।

अंत में मैं यही कहूँगा की भाषा के भाव और संस्कार समझना खेल नहीं है। हालाँकि भाषा–मीमांसा में मजा आता है, पर भाषा के खेल में कभी–कभी चक्रव्यूह या भूल–भुलैया में फँसे व्यक्ति की भांति 'किंकर्तव्यविमूढः' की स्थिति भी बन जाती है। (फिर भी भूल–भुलैयों में जाना अच्छा लगता है)।

❐❐❐

तसर रेशम उद्योग का भावी परिदृश्य एवं विभिन्न पहलू/आयाम

डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय*, अरुणा रानी एवं डॉ. के.सत्यनारायण

तकनीकी आलेख

सारांश :

तसर रेशम उद्योग प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से लगभग 3.5 लाख लोगों की जीविका का प्रमुख साधन बना हुआ है। इस उद्योग की मदद से प्रायः ग्रामीण एवं गरीब लोगों को रोजगार मिलता है एवं उनका जीवन–यापन होता है। तसर उद्योग में मुख्यतया तीन सेक्टर होते हैं जैसे कि खाद्य पौधे, रेशम कीटपालन एवं रेशम वस्त्र निर्माण जो एक ग्रामीण एवं अनोखा व्यवसाय है जिसमें परिवार के प्रत्येक उम्र के लोगों को रोजगार मिलता है। बड़े–बुजुर्ग लोगों के लिए कीटपालन की देख–रेख का कार्य, युवाओं के लिए कीटपालन का कार्य, महिलाओं के लिए धागाकरण साथ ही कुशल व्यक्तियों हेतु वस्त्र निर्माण का कार्य। संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकियों के बहुधा एवं प्रभावी उपयोग से तसर रेशम का उत्पादन विगत वर्षों में प्रगति किया है। परिणाम स्वरूप तसर कृषकों की आय में भी वृद्धि हुई है। आने वाले दिनों में किसानों की आय और अधिक बढ़ाने हेतु धान की खेती के साथ तसर कीटपालन करने की प्रणाली पर कार्य किया जा रहा है जिसके तहत खेत की मेड़ पर तसर के पौधे (अर्जुन, आसन) लगाकर प्रति हेक्टेयर 10–20 हजार अतिरिक्त आय मिल सकती है।

प्रस्तावना :

विभिन्न प्रकार के रेशम में तसर–रेशम का उत्पादन/उद्योग अत्यधिक महत्व का है क्योंकि इससे समाज के लाखों गरीब लोगों को जीवनयापन का सहारा मिलता है एवं कीटपालन परोक्ष रूप से पर्यावरण के संरक्षण व वन संरक्षण में भी सहायक होता है। देश में लगभग तीन से चार करोड़ तसर कोसे प्रति वर्ष बीज हेतु संरक्षित किये जाते हैं जिनमें से झारखण्ड राज्य में यह कार्य बहुतायत होता है जहाँ लाखों कोसे संरक्षित किये जाने के साथ ही तसर रेशम का अधिकतम उत्पादन किया जाता है। भारत के अन्य राज्यों में भी तसर रेशम उत्पादन की असीम संभावनाएँ हैं क्योंकि तसर कीट के भोज्य पौधे प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। साथ ही कीटपालन हेतु परिस्थितियों की अनुकूलता है। अतः इस क्षेत्र में ग्रामीण रोजगार सृजन की अपार संभावनाएँ हैं। तसर रेशम क्षेत्र में अनवरत अनुसन्धान से प्राप्त आधुनिक तकनीक एवं कृषकों के समन्वित प्रयास हुए हैं लेकिन तसर रेशम के अनेक क्षेत्रों में अभी भी शोध की व्यापक सम्भावनायें हैं। अतः शोध के नए आयामों एवं कृषक–ग्राह्य तकनीकियों के विकास व उनके बेहतर समन्वयन से तसर रेशम उद्योग को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है। साथ ही इससे हजारों बेरोजगार लोगों को रोजगार मिल सकता है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन रुकेगा एवं जीवन स्तर ऊँचा उठेगा।

तसर रेशम उद्योग का भावी आयाम एवं परिदृश्य :

- विभिन्न तसर सूत, कपड़ा, कोकून, रेशम अपशिष्ट आदि की उपलब्धता दिखाने के लिए सामान्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म/पोर्टल। यह उत्पादकों, विक्रेताओं और उपभोक्ताओं को तसर बाजार क्षेत्र को एकीकृत करने में मदद करेगा।
- किसानों/उत्पादकों के आस–पास कोकून बैंक, यार्न बैंक और फैब्रिक बैंक पर अधिक ध्यान दें। उद्यमियों का अधिक ध्यान आकर्षित करने के लिए बिजनेस इन्क्यूबेटर के माध्यम से उनकी सहायता की जा सकती है।
- तसर रेशम उद्योग को बढ़ावा देने के लिए रेशम को लोकप्रिय वाणिज्यिक पोर्टल से जोड़कर बढ़ावा दिया जा सकता है।

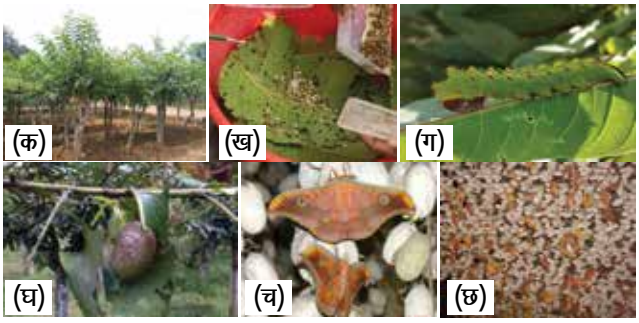

चित्र 1 : (क) तसर खाद्य पौधा (ख) शिशु कीट (ग) तसर रेशम कीट (घ) कोसा निर्माण (च) मोथ वहिर्गमन (छ) नर मादा मोथ का ग्रेनेज में युग्मन

- कम से कम 20% तसर खाद्य पौधों के रोपण के लिए विभिन्न संगठनों जैसे बीसीसीएल/सीसीएल/हिंडाल्को आदि के सीएसआर फंड की खोज।

*वैज्ञानिक–डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची

- देश के प्रत्येक रेशम उत्पादन जिले में कम–से–कम 100 अति प्रगतिशील किसानों की पहचान और प्रगतिशील किसानों की सफलता की कहानी को लोकप्रिय बनाना। इन किसानों को रीलिंग से लेकर फैब्रिक एवं मार्केटिंग स्टार्टअप तक में बढ़ावा दिया जा सकता है।
- तसर खाद्य पौधों का विशाल वृक्षारोपण और उनके अभिजात वर्ग *L-speciosa* और *T- arjuna* (कुलीन वर्ग) को भविष्य में रोपण के लिए उपयोग करने की आवश्यकता है ताकि विकास की अवधि को कम किया जा सके और तेजी से विकास किया जा सके।
- विभिन्न संगठनों के साथ व्यापक गठबंधन और आईसीएआर/केवीके/एनजीओ/कृषि विश्वविद्यालयों के साथ समावेशी सहयोग।
- तसर कृषि–वानिकी मॉडल एवं केवीके के सहयोग से बुनियादी ढाँचे का प्रसार और उपयोग।

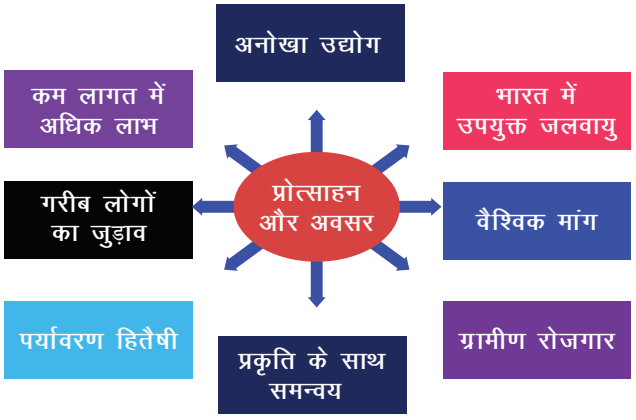

चित्र 2 : तसर रेशम उद्योग : प्रोत्साहन और अवसर

- गुणवत्ता से जुड़ी उत्पादकता वृद्धि के लिए तसर रेशम उत्पादन में कृषि विज्ञान केन्द्र का सहयोग।
- किसानों के आस–पास के तसर कोकूनों की खरीद पर अधिक ध्यान देना और उद्योग में अगले व पिछले लिंकेज की दिशा में त्वरित कार्रवाई करना।
- स्थानीय से वैश्विक स्तर पर तसर रेशम को बढ़ावा देना।
- रेशम उत्पादन के लिए अधिक किसान समाज और एसएचजी का विकास।
- प्रौद्योगिकी प्रसार के लिए प्रिंट और डिजिटल मीडिया का उपयोग।
- तसर किसानों के लिए रियल कनेक्ट और कॉल सेंटर तथा तसर रेशम उत्पादन पर व्यापक जानकारी के लिए सिंगल विंडो सिस्टम।
- अनुसंधान और विकास के लिए अधिक धनराशि के साथ–साथ राज्य रेशम विभाग के साथ बेहतर समन्वय। बीज क्षेत्र का सुदृढ़ीकरण और राज्यों के साथ उनका जुड़ाव।

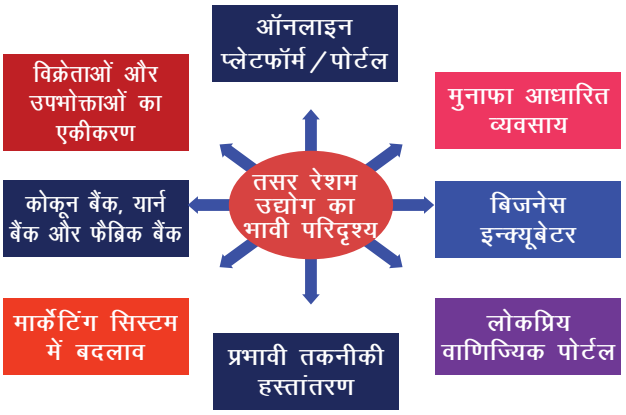

चित्र 3 : तसर रेशम उद्योग का भावी परिदृश्य

- तसर रेशम उत्पादन के लिए नए क्षेत्रों की पहचान और विस्तार पर अधिक ध्यान। बुनियादी ढाँचे और जनशक्ति का उन्नयन। किसानों के प्रति अधिक उन्मुखीकरण/संपर्क के लिए आरईसी अवसंरचना/जनशक्ति को सुदृढ़ बनाना।
- तसर रेशम उद्योग के लिए सरकारी पैकेज की जरूरत है क्योंकि कोविड–19 के कारण बुनकरों का अंतिम उत्पाद नहीं बेचा जा सका। इस पैकेज का उपयोग उत्पादकों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए किया जा सकता है ताकि वे अपने उत्पाद को बाजार में बेहतर तरीके से बेच सकें। यह पुराने स्टॉक को निस्तारित करेगा और बाजार को स्थिर करेगा। बाजार को बढ़ावा देने के लिए तसर रेशम की खरीद पर प्रोत्साहन की व्यवस्था।
- विभिन्न सरकारी कार्यालयों में तसर रेशम की अधिमानिक आवश्यकता आधारित खरीद को आवश्यक बनाया जा सकता है। यह तसर रेशम की विशाल उपयोगिता को बढ़ाएगा।
- निकट भविष्य में तापमान में और वृद्धि होने की उम्मीद के रूप में थर्मो सहिष्णु रेशमकीट पर अनुसंधान एवं विकास सहयोग की आवश्यकता है।

❐❐❐

तसर के सरिहन पारि–प्रजाति संरक्षण में विशाल साल वृक्षों की भूमिका

डॉ. शांताकार गिरि*, प्रबीर कुमार गोराईं, प्रमोद कुमार दुबे एवं डॉ. के. सत्यनारायण

तकनीकी आलेख

प्रस्तावना

भारत वर्ष के उष्ण कटिबंधीय जंगलों में मौजूद तसर की जंगली पारि–प्रजातियाँ यथा–मोदल, रैली, लरिया, सरिहन, आंध्रा लोकल, भंडारा लोकल आदि स्वतः प्रगुणित होती हैं जबकि डाबा पारि– प्रजाति का कीटपालन तसर कृषकों द्वारा घने जंगलों से हटकर उसके पास के इलाके में जहाँ तसर के खाद्य पौधे या तो प्राकृतिक रूप से अवस्थित हैं या विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से वृक्षारोपण के जरिये बगीचे तैयार हैं–में किया जाता है। उष्ण कटिबंधीय पर्णपातीय जंगलों में पाये जाने वाले अर्जुन, आसन एवं साल के पेड़ – पौधों को तसर के प्राथमिक भोज्य पौधों के रूप मे जाना जाता है क्योंकि तसर लार्वा मुख्य रूप से इन सब पेड़ की पत्तियों को चाव से खाता है और जीवन निर्वहन कर सुसुप्तावस्था में रहने के लिए कोसा का निर्माण करता है। तसर लार्वा को रेशम तंतु निकालने की क्षमता उसके स्वास्थ्य पर निर्भर करता है और उसका स्वास्थ्य पूर्ण रूपेण उसके आहार व जलवायवीय अवस्था पर निर्भर करता है। झारखण्ड में प्रमुख तसर उत्पादन क्षेत्र के रूप में कोल्हान एवं संथाल परगना प्रमंडल को जाना जाता है। तसर की डाबा प्रजाति का वाणिज्यिक बीजागार एवं कीटपालन सुगमता से संभव हो पाने के फलस्वरूप राज्य सरकार और स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा विगत दो–तीन दशकों से विभिन्न परियजनाओं के माध्यम से डाबा प्रजाति के कीटपालन एवं प्रगुणन पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है किंतु, जंगली पारि–प्रजातियों की महत्ता के मद्देनजर इन प्रजातियों को बचाये रखना वर्तमान समय की प्राथमिकता है। तसर की सरिहन पारि–प्रजाति झारखंड राज्य के संथाल परगना प्रमंडल एवं बिहार राज्य के जमुई जिले के वन क्षेत्रों में पायी जाती है। सरिहन तसर के लिये इस क्षेत्र में उचित पारिस्थितिकी एवं भौगोलिक अवस्थाओं की मौजूदगी तथा तसर खाद्य पौधों में अनुकूल मात्रा में पोषक तत्वों की उपलब्ध्ता–दो प्रमुख कारकों के कारण ही सरिहन पारि–प्रजाति के तसर रेशमकीट के जीवनचक्र का निर्वहन हो पाता है एवं इसका प्राकृतिक प्रगुणन होता है। सरिहन के रेशम के धागों में अन्य प्रजातियों के रेशम के धागों की तुलना में चमकीलापन, चिकनापन, पतलापन और लचीलापन अधिक होता है। इन्हीं गुणों के कारण इसकी एक विशिष्ट पहचान है और बाजार में माँग है। यह वन क्षेत्र में रहने वाले कीटपालकों के लिए प्राकृतिक उपहार है और यह उनके आजीविका का एक अच्छा साधन है। स्वस्थाने संरक्षण एवं कीटपालन तथा तृतीय फसल की अवधि में व्यावसायिक कीटपालन को अपनाये जाने से इस विरल प्रजाति को बचाये जाने के साथ–साथ इसकी लोकप्रियता को बनाये रखा जा सकता है।

तसर के प्राथमिक भोज्य पौधों में साल वृक्ष का महत्वः यह तथ्य साबित हो चुका है कि तसर के जितने भी जंगली पारि प्रजातियाँ हैं सभवतः सभी का मूल उत्पत्ति साल वृक्ष से ही हुआ है। विशाल साल वृक्षों की ऊँचाई 80 फीट से अधिक तथा तना की मोटाई औसतन 4 से 6 फीट व्यास की होती है। इसकी पत्तों की लम्बाई 10 से 25 से.मी. तथा चौड़ाई 5 से 15 से.मी. तक की होती है। उष्ण– कटिबंधीय वन प्रदेशों के अम्लीय एवं अति अम्लीय मिट्टी में भी यह वृक्ष बढ़ता है। प्रकृति प्रदत्त अंतर्निहित गुणों के कारण साल वृक्षों की पत्तियों में चल एवं अचल पोषक तत्वों की मात्रा अन्य दो प्राथमिक तसर भोज्य पौधों–अर्जुन तथा आसन से भिन्न हैं। तसर के खाद्य पौधों की पत्तियों में विद्यमान पोषक तत्व – पौधे की मृदा अवस्था, अवस्थिति, उम्र, प्रकार एवं जलवायवीय कारकों पर निर्भर करता है। तसर के भोज्य पौधे बहुवर्षी (पेरीनियल) होते हैं और कई वर्षों तक जीवित रहते हैं। तसर लार्वा को प्राथमिक, द्वितीयक एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों का संतुलित आहार मुहैया कराने तथा स्वास्थ्यकर स्थिति बनाये रखने के लिए विशाल साल वृक्षों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

तसर लार्वा अपने जीवन का निर्वहन कर सुसुप्तवस्था में रहने के लिए कोसा निर्माण करता है। यह कोसा कवच दो प्रकार के प्रोटीन–सेरीसीन एवं फाइब्रोइन से बना होता है जो लार्वा के रेशम ग्रंथि से मुख द्वार के जरिये स्रावित होकर रेशम तंतु के रूप में बाहर आता है। लार्वा के रेशम ग्रंथि को ठीक से बनने के लिए नाइट्रोजन और फास्फोरस के अलावा सूक्ष्म पोषक तत्वों की विशेष भूमिका होती है। खासकर जिंक, रेशम तंतु को रेशम ग्रंथि से ज्यादा मात्रा में निकलने में मदद करती है। विभिन्न तसर कीटपालन प्रक्षेत्रों से संग्रहीत तसर के प्राथमिक भोज्य पौधों की पत्तियों का रासायनिक विश्लेषण से यह पाया गया है कि औसत नाइट्रोजन (N), जिंक (Zn) और मैंगनीज (Mn) की

* वैज्ञानिक–डी, क्षे.रे.उ.अ.के., दुमका

मात्रा अर्जुन और आसन वृक्ष की पत्तियों की तुलना में साल वृक्ष की पत्तियों में अधिक रहता है। नाइट्रोजन और जिंक को पेड़–पौधों के लिए चल तत्वों की श्रेणी में रखा गया है क्योंकि इनके आयनों का चलायमान पौधों की शाखा–प्रशाखा व टहनियों से होते हुए अग्र भाग की पत्तियों तक आसानी से पहुँच पाता है। ठीक इसके विपरीत मैंगनीज के आयनों का चलायमान पौधों की शाखा–प्रशाखा व टहनियों से होते हुए अग्र भाग की पत्तियों तक आसानी से पहुँच पाना सम्भव नहीं हो पाता है जिसके फलस्वरूप इसे अचल तत्व की श्रेणी में रखा गया है। छोटे– छोटे साल के पौधों की पत्तियों में मैग्नीज की मात्रा तसर लार्वा के लिए विषैले स्तर तक रहता है जबकि विशाल साल वृक्षों की ऊँचाई अधिक रहने के कारण इसके अग्र भाग की पत्तियों में मैंगनीज की मात्रा विषैले स्तर तक नहीं पहुँच पाता।

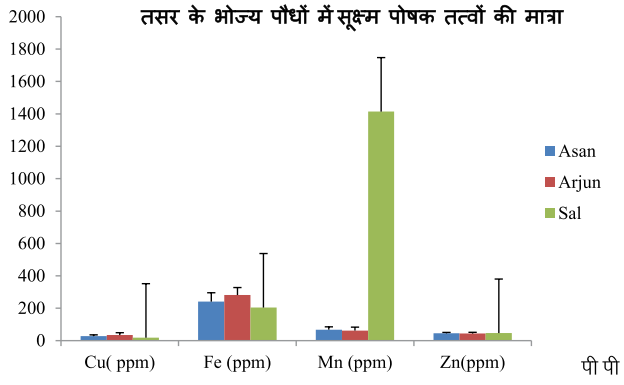

चित्र–1. आसन, अर्जुन और साल के पत्तों में मुख्य पोषक तत्वों की मात्रा (प्रतिशत में)

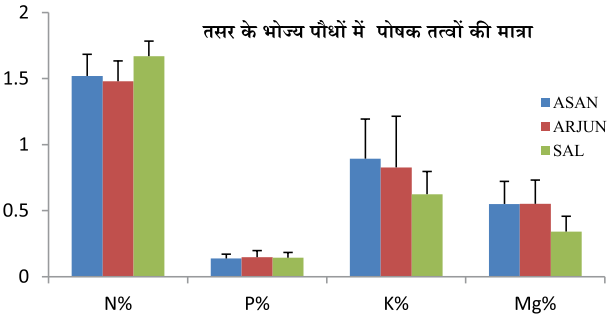

चित्र–2. आसन, अर्जुन और साल के पत्तों में सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा (पी.पी.पी.में)

चित्र–3. साल जंगल के छोटे–छोटे वृक्ष

चित्र–4. साल वृक्षों का जंगल

धरती से हम जैसे–जैसे ऊपर जाते हैं वैसे–वैसे तापमान में कमी महशूस करते हैं। तसर लार्वा के लिए भी यह लागू होता है। अतः ऊँचे–ऊँचे विशाल साल वृक्षों की पत्तियों में तसर लार्वा अनुकुल तापमान पर रह कर चाव से साल के पत्तियों को खाता है। विशाल साल वृक्षों की ऊपर की पत्तियों में परभक्षी एवं परजीवी का प्रकोप भी कम रहता है। इन्हीं सब कारणों से बड़े–बड़े और विशाल साल वृक्षों में तसर की जंगली प्रजातियाँ स्वतः प्रगुणित होती हैं और बड़े व गठीले कोसों का निर्माण करती हैं जो या तो एकप्रज या द्विप्रज प्रकार के होते हैं। समुद्र तल से तसर भोज्य पौधों के वन की धरती तल की ऊँचाई बढ़ने से तसर की प्रजता घटती है। यही कारण है कि धरती तल से आधिक ऊँचाई वाले संरक्षित साल जंगलों में मोदल, रैली एवं जंगली डाबा जैसी एकप्रज तसर प्रजाति भी पाये जाते हैं। उष्णकटिबंधीय संरक्षित जंगलों में साल के साथ–साथ अर्जुन तथा आसन के पेड़ भी मौजूद रहते हैं जो अपेक्षाकृत कम ऊँचाई के होते हैं और इन तसर भोज्य पौधों की पत्तियों में औसत नाइट्रोजन (N), जिंक (Zn) और मैंग्नीज (Mn) की मात्रा साल वृक्ष से कम होती है। इन्ही कारणों से अर्जुन तथा आसन के पौधों में पालित तसर लार्वा का कोसा आकार छोटा तथा प्रजता अधिक रहता है।

चित्र–5. आसन, अर्जुन और साल के पेड़ों से भरा जंगल का तसर कीटपालन प्रक्षेत्र

संथालपरगना एवं जमुई के जंगलों में आसन और अर्जुन के साथ–साथ विशाल साल वृक्ष भी मौजूद होने के कारण सरिहन के एकप्रज, द्विप्रज एवं त्रिपज कोसे उत्पादित होते हैं। अतः यह कहना सटीक होगा कि तसर के सरिहन पारि–प्रजाति संरक्षण में विशाल साल वृक्षों की विशेष भूमिका होती है। साथ ही, साल जंगल पर्यावरण को विशुद्ध रखने में विशेष सहायक है।

आसन, अर्जुन और साल वृक्ष से उत्पादित सरिहन तसर कोसा की तुलनात्मक विवेचना :

साल वृक्ष से उत्पादित तसर कोसे आसन और अर्जुन पौधों से उत्पादित तसर कोसों से अपेक्षाकृत बड़े एवं गठीले होते हैं। वर्ष 2021 के अगस्त महीने में सरसबदिया (जमुई) साल के जंगलों से संग्रहित सरिहन पारि–प्रजाति का तसर कोसा एवं आसन/अर्जुन पौधों में तृतीय फसल कीटपालन से उत्पादित सरिहन पारि–प्रजाति का तसर कोसा का मूल्यांकन इस प्रकार पाया गया है। इसे क्रमशः टेबल–1 तथा टेबल–2 में दर्शाया गया है। आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि साल आधारित कोसे अर्जुन और आसन आधारित कोसों से ज्यादा अच्छे होते हैं। अवलोकन से अंतर जानने के लिए चित्र सं. 6 एवं चित्र सं. 7 में क्रमशः साल आधारित तथा आसन–अर्जुन आधारित सरिहन तसर कोसों को दिखाया गया है।

टेबल–1 : साल के जंगलों से संग्रहित सरिहन पारि–प्रजाति का तसर कोसा मूल्यांकन

औसत कोसा वजन (ग्राम में)	औसत कवच वजन (ग्राम में)	औसत प्यूपा वजन (ग्राम में)	रेशम अनुपात :
नर कोसा :			
9.29± 0.83	2.23± 0.33	6.85± 0.65	23.90± 2.58
मादा कोसा :			
12.83± 1.43	2.32± 0.38	10.39± 1.14	18.12± 2.14
नर व मादा मिश्रित कोसा :			
10.88± 2.27	2.23± 0.37	8.54± 2.08	20.93± 3.83

टेबल–2 : आसन/अर्जुन पौधों में कीटपालन से उत्पादित सरिहन पारि–प्रजाति का तसर कोसा का मूल्यांकन

औसत कोसा वजन (ग्राम में)	औसत कवच वजन (ग्राम में)	औसत प्यूपा वजन (ग्राम में)	रेशम अनुपात :
नर कोसा :			
7.45± 1.14	1.11± 0.42	6.15± 1.09	14.90± 5.49
मादा कोसा :			
10.34± 1.07	1.33± 0.24	8.88± 0.98	12.93± 1.99
नर व मादा मिश्रित कोसा :			
8.89± 1.78	1.22± 0.34	7.56± 1.66	14.03± 4.18

चित्र–6. साल आधारित सरिहन तसर कोसे

चित्र–7. आसन/अर्जुन आधारित तसर कोसे

निष्कर्ष :

तसर के जंगली पारि–प्रजातियों को बचाये रखने हेतु साल जंगलों का संरक्षण बहुत आवश्यक है। जंगलों का अवैध कटाई पर पूर्ण रोक लगाना तथा जंगलों से जुड़े लोगों को जागरूक करना अनिवार्य है। उष्णकटिबंधीय जंगलों में विशाल साल वृक्ष की संख्या बढ़ाने हेतु वन विभाग का सहयोग तथा जन सहभागिता अत्यंत जरूरी है ताकि संरक्षित वनों का क्षेत्रफल बढ़ाया जा सके और तसर के जंगली पारि–प्रजातियों को संरक्षित किया जा सके।

❐❐❐

पूर्व वसन्त ओक तसर कीटपालन

ए.एस.वर्मा*, एवं डॉ. जे.जे.बिकंदाकट्टी

तकनीकी आलेख

परिचय : भारत के उत्तर–पश्चिम में *एन्थीरिया प्रॉयली* ओक तसर रेशम का मुख्य स्रोत है जिसे शीतोष्ण तसर रेशम के नाम से भी जाना जाता है। उत्तर–पश्चिम में ओक तसर कोकून का अत्पादन काफी कम है। चूँकि ओक तसर कीटपालन दूसरे रेशम कीटपालन की तुलना मे काफी जटिल है। कीटपालन में रोग संक्रमण से नुकसान के साथ–साथ किसानों मे ओक तसर कीटपालन के प्रति अभिरुचि काफी कम है। ओक तसर कीट के खाद्य पौधे जो प्राकृतिक रूप से उत्तराखण्ड के वन क्षेत्र मे उपलब्ध हैं, जिनकी ऊँचाई काफी अधिक होती है, से कीटपालन हेतु पत्तियों का दोहन करना काफी जोखिम भरा होता है। निम्न, मध्य एवं उच्च ऊँचाई समुद्र तल से ऊँचाई के मानक एवं उस ऊँचाई की जलवायु के अनुसार कीटपालन किया जाता है। निम्न एवं मध्य पर लोकल बाँज (*क्वैरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*), मणिपुरी बाँज (*क्वैरकस सेरेटा*) एवं उच्च ऊँचाई पर मोरू, तिलौज (*क्वैरकस हिमालियाना*), खरसू (*क्वैरकस सेमीकापीफोलिया*) की पत्तियों को उपयोग में लाया जाता है। पूर्व वसंत निम्न ऊँचाई पर, वसंत फसल मध्य ऊँचाई, व ग्रीष्म फसल उच्च ऊँचाई पर एवं पुनः ऑटम फसल कीटपालन मध्य ऊँचाई पर किया जाता है। प्रत्येक ऊँचाई पर मणिपुरी बाँज के आर्थिक वृक्षारोपण का अभाव है जिसके कारण कीटपालन प्राकृतिक रूप से उपलब्ध खाद्य पौधों पर ही निर्भर करता है। पूर्व वसंत फसल कीटपालन सामान्यतः प्रचलन में नही है किन्तु उत्तराखण्ड में क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल द्वारा कीटाण्डों का उत्पादन बढाने के प्रयोजन से क्षमता के अनुसार निम्न ऊँचाई पर रानीबाग वन क्षेत्र मे एवं हिमाचल–प्रदेश मे अनुसंधान प्रसार केन्द्र, पालमपुर द्वारा शाहपुर क्षेत्र मे मणिपुरी बाँज के उपलब्ध पौधों से पत्तियों का दोहन कर कीटपालन कराया जाता है। वर्तमान मे उत्तराखण्ड राज्य में ओक तसर विकास परियोजना के तहत किसानों के माध्यम से तीनों निम्न, मध्य एवं उच्च ऊँचाई पर ओक तसर कीटपालन कराये जाने के प्रयास जारी हैं ताकि राज्य मे ओक तसर रेशम के उत्पादन को बढाया जा सके एवं इससे जुड़े किसानों को अधिक–से–अधिक लाभ मिल सके।

ओक तसर कीटपालन : पहाडों मे अलग–अलग ऊँचाई वाले क्षेत्रों मे मार्च से नवम्बर माह के मध्य लगभग भिन्न–भिन्न जलवायु एवं तापमान रहता है। दिसम्बर से फरवरी तक लगभग सभी पहाड़ी क्षेत्रों मे कड़ाके की ठंड एवं कुछ क्षेत्रों मे बर्फ गिरने और जमा होने से तापमान काफी गिर जाता है। उपयुक्त समय

आने पर अन्तर्गृह ओक तसर कीटपालन उस ऊँचाई पर किया जाता जहाँ पर जैसे–जैसे तापमान में परिवर्तन होता है वैसे–वैसे तापमान बढ़ने से उस ऊँचाई पर ओक तसर खाद्य पौधों पर कोंपलें आनी प्रारम्भ होती हैं। कोंपलों का आना भी सर्दी के बाद तापमान के बढ़ने पर ही निर्भर करता है। अन्तर्गृह कीटपालन के समय तापमान एवं आर्द्रता (24±2 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान एवं 75±5 प्रतिशत आर्द्रता) का रखरखाव आसानी से किया जा सके। कीटपालन के समय तापमान एवं आर्द्रता का रखरखाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। ओक तसर कीटपालन मुख्यतः तीन फसलों मे किया जाता है। पूर्व वसंत फसल कीटपालन प्रचलन में नही है, अतिरिक्त फसल के रूप में किया जाता है।

1. पूर्व वसंत कीटपालन : पूर्व वसंत फसल कीटपालन निम्न ऊँचाई पर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध खादय पौधों पर ही निर्भर करता है। इसलिए सामान्यतः प्रचलन में नहीं है। ग्रीष्म फसल के कीटाण्डों की आपूर्ति में सहयोग प्रदान करने के प्रयोजन से वसंत फसल के 10 से 15 दिन पूर्व फरवरी माह मे कीटाण्ड तैयार कर इसे कीटपालन हेतु निम्न ऊँचाई पर 25 फरवरी से 02 मार्च के बीच ब्रशिंग कार्य किया जाता है।

2. वसंत फसल कीटपालन : सामान्यतः मध्य ऊँचाई पर स्थानीय बाँज (*क्वैरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*), अथवा मणिपुरी बाँज (*क्वैरकस सेरेटा*) पर मार्च माह के द्वितीय सप्ताह मे कोपलें आनी प्रारम्भ हो जाती हैं। अतः वसंत फसल कीटपालन मार्च माह मे प्रारम्भ किया जाता जो अप्रैल माह मे पूर्ण हो जाता है।

3. उच्च ऊँचाई या ग्रीष्म फसल कीटपालन : सामान्यतः उच्च ऊँचाई पर 15 मई के बाद से अथवा जून के शुरू मे उच्च ऊँचाई पर मोरू, तिलौज (*क्वैरकस हिमालियाना*) अथवा खरसू (*क्वैरकस सेमीकापीफोलिया*) पर कोपलें आनी प्रारम्भ होती हैं। अतः उच्च ऊँचाई पर कीटपालन मई माह मे शुरू किया जाता जो जुलाई माह में पूर्ण हो जाता है। इस कीटपालन को वाणिज्यिक फसल कीटपालन भी कहा जाता है।

4. शरद फसल कीटपालन : पुनः मध्य ऊँचाई पर स्थानीय बाँज (*क्वैरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*), अथवा मणिपुरी बाँज (*क्वैरकस सेरेटा*) के पौधों की शाखाओं को जुलाई माह मे हल्के रूप काटने से अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में कोपलें आने से शरद फसल

*वैज्ञानिक–डी, क्षे.रे.उ.अ.केन्द्र, भीमताल

कीटपालन अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में प्रारम्भ किया जाता है जो अक्टूबर माह के अन्त तक पूर्ण हो जाता है।

सामान्यतः मध्य ऊँचाई पर वसंत फसल से उत्पादित कोसों में से चयनित बीज कोसों को संरक्षित किया जाता है ताकि शरद फसल हेतु कीटाण्ड तैयार किये जा सकें। उच्च ऊँचाई कीटपालन से उत्पादित कोसों में से चयनित बीज कोसों को उच्च ऊँचाई पर ही जहाँ पर 15 डिग्री सेन्टीग्रेट के नीचे तापमान अगस्त से लेकर दिसम्बर तक रहता है वैसे स्थान पर तथा मध्य ऊँचाई पर शरद फसल से उत्पादित कोसों में से चयनित बीज कोसों को मध्य ऊँचाई पर संरक्षित किया जाता है ताकि अनियमित शलभ निर्गमन न हो एवं जनवरी–फरवरी माह में बीजागार में उपचारित कर पूर्व वसंत एवं वसंत फसल कीटपालन हेतु कीटाण्ड तैयार किये जा सकें। ऊँचाई की दृष्टि से ओक तसर कीटपालन का समय जैसा कि तालिका–01 मे दर्शाया गया है।

1. पूर्व वसंत कीटपालन : पूर्व वसंत कीटपालन निम्न ऊँचाई पर उपलब्ध खाद्य पौधों वाले क्षेत्र मे उचित स्थान का चुनाव कर 25 फरवरी से 02 मार्च के बीच ब्रशिंग कार्य किया जाता है। चूँकि समुद्र तल से 500 से 1100 मीटर की ऊँचाई पर उपलब्ध ओक तसर खाद्य पौधों लोकल बाँज (क्वैरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा), अथवा मणिपुरी बाँज (क्वैरकस सेरेटा) पर फरवरी माह के अन्त मे सर्दी के बाद तापमान बढ़ने से कापलें आनी प्रारम्भ हो जाती है। चयनित स्थान पर अन्तर्गृह कीटपालन के समय तापमान एवं आर्द्रता (26±2 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान एवं 85±5 प्रतिशत आर्द्रताद्ध का रखरखाव कर कीटपालन किया जाता है। उच्च ऊँचाई अथवा मध्य ऊँचाई पर किये गये ग्रीष्म अथवा शरद फसल कीटपालन से प्राप्त चयनित बीज कोसे जो संरक्षित हैं में से आवश्यकतानुसार 15 जनवरी के बाद बीजागार में उपचारित किया जाता है। बीज कोसों से फरवरी के दूसरे सप्ताह मे शलभ निर्गमन प्रारम्भ हो जाता और कीटाण्ड तैयार होने शुरू हो जाते हैं। 25 फरवरी के बाद या मार्च के पहले सप्ताह मे पूर्व वसंत कीटपालन में तैयार किये गये उन कीटाण्डों का उपयोग किया जाता है। पूर्व वसंत कीटपालन से कोसों की कटाई 15 से 20 अप्रैल तक पूर्ण हो जाती है तथा कीटपालन से प्राप्त बीज कोसों को माला बनाकर सीधे बीजागार में बीज उत्पादन हेतु उपचारित किया जाता है। 21 दिनों के अन्दर 10 से 15 मई के बीच बीज कोसों से शलभ निर्गमन प्रारम्भ हो जाता है और तैयार किये गये कीटाण्डों को उच्च ऊँचाई पर किसानों को ग्रीष्म या वाणिज्यिक फसल कीटपालन की ब्रशिंग हेतु आपूर्ति किया जाता हैं। चूँकि उच्च ऊँचाई पर समुद्र तल से 2100–2700 मीटर एवं 2400–3700 मीटर की ऊँचाई पर उपलब्ध क्वै. हिमालियाना (मोरू, तिलौज) अथवा सेमीकापीफोलिया (खरसू) के पौधों पर तापमान बढ़ने से 15 मई के बाद कोपलें आनी प्रारम्भ हो जाती हैं।

कभी–कभी सर्दी देर तक पड़ने से खाद्य पौधों पर कोपलें देरी से आती हैं ऐसे में पूर्व वसंत, वसंत एवं उच्च ऊँचाई कीटपालन प्रारम्भ होने मे 5 से 10 दिन का विलम्ब हो जाता है। पूर्व वसंत फसल कीटपालन सामान्यतः प्रचलन में नहीं है। उत्तर–पश्चिम में उत्तराखण्ड एवं हिमाचाल प्रदेश राज्यों में क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल एवं अनुसंधान प्रसार केन्द्र पालमपुर द्वारा मणिपुरी बाँज के निम्न ऊँचाई पर उपलब्ध पौधों से पत्तियों का दोहन कर कीटपालन कराया जाता है। दोनों केन्द्रों द्वारा विगत पाँच वर्षों के दौरान किये गये पूर्व वसंत कीटपालन से सम्बन्धित विवरण तालिका–02 एवं 03 में दर्शाया गया है।

तलिका–01 : ऊँचाई की दृष्टि से ओक तसर कीटपालन का समय

फसल की प्रकृति	समुद्र तल से ऊँचाई	ब्रशिंग की तिथि	ओक तसर खाद्य पौधे
पूर्व वसंत फसल	निम्न ऊँचाई–500 मी.से 1100 मी.	25 फरवरी से 02 मार्च	क्वै. ल्यूकोट्राइकोफोरा (बाँज) एवं क्वै. सेरेटा (मणिपुरी बाँज)
वसंत फसल	मध्य ऊँचाई– 1100–2100	05 से 15 मार्च	क्वै. ल्यूकोट्राइकोफोरा (बाँज) एवं क्वै. सेरेटा (मणिपुरी बाँज)
उच्च ऊँचाई या ग्रीष्म फसल फसल	उच्च ऊँचाई –2100–2700 मी. एवं 2400–3700 मी.	15 से 25 मई	क्वै. हिमालियाना (मोरू, तिलौज) सेमीकापीफोलिया (खरसू)
शरद फसल	निम्न एवं मध्य ऊँचाई–500 मी से 2100 मी.	25 से 31 अगस्त	क्वै. सेरेटा (मणिपुरी बाँज)

चित्र 1 : निम्न उच्च ऊँचाई पर रानीबाग क्षेत्र मे अन्तर्गृह कीटपालन

तलिका–02 : क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल केन्द्र द्वारा निम्न ऊँचाई पर रानीबाग क्षेत्र मे पूर्व वसंत मे पालित रो.मु.च एवं कोसा उत्पादन–

क्रम सं.	कीटपालन वर्ष	प्रजाति	ब्रशिंग तिथि	पालित रो.मु.च. की संख्या	कोकून उत्पादन			
					सीड कोकून	नॉन सीड कोकून	कुल	कोसा उत्पादन प्रति रो.मु.च.
1	2017–18	ए.प्रॉयली	28.02.2017	200	11,220	960	12,180	60.90
2	2018–19	ए.प्रॉयली	06.03.2018	200	12,546	1210	13,756	68.78
3	2019–20	ए.प्रॉयली	05.03.2019	200	12,000	230	12,230	61.15
4	2020–21	ए.प्रॉयली	08.03.2021	200	5,000	1600	6,600	33.00
5	2021–22	ए.प्रॉयली	01.03.2021	450	7550	5760	14310	31.80

चित्र 2 : निम्न उच्च ऊँचाई पर शहपुर क्षेत्र मे अन्तर्गृह कीटपालन

तालिका–03 : अनुसंधान प्रसार केन्द्र पालमपुर द्वारा निम्न ऊँचाई पर शाहपुर /द्रमान क्षेत्र मे पूर्व बसंत मे पालित रो.मु.च एवं कोसा उत्पादन–

क्रम सं.	कीटपालन वर्ष	प्रजाति	ब्रशिंग तिथि	पालित रो. मु.च. की संख्या	कोकून उत्पादन			
					सीड कोकून	नॉन सीड कोकून	कुल	कोसा उत्पादन प्रति रो.मु.च.
1	2017–18	ए.प्रॉयली	25.02.2016	250	17,511	850	18361	73.44
2	2018–19	ए.प्रॉयली	24.02.2018	446	8010	2510	10520	23.58
3	2019–20	ए.प्रॉयली	06.03.2019	250	4200	2300	6500	26.00
4	2020–21	–	–	–	–	–	–	–
5	2021–22	ए.प्रॉयली	27.02.2021	200	12195	1363	13558	67.79

निष्कर्ष

चूँकि पहाडों में विभिन्न ऊँचाइयों पर मार्च से नबम्बर माह के मध्य अलग तापमान पाया जाता है। जलवायु एवं तापमान के अनुसार जिस ऊँचाई पर ओक तसर खाद्य पौधों पर कोंपलें आनी प्रारम्भ होती हैं उस ऊँचाई पर खाद्य पौधों की पत्तियों का दोहन कर कीटपालन कार्य किया जाता है। जिससे तीनों ऊँचाई पर निवास करने वाले ओक तसर कीटपालकों को कीटपालन कार्य करने का मौका मिल जाता है। निम्न ऊँचाई पर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध लोकल बाँज (*क्वेरकस ल्यूकोटाईकाफोरा*) तथा क्वै. सेरेटा (मणिपुरी बाँज) पर फरवरी के अन्तिम अथवा मार्च के पहले सप्ताह मे तापमान बढ़ने से कोंपलें आनी प्रारम्भ हो जाती हैं जिनका उपयोग कर पूर्व वसंत कीटपालन किया जाता हैं। पूर्व वसंत कीटपालन से कोसों की कटाई 15 से 20 अप्रैल तक पूर्ण हो जाने से कीटपालन से प्राप्त बीज कोसों का बीजागार कर 15 से 30 मई के मध्य कीटाण्ड तैयार किये जाने से उच्च ऊँचाई के वाणिज्यिक कीटपालन हेतु कीटाण्ड आपूर्ति मे अतिरिक्त सहायता मिलती है। सामान्यतः उच्च ऊँचाई वाणिज्यिक कीटपालन हेतु संरक्षित बीज कोसों के बीजागार से उत्पादित कीटाण्डों की आपूर्ति की जाती है। पूर्व वसंत कीटपालन के समय रोग संक्रमण की सम्भावना भी कम रहती है। कीटपालन से उत्पादित बीज कोसों को सीधे बीजागार मे कीटाण्ड उत्पादन हेतु उपचारित किया जा सकता है। संरक्षण क्षति भी कम रहती है तथा कीटाण डों का उत्पादन भी सही रूप मे हो जाता है।

निम्न ऊँचाई पर कीटपालन हेतु उपयुक्त स्थानों पर प्राकृतिक अथवा वाणिज्यिक रूप से स्थानीय बाँज (*क्वेरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*) तथा मणिपुरी बाँज (*क्वेरकस सेरेटा*) उपलब्ध नहीं होने के कारण अधिक मात्रा में पूर्व वसंत कीटपालन किया जाना सम्भव नहीं होता है। ओक तसर उत्पादित इन राज्यों में निम्न ऊँचाई पर मणिपुरी बाँज (*क्वेरकस सेरेटा*) के वाणिज्यिक पौधारोपण की आवश्यकता है। यदि वर्तमान में निम्न ऊँचाई पर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध स्थानीय बाँज (*क्वेरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*) तथा मणिपुरी बाँज (क्वेरकस सेरेटा) पर वन विभाग से अनुमति लेकर पत्तियों का दोहन कर ओक तसर से जुड़ी संस्थाओं द्वारा वैज्ञानिक तरीके से उचित समय पर कीटपालन कराया जा सकता है एवं बीजागार कर तैयार कीटाण्ड समय पर किसानों को आपूर्ति किया जा सकता है और ओक तसर रेशम के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।

❐❐❐

रचनाकारों के लिए सूचना

रेशमवाणी के सभी सम्मानित रचनाकारों से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाओं के साथ अपना बैंक विवरण यथा-बैंक का नाम, खाता संख्या, IFSC कोड एवं मोबाइल नम्बर भी भेजें ताकि रचनाओं के मानदेय का भुगतान केवल ऑन-लाइन माध्यम से उन्हें समय पर किया जा सके। साथ ही रचना के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ भी भेजें।

रचनाकारों से अनुरोध है कि रचनाएँ साफ-साफ हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टंकित रूप में भेजें तथा यदि संभव हो तो रचना की साफ्ट प्रति ईमेल (ctrtihindi@gmail.com) के माध्यम से भेजें। रचनाएँ यथा समय रेशमवाणी में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा तथापि अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाएंगी।

संपादक

सिफारिश बम

राजेन्द्र परदेसी*

व्यंग्य

पढ़ाई समाप्त करते ही मेरे सामने मुसीबतों का पहाड़ गिर पड़ेगा, काश ! यह जानता तो शायद हर वर्ष परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए भागीरथ प्रयास न करता लेकिन अब तो सिर ओखल में गिर ही पड़ा है, तो मूसल भी सहना ही पड़ेगा। आज मैं करूँ भी तो क्या, क्योंकि आज के परमाणु युग में, जहाँ हमारे प्रतिद्वंदी बड़े–बड़े सिफारिशी बमों का प्रयोग करते हैं, वहाँ मेरे जैसा प्राणी मात्र कागज और कलम की सहायता से विजय पाने की कामना करता है। परिणाम वही निकलता है, जो अब तक निकलता आया है। मैं हर बार अपनी बेकारी दूर करने में असफल रहता हूँ। बार–बार की मेरी इस असफलता को देखकर एक दिन हमारे एक शुभचिन्तक को दया आ गयी। बोले तुम जिन्दगी भर आवेदन–पत्र और परीक्षा शुल्क भेजते रहोगे, फिर भी एम.ए. पास करने के पश्चात् लिपिक कौन कहे, चपरासी की जगह हाथ नहीं आयेगी। मित्र की बात सुनकर जब मैंने उनसे समाधान पूछा, तो बोले कोई सिफारिश ढूँढ़ो तो काम बनेगा। आजकल बिना सिफारिश के कुछ होने को नहीं। आखिर, अपने मित्र के निर्देशन में अपने ही शहर के सदाबहार नेता श्री चरणदास जी के दरबार में एक दिन सुबह–ही–सुबह उपस्थित हो गया। नेताजी किस दल के उत्पाद हैं, इसे मैं क्या, मेरे पुरखे भी नहीं बता सकते थे। लेकिन, जहाँ तक मुझे उनके दरबार के लोगों से जानकारी मिली, उसका आशय यह था कि आप इनका उपयोग जहाँ भी चाहें, जिस समय भी चाहें कर सकते हैं क्योंकि यह गिरगिट की तरह रंग बदलने में महारथ हासिल कर चुके हैं। अंधे को क्या चाहिए–एक लाठी का सहारा। मेरे दादा जी भी कहा करते थे–बेटा, समय पड़ने पर गदहा को भी बाप बनाना पड़ता है, तभी काम बनता है। दादाजी की इसी सीख को क्रियान्वित किया। तुरन्त झुककर नेताजी का चरण स्पर्श किया। प्रभाव होना था, हुआ। चरणदास जी ने उठाकर अपने बगल में बैठाया और मेरी समस्या को सुनकर सहानुभूति दर्शाते हुए बोले–बेटा तुम्हारा काम यहाँ से तो होगा नहीं, राजधानी चलना पड़ेगा। यहाँ किसी मंत्री से कह दूँगा। वह आदेश कर देंगे। तुम्हें नौकरी मिल जायेगी।

मैंने सोचा, शुभ काम में देरी क्यों ? तुरन्त राजधानी चलने का कार्यक्रम बना डाला। पिताश्री को पहली तारीख को वेतन मिला तो पैसे लेकर दूसरी तारीख को नेताजी के साथ राजधानी के लिए प्रस्थान कर दिया। गाड़ी में भीड़ बहुत थी। कहीं कोई जगह खाली नहीं थी। किसी तरह एक सज्जन से अनुरोध करके नेताजी को बैठाया और स्वयं अपने साथ उनका सामान लेकर किसी तरह सीधा–टेढ़ा खड़ा हो गया। राजधानी पहुँचने के पश्चात् नेताजी के सुझाव पर एक होटल में कैम्प डाला और उन्हीं के आदेशानुसार तुरन्त कागज–कलम कर एक आवेदन–पत्र

तैयार कर डाला। पत्र किसके नाम सम्बोधित किया जायेगा, इसका निर्णय नेताजी के ऊपर था, इसलिए स्थान रिक्त छोड़ दिया। उन्होंने कहा भी था, जो मिल जायेगा, उसी का नाम भर दूँगा। मुझे क्या एतराज था। नेताजी और आवेदन–पत्र के साथ सचिवालय पहुँच गया। वहाँ नेताजी पहले कई घंटे इधर–उधर घूमकर व्यूह रचते रहे। अंत में एक मंत्रीजी के कमरे में प्रवेश कर गये। मैं बाहर खड़ा उनकी प्रतीक्षा करता रहा। लगभग दो घंटे बाद नेताजी प्रसन्न मुद्रा में प्रकट हुए। उनकी मुद्रा देखकर पहले तो समझा कि किला पतह हो गया, लेकिन बाद में ज्ञात हुआ कि पूर्ण सफलता नहीं मिली, हाँ, मंत्रीजी से आवेदन–पत्र पर इतना लिखवा लिया कि इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करें। कागज अब मंत्रीजी के कार्यालय द्वारा ही निदेशक महोदय के पास जाना था। इस कारण वह मुझे साथ लेकर सचिवालय से बाहर आये। इतनी सफलता देखकर मैंने सोचा–चलो दुर्ग का फाटक खुल ही गया है।

विजय आज नहीं तो कल मिलेगी ही। नियुक्ति–पत्र की प्रतीक्षा में एक महीने तक मौन बैठा रहा। जब खुशियाँ मातम में बदलने लगी तो पुनः नेताजी के दरबार में हाजिर हुआ और उनके सम्मुख अपने हृदय की वेदना स्पष्ट की, तो नेताजी ने तुरन्त प्रस्ताव रख दिया कि एकबार फिर राजधानी चलो, देखूँ क्या बात है।

नेताजी के आदेश पर पिता जी को फिरा कष्ट दिया और राजधानी पहुँच कर फिर उन्हीं क्रियाओं की पुनरावृत्ति कर डाली। परिणाम यह निकला कि इस बार आवेदन–पत्र पर यह टिप्पणी टंकित कर दी गई कि – अगर स्थान रिक्त हो तो इन्हें नियमानुसार कार्य करने का अवसर दिया जाए और नीचे मंत्रीजी के हस्ताक्षर। इस बार मैंने निश्चय किया कि स्वयं ही विजय पताका लेकर आगे बढ़ूँगा। इस कारण, टिप्पणी टंकित आवेदन–पत्र के साथ अधिकारी के पास पहुँचा। पर अधिकारी महोदय पुराने खिलाड़ी थे। ऐसी भाषा वह खूब समझते थे। इसी कारण मेरे हाथ से पत्र लेकर बोले–

*136–मयूर रेजीडेंसी, फरीदी नगर, लखनऊ–226015

इस समय तो कोई स्थान रिक्त नहीं है। हाँ, शीघ्र ही रिक्त होने वाला है। तब आपको अवश्य ही बुलाया जायेगा। पर ढाक के तीन पात की तरह मैं भी जहाँ था, वहीं पड़ा रहा, क्योंकि उनका शीघ्र मेरे लिए बहुत दीर्घ हो गया था। इस कारण सिर पर हाथ रखकर चिन्तामग्न था कि मेरे एक मित्र घर पर उपस्थित हुए और मुझे ही इसके लिए जिम्मेदार ठहराया। उनकी दृष्टि में मैं जिन नेताजी का सहारा ले रहा था, उनकी औकात कुछ भी नहीं है। मेरे मित्र के शब्दों में ही–'अब पउआ का जमाना गया, अब किलो का जमाना है'। वैकसे मैं आपको स्पष्ट कर दूँ, यह पउआ या किलो साग–सब्जी तौलने की इकाई नहीं, बल्कि सिफारिशी–बम की क्षमता की इकाई है, जैसा कि मेरे मित्रों ने स्पष्ट किया है। हाँ, अभी–अभी ताजा समाचार के अनुसार हमारे एक शुभचिन्तक ने मुझे बताया है कि अगर आपको सिफारिश लगानी ही है तो क्विंटल का प्रयोग करें। अब पउआ या किलो का जमाना गया। इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि कृपया अगर किसी के पास इस क्षमता का सिफारिश–बम हो तो हमें सूचित करें। हम हर शर्त पर आपसे संधि करने को तैयार हैं, क्योंकि अवसर आने पर जब अमरीका और चीन समझौता कर सकते हैं तो हम–आप क्यों नहीं ? विश्वास है, आप मेरे प्रस्ताव पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे और मेरे लिए किसी ऑफिस में एक कुर्सी सुरक्षित हो सकेगी, भले ही गद्दी वाली न हों ?

❐❐❐

... पृष्ठ 6 का शेष

शोलबर्ग, एडविन ग्रीव्ज, एफ ए की, एफ एस ग्रॉउज, एम केप्शन, एम टी आदम, एस डब्ल्यू फैलन, कर्क पैट्रिक, कर्नल डब्ल्यू आर एम होलरॉयड, कैप्टन रोबक, कैप्टन विलियम प्राइस, कैमिलो तेगलीऑब्ने, कोशकार, गिल क्राइस्ट, जूल ब्लॉक, जे जेटलो प्रोखनो, जे टी प्लॉट्स, जे डी बेट, जेम्स आर बैलेंटाइन, जॉन ए ग्रियर्सन, जॉन क्रिश्चियन, जॉन चेम्बरलेन, जॉन टी प्लॉट्स, जॉन डाउसन एमआर ए एस, जॉन पार्सन, जॉन पफर्गुसन, जॉन बार्थविक गिलक्राइस्ट, जॉन बीम्स, जॉन शेक्सपीयर, जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, जॉर्ज एस ए रेमकिंग, जॉर्ज हाडले, जोसेफ हेलिओडोर गार्सा द तासी, जोहन जोशुआ केटलेर, डंकन पफोर्ब्स, डॉ ज म दिम शीट्स, डॉ रोनॉल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर, डॉ अलेक्सेई पेत्रोविच बरात्रिकोव, डॉ एलपी टेसिटरी, डॉ जे एन कारपेंटर, डॉ जे एम मैकपफी, डॉ डगलस पी हिल, डॉ मोनियर विलियम्स, थॉमस रोबक, द रोजेरिओ, पादरी एडविन ग्रीपफस, पादरी टी एवंस, पीटर ब्रेटन, पेजजोनी विकारियो, पॉल व्हले, फर्ग्युसन, फड्रिक फॉन श्लीगल, फांसिसस एम तुरोनेसिस, फेडरिक पिंकाट, बेंजामिन शुल्ट्ज, मेजर एफ आर एच चौपमेंन, रूसो, रेवरेंड अहमद शाह, रेवरेंड एजी एटकिंस, रेवरेंड टी ग्राहम बेली, रोबक, विलियम एंड्रीय, विलियम एथॉरिंगटन, विलियम प्राइस, विलियम बटलर येट्स, विलियम हंटर, सर मोनियर विलियम्स, सेवास्तिवा रोदल्फ डालगादो, सैंडफोर्ड ओरनोट, हेनरी थॉमस कोलब्रुक, हेनरी माय इलियट, हेरा सिम लेबडेपफ, हैरिस हेनरी आदि विद्वानों ने हिन्दी के लिए अपने योगदान दिए हैं। इक्कीसवीं सदी में हिन्दी के ईसाई धर्मावलम्बी विद्वान डॉ. अलेक्जेंडर सेंकेविच, डॉ. आई बंघा, डॉ. ई तुर्बियानी, डॉ. उलरिक स्टोर्के, डॉ. एंड्रीज शूटलर, डॉ. एडमोर जे बेबिनियु, डॉ. एण्डरीस बॉक रैमिग, डॉ. एम आर एल्विन, डॉ. एलिजाबेथ असा होल, डॉ. एलिस डेविसन, डॉ. एवगेनी पेत्रोविच चेलीशेव, डॉ. ओडोलेन समैक्ल, डॉ. केनेथ ई ब्रायंट, डॉ. केरीन शोमर, डॉ. कैथरीन जी हेनसन, डॉ. कैथलीन अर्नडल, डॉ. कोबर्न, डॉ. कोल्वो कोवाचेव, डॉ. क्लॉउस पीटर जॉलर, डॉ. गैब्रिएला निक एलीवा, डॉ. ग्रुने बॉम जेसन ओ, डॉ. जूडिथ बेनाडे, डॉ. जे पैट्रिक ओलोवेल्ले, डॉ. जेम्स डब्ल्यू गैर, डॉ. जेम्स लोष्टपफेल्ड, डॉ. जेरोस्लाव स्ट्रैंड, डॉ. जॉन जे गुम्प्रज, डॉ. जॉन पीटरसन, डॉ. जॉन ब्रैडन लोवे, डॉ. जॉन स्टेटन हॉली, डॉ. टिमोथी लुबिन, डॉ. टीम वण्डर अवयर्ड, डॉ. डगलस आर्नोल्ड जॉस, डॉ. डब्ल्यू एम क्लेवर्त, डॉ. डेजी रॉकवेल, डॉ. डेनियल गोल्ड, डॉ. डेविड एन लोरेन्जें, डॉ. डेविड एस मैंगीयर, डॉ. डेविड सी स्वैन, डॉ. तातियाना रुतकिवस्का, डॉ. तैयो दमिस्टेखत, डॉ. थियोडोर रिकोर्डी जूनियर, डॉ. थॉमस बी, डॉ. दानुता स्आसिक, डॉ. निकोल बलबीर, डॉ. निकोलॉय जरबेया, डॉ. पीटर जी पफीड लैंडर, डॉ. पॉल अरनी, डॉ. प्रोफेसर हेन्स हेनरिक हॉक, डॉ. फिन थीसन, डॉ. फिलिप लुत्जेन डर्फ, डॉ. फ्रांसिस प्रिटचेत, डॉ. पफांसेस्का ओरसिनी, डॉ. फेंकलिन सी सौथवर्थ, डॉ. बेथली साइमन, डॉ. बैरतील टिक्कनें,डॉ. बोरिस एम वोल्खोंसकी, डॉ. ब्लादिमीर मिलनर, डॉ. मारजेना मैगनुसजेवस्का, डॉ. मारिओला ओफ्रेडी, डॉ. मारिया क्षेशतापेफ ब्रिसकी, डॉ. मारिया नेज्यिशी, डॉ. मार्गोत गात्सलापफ हेलजिंग, डॉ. मैगी रोंकीन, डॉ. मोनिका बाहम टैटलबाख, डॉ. रिचर्ड बार्ज, डॉ. रिचर्ड सरन, डॉ. रूपरेख्त कार्ल्स यूनिवर्सिटॉट हाइडेलबर्ग, डॉ. रूपर्ट स्नेल, डॉ. रेबेका जे मैनरिंग, डॉ. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर, डॉ. रोबर्ट ह्युक स्टड्स, डॉ. लिंडा हेस, डॉ. लिनी हेनसन, डॉ. लूसी रोजेन्स्टीन, डॉ. लोथार लुत्से, डॉ. विलियम चार्ल्स मैकड्युगल, डॉ. वी एन फिलिप, डॉ. वेंडी सिंगर, डॉ. शलोट वोदवील, डॉ. शॉकर जी एच, डॉ. सिस्टर क्लेमेंट मेरी, डॉ. सुसन एस वैदली, डॉ. स्टीवेन सपुफले, डॉ. स्टेफनो पियानो, डॉ. हिडी पॉवेल, डॉ. हेर्मोन एच वॉन ओलफन, डॉ. हेलमुत नस्पिटल आदि विद्वानों ने हिन्दी के लिए अपने योगदान दिए हैं।

❐❐❐

संस्थान की गतिविधियाँ

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान रेशम ग्राम हुटार में स्वच्छता के बारे में बताते संस्थान के वैज्ञानिक।

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान राज अस्पताल, राँची द्वारा लगाया गया स्वास्थ्य शिविर का एक दृश्य।

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान संस्थान के पीजीडीएस प्रशिक्षणार्थियों द्वारा स्लाइड के माध्यम से कार्यक्रम प्रस्तुति का एक दृश्य।

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान पोस्टर/बैनर का अवलोकन करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण एवं अन्य।

सक्षमता वृद्धि कार्यक्रम के तहत रेशम उत्पादन में प्रौद्योगिकी उन्नयन एवं विस्तार दृष्टिकोण पर पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी।

प्रशासनिक कार्यों पर व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने हेतु सक्षमता वृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान भ्रमण पर आये खादी ग्रामोद्योग आयोग, एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार के माननीय सदस्य (पूर्वी क्षेत्र) श्री मनोज कुमार सिंह का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

खादी ग्रामोद्योग आयोग, एमएसएमई मंत्रालय, भारत सरकार के माननीय सदस्य (पूर्वी क्षेत्र) श्री मनोज कुमार सिंह द्वारा संस्थान के संग्रहालय का अवलोकन का एक दृश्य।

लाह व गोंद संस्थान, नामकुम, राँची में आयोजित किसान मेला में संस्थान द्वारा लगाये गये स्टॉल का अवलोकन करते झारखण्ड के राज्यपाल माननीय श्री रमेश बेस।

लाह व गोंद संस्थान, नामकुम, राँची में आयोजित किसान मेला में संस्थान द्वारा लगाये गये स्टॉल पर तसर रेशम के बारे में जानकारी प्राप्त करती महिलाएँ।

संस्थान भ्रमण पर आयीं तसर किसानों को तसर खाद्य पौधों की नर्सरी के बारे में जानकारी देते संस्थान के वैज्ञानिक।

संस्थान भ्रमण पर आयीं तसर किसानों को धागाकरण व कताई के बारे में जानकारी देते संस्थान के कर्मचारी।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग के बारे में टिप्स देते ट्रेनर।

संस्थान में राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग करते संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी।

संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशाला का एक दृश्य।

संस्थान में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का एक दृश्य ।

संस्थान में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के मुख्य समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एड़चोरो पंचायत की मुखिया श्रीमती मरियम तिग्गा के साथ निदेशक डॉ.के. सत्यनारायण एवं अन्य।

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान रोड शो का एक दृश्य।

मीडिया सुर्खियाँ

विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन पर जोर दिया
केंद्रीय तसर अनुसंधान में आजादी का अमृत महोत्सव आयोजित
जैव प्रौद्योगिकी के बारे में अब आम धारणा बदल रही है : एन. कृष्ण कुमार
आकांक्षी जिलों के तसर कीटपालकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित
तसर अनुसंधान संस्थान में स्वच्छता जागरूकता पर परिचर्चा आयोजित
केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान का भ्रमण
अनुसंधान सलाहकार समिति की 50वीं बैठक हुई
नगड़ी स्थित केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में अनुसंधान सलाहकार समिति की 50वीं बैठक आयोजित
केंद्रीय तसर अनुसंधान संस्थान ने तसर को बढ़ावा देने के लिए सेमिनार आयोजित
स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें
सचिव उपेंद्र प्रसाद ने केंद्रीय तसर अनुसंधान प्रयोगशाला का किया भ्रमण
बायोटेक किसान परियोजना के अंतर्गत कीटपालकों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया
स्वच्छता पखवाड़ा : लोगों को किया गया जागरूक
तसर को बढ़ावा देने के लिए मनरेगा अभिसरण का आयोजन किया गया
लोग स्वच्छता को जीवन का लक्ष्य बनाएं : अशोक
किसानों के लिए उपयोगी परियोजना बनाएं : रजित
रेशम का उत्पादन बढ़ाने पर किया गया विमर्श
किसान हित में परियोजना बनायें : रंजन
केंद्रीय तसर अनुसंधान केंद्र में 13 परियोजनाओं की समीक्षा
'राज्य में तसर रेशम का उत्पादन बढ़ाना ही लक्ष्य'
देवघर के संस्थान से एमओयू

लतीफ बाबू

नवीन कुमार सिन्हा*

कहानी

सलेमपुर और उसके आस–पास के गाँवों के बच्चों के लिए एक विद्यालय था जो सलेमपुर में था। इस विद्यालय में केवल माध्यमिक स्तर तक ही पढ़ाई की व्यवस्था थी। उच्च विद्यालय की पढ़ाई के लिए बच्चों को लखनपुर जाना पड़ता था। सातवीं कक्षा का परीक्षा फल एक–दो दिनों में ही घोषित होने वाला था। छात्रों की दिलों की धड़कन तेज होने लगी थी। वैसे तो बच्चे इसे लेकर उत्साहित थे मगर जिन्होंने पत्रों के उत्तर संतोषजनक ढंग से नहीं दिए थे वे डरे–सहमे हुए थे। जैसा कि हम सभी जानते और मानते हैं कि बचपन के दिनों जैसी बेफिक्री जीवन में फिर कभी नहीं आती। उन दिनों में न खाने की चिन्ता न काम की चिन्ता न बोझ, न जाति का भेद और ना ही धर्म बंधन की परवाह होती है। सभी आपस में ऐसे हिलमिल कर रहते हैं जैसे सभी एक ही माँ–बाप के बच्चे हों। ऐसा आलम तो फिर हमारे जीवन में सपना ही हो जाता है। जैसे–जैसे हम बड़े होने लगते हैं। समाज से स्वतः हम बहुत कुछ सीखने लगते हैं। एक ही वर्ग में पढ़ने के कारण कुछ बच्चे आपस में कुछ ज्यादा ही घुल–मिल जाते हैं और समय–कुसमय एक–दूसरे के यहाँ चले जाते हैं; खेलते–कूदते हैं; धमाचौकड़ी मचाते हैं और एक–दूसरे के घर बेझिझक होकर छीना–झपटी कर खाना भी खाते हैं। कुछ ऐसा ही हाल अजय श्री, नंद बिहारी, अरुण कुमार द्विवेदी और मुहम्मद इदरीस का था। परीक्षा का परिणाम घोषित होने के दिन सभी पचपन बच्चे विद्यालय में उपस्थित थे। वर्ग शिक्षक श्री रामस्वरूप सिंह ने बताया कि तुममें से पैंतालीस बच्चे उत्तीर्ण घोषित किए गए हैं। उन्होंने उन बच्चों को सांत्वना देते हुए जो सफल नहीं हुए थे कहा, तुम लोग थोड़ी मेहनत और करोगे तो अगले वर्ष निश्चय ही सफलीभूत होंगे। कुल उत्तीर्ण छात्रों में अजय, नंद, अरुण और इदरीस भी थे। वे खूब प्रसन्न थे। कूदते–खेलते अपना–अपना परीक्षा फल लेकर वे अपने–अपने घरों को पहुँचे। इदरीस तो अपने माता–पिता के साथ सलेमपुर में ही रहता था; उसे रास्ते में छोड़ते बाकी तीनों अपने गाँव रहुईया के लिए चल पड़े। कुछ ऐसे भी छात्र थे जो पारिवारिक मजबूरी के कारण आगे की पढ़ाई करने में असमर्थ थे। मगर इन चारों के माता–पिता ने इन्हें हाई स्कूल की शिक्षा के लिए लखनपुर में नामांकन करवा दिया। लखनपुर रहुईया से दो कोस की दूरी पर था और सलेमपुर से रहुईया होते हुए इदरीस को कुछ और दूरी तय करनी पड़ती थी। कभी–कभी तो गप्पें मारते हुए चारों सलेमपुर के नजदीक भी पहुँच जाते थे फिर बाकी तीन अपने गाँव वापस आते थे। कुछ लोगों को इनकी मित्रता से जलन होने लगी थी, मगर चारों इससे बेपरवाह थे। कुछ और बड़े होने पर ये समझने लगे कि इदरीस मुस्लिम धर्मावलम्बी है और बाकी के तीन हिन्दू धर्म को मानने वाले, मगर इससे इनके

आपसी मेल–जोल पर कोई असर नहीं पड़ा था, हाँ पढ़ाई के बोझ के कारण एक–दूसरे के घर आना–जाना बहुत कम हो गया था। ये एक–दूसरे के लाये भोजन मध्याह्न में मिल–बाँटकर ही खाते थे मगर नवमीं कक्षा तक आते–आते प्रायः यह भी छूट सा गया। खसिया, भूंजा, मूँगफली इत्यादि कोई भी खरीदता तो सभी एक साथ ही खाते थे। असल में अब इन्होंने मध्याह्न भोजन लाना भी बंद कर दिया था और माता–पिता से जो पैसे मिलते उससे विद्यालय के पास ही कुछ खरीद कर खा लिया करते थे ये चारों। पर्व–त्योहारों में भी अधिकतर इदरीस ही इन तीनों के पास आ जाता था। द्विवेदी को याद है कि एक बार वह ईद के समय इदरीस के घर अजय और नंद के साथ गया था और पूरी–सेवाइयाँ साथ–साथ ही खाया था। इस बात को भी आठ–दस वर्ष हो गये। अजय तो अक्सर ईद की बधाई देने अकेले ही इदरीस के घर चला जाता था मगर इधर नंद का भी उसके घर जाना बहुत हद तक कम हो गया था। विद्यालय में ही अधिकतर मुबारकवादी का फर्ज ईद के बाद वह निभाता था।

एकबार हफ्ता बीत गया; इदरीस विद्यालय नहीं आया। तीनों मित्रों को चिंता होने लगी और तय हुआ कि अगले दिन वे साथ–साथ इदरीस के यहाँ उसके हाल–चाल लेने जायेंगे। जब सलेमपुर की सीमा के पास तीनों पहुँचे तो सामने से गाड़ी लेकर इदरीस के पिता मु. इजराईल चले आ रहे थे। इन्हें देखकर उन्होंने गाड़ी रोक दी। तीनों ने अभिवादन कर पूछा कैसे हैं आप लोग चाचा ? इधर करीब हफ्ता भर हो गया इदरीस भी विद्यालय नहीं आया, सब ठीक तो है ? इजराईल कहने लगे–अरे बच्चों तुम लोगों से तो वर्षों बाद आज मुलाकात हुई, उम्मीद है तुम लोग सभी अच्छे से हो। इदरीस बीमार पड़ गया था बेटा; उसे बुखार हो गया था। मगर अब पहले से बेहतर है। संयोग से उसकी माँ भी नहीं है; वह और इदरीस की बहन, इदरीस के ननीहाल गये हुए हैं। तुम लोग तो जानते ही हो यही गाड़ी हमारा घर चलाती है और इदरीस के लिए खाना वगैरह बनाकर ही मुझे निकलना पड़ता है। आज जरा देर हो गई मगर अच्छा

*अंजली अपार्टमेंट, हातमा, काँके, राँची

हुआ तुम लोग से मुलाकात हो गई। जाओ इदरीस घर में ही है; तुम लोगों से मिलकर बहुत खुश होगा। वे तीनों अभिवादन कर इदरीस के घर की ओर बढ़ चले। दरवाजे पर अजय ने दस्तक दी, अंदर से इदरीस की आवाज आई, कौन है ? अजय ने ही उत्तर दिया – अरे हम हैं; और कौन ? दरवाजा तो खोलो। अरे अजय ? कहते हुए उसने दरवाजा खोला तो सामने नंद और अरुण भी खड़े नजर आये। वह बहुत खुश हुआ और बोला, आओ भाई, अंदर आओ। आपस में कुशल क्षेम का आदान–प्रदान हुआ। इदरीस अब ठीक था। सिर्फ थोड़ी कमजोरी रह गयी थी। कुछ देर बाद बातचीत हुई तो तीनों यह कहकर उठने लगे कि भाई तुम आराम करो; हम फिर आयेंगे। इदरीस बोला – अजय तो कभी–कभी आ भी जाता है पर नंद तुम और अरुण तो जाने कितने वर्षों बाद हमारे घर आये हो। तुम लोग यूँ ही चले जाओ भला ऐसा कैसे हो सकता है ? मैं नाश्ता तो नहीं करा सकता क्योंकि मुझे बनाना ही नहीं आता मगर तुम लोग यह जानकर ताज्जुब करोगे कि मैं माशाअल्लाह ऐसी चाय बनाने लगा कि तुम्हें तुरंत दूसरे प्याले की तलब होने लगेगी। इन लोगों के मना करने पर भी वह चाय बनाने किचन में चला गया। अरुण कुछ परेशान सा हो गया–बोला बचपन की बात कुछ और थी यार, अगर किसी को पता चल गया कि मैंने इदरीस के घर आज चाय पी है तो बखेड़ा खड़ा हो जायेगा। तुम लोग तो जानते हो मेरे पिता जी पुरोहित हैं और उनके साथ कभी–कभार मुझे भी पूजा सम्पन्न कराने को यजमानों के यहाँ जाना पड़ता है। अरुण उधेड़बुन में था कि नंद के दिमाग में एक ख्याल आया। वह वहीं से बोला–भाई इदरीस चाय केवल दो कप ही बनाना। क्यों ? इदरीस ने वहीं से पूछा; नंद ने ही जवाब दिया अरे आज मंगलवर है न ? तो क्या हुआ ? इदरीस ने वहीं से पुनः प्रश्न किया। नंद बोला–अरे यार अपना अरुण पंडित है न और प्रत्येक मंगलवार को उसका व्रत रहता है तो भला क्यों तुम उसका व्रत तुड़वाना चाहते हो ? इदरीस निरूत्तर था, कहा ठीक है अरुण के लिए फिर किसी और दिन चाय का कार्यक्रम रखेंगे। अब चाय की दो प्याली सामने थी। अजय चुस्की लेते हुए बोल उठा सचमुच कमाल की चाय तुमने बनाई है इदरीस, लाजवाब। नंद के मन में भी शंका उत्पन्न हो गई थी। उसने कहा इदरीस मैं चाय में चीनी ज्यादा लेता हूँ, एक चम्मच चीनी तो लेते आओ। चाय ठंडी हो जयेगी तब तक नंद, इदरीस ने कहा। कोई बात नहीं इदरीस, वैसे भी मैं चाय ठंडी ही पीता हूँ। मगर चीनी औरों से कुछ ज्यादा चाहिए मुझे। इदरीस चीनी लाने गया और इधर नंद से खिड़की से चाय बाहर उड़ेल दी। इदरीस जब चीनी लेकर आया तो आश्चर्य से भर गया जब उसने देखा कि नंद ने प्याला तो खाली कर दिया था। नंद ने कहा अरे, तुमको बेकार तकलीफ दी मैंने, वाकई चाय इतनी स्वादिष्ट थी कि मैं इसे एक घूँट में ही पूरा का पूरा सुड़क गया। तब क्या दूसरी बार चाय बनाकर लाऊँ। इदरीस के पूछने पर नंद ने जवाब दिया नहीं–नहीं, अरे फिर कभी पी लेंगे।

तीनों ये उलाहना देते हुए कि अरे इदरीस तुम बीमार थे तो खबर तो हमें भिजवाना चाहिए था; हम क्या इतने पराये हो गये ? अरे नहीं मैं इतना भी बीमार नहीं था भाई कि बेवजह तुम लोगों को परेशान करता। तीनों जब कुछ दूर निकल गये तो अजय ने कहा द्विवेदी आज तो नंद ने तुम्हें बचा लिया वर्ना तुम्हारा धर्म ही बिगड़ जाता और नंद मुझे तो पहले ही संशय था कि तुम्हारे मन में भी कुछ इसी तरह की दुविधा थी। अजय ने कहा खैर कोई बात नहीं; जिसके मन को जो आये वही करना उचित है। हम लोगों के बीच की बातें हमारे तक ही सीमित रहेगी। हाई स्कूल की पढ़ाई समाप्त हो चुकी थी। इदरीस और आगे की पढ़ाई नहीं कर सका जिसका एक कारण उसके परिवार की आर्थिक स्थिति भी थी। नंद, अरुण और अजय की पढ़ाई जारी रही। नंद तो अभियंता हो चुका था और एक कारखाना में काम करने लगा था। अरुण बी–कॉम की पढ़ाई पूरी करने के बाद लेखापाल के पद पर बहाल हो गया था और अजय एम. ए. (स्नातकोत्तर) करके व्याख्याता के पद पर नियुक्त हो गया था। इदरीस अपने पिता की सहायता गाँव में रहकर ही करने लगा। इदरीस का छोटा–सा व्यवसाय गाँव में ठीक–ठाक चल रहा था। कई वर्ष बीत गये। सभी मित्रों की व्यस्तता इतनी बढ़ गयी कि एक–दूसरे का हाल–चाल जानने में भी कई माह बीत जाते थे। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ सभी के कंधों पर आ गई थीं। किसी खास अवसर पर अपने–अपने घर कभी कोई आता तो कभी कोई। शादी, मुंडन आदि के अवसर पर ही आना होता; त्योहारों में अब मिलना–जुलना कहाँ हो पाता था ? सभी व्यवहार कुशल थे और इनकी जीवन नैय्या धीरे–धीरे आगे बढ़ती जा रही थी। नंद बिहारी के कारखानों में कई तरह के कार्य होते थे यथा–बेल्डिंग, स्ट्रक्चरल वर्क, छोटे–छोटे ढलाई का काम आदि। आस–पास कोयला के कई खदान होने की वजह से यहाँ अगर, ट्रीगर, हॉलेज, स्लसर, मशीनीकरण आदि का कार्यादेश भी लिया जाता था। कारखाने के मालिक जैन थे और इनका व्यवहार सब कर्मियों से बहुत अच्छा और मृदु था। सभी एक परिवार की तरह कार्य करते और एक–दूसरे का ख्याल भी रखा करते थे। नंद से वरिष्ठ एक अभियंता थे केवल कृष्ण लठ, वे पंजाब से थे मगर उनकी प्रकृति कुछ कड़क स्वभाव वाली थी। नंद बिहारी से सभी ज्यादा घुले–मिले रहते थे। स्टोर कीपर बाबू सोन बुजुर्ग थे। उनकी हिन्दी बंगाली भाषा–भाषी वाली थी। एक हरे कृष्ण श्रीवास्तव थे जो लेखा का कार्य देखा करते थे। ये

भी मीठे स्वभाव के बुजुर्ग व्यक्ति थे। बढ़ई राम प्रसाद, लेथमैन कृपाल सिंह, वेल्डर जोसेफ कुजूर, चार्जहैण्ड महम्मद सुबेदिन, फोरमैन लतीफ मिया और कई स्कील्ड मजदूरों की जमात खूब मन लगाकर सभी अपना–अपना कार्य करते। यदि कार्यादेश समय से पहले पूरा कर लिया जाता तो पेमेंट भी पहले मिल जाता था। लाभांश का कुछ भाग जैन साहब मजदूरों आदि में भी बाँट दिया करते थे। कभी समोसा–मिठाई, कभी छुट्टी के दिन सामूहिक भोज तो कभी सभी को कुछ नकद राशि मिल जाती थी। कारखाना दिनों–दिन उन्नति कर रहा था। टेंडर में हमेशा अनुमानित खर्च से 30–40% ज्यादा खर्च दिखा कर भरा जाता और चूँकि कार्य बढ़िया और समय पर पूरा करके दिया जाता तो साख स्वाभाविक है बढ़ती जा रही थी और आमदनी भी। अब तो वर्षांत में कर्मियों को अच्छा बोनस भी मिलने लगा था। कारखाने में काम निकलवाने में लठ साहब नंद से ही सहायता लेते थे। और कर्मी भी अपनी कठिनाई नंद को ही बताया करते थे। नंद बिहारी को दोनों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी का काम करना पड़ता था।

इधर तीन–चार दिनों से लतीफ बाबू (नंद इन्हें लतीफ मियां न कहकर लतीफ बाबू कहकर ही बात करता था) कारखाने में नहीं आये। सुबेदिन उनका दूर का निश्तेदार था, नंद ने सुबेदिन से पूछा–जैन साहब ने लतीफ बाबू को कहीं किसी काम से तो नहीं भेजा है ? उन्हें तीन–चार दिनों से मैंने देखा नहीं। सुबेदिन ने कहा–नहीं बिहारी साहब (कारखाने के सभी लोग नंद को बिहारी साहब कहा करते थे); लतीफ मियां की तबियत इधर कुछ दिन से नासाज है; शायद दो–चार रोज बाद वे जब ठीक हो जायेंगे तब आयेंगे।

नंद ने सोचा वह तो लतीफ बाबू के घर के पास वाली सड़क से ही रोज कारखाना जाता है तो क्यों नहीं कल जरा पहले तैयार होकर वह घर से निकले ताकि उन्हें देखते हुए कारखाना पहुँचे। लतीफ बाबू काम को अच्छी तरह समझते थे और किसी भी कामगार को यदि कोई दिक्कत पेश आती तो वे उसे अच्छी तरह समझाते और यदि फिर भी समझ न पाता तो स्वयं करके बताते। लाठ साहब से लतीफ बाबू की जरा भी नहीं पटती थी मगर नंद बिहारी की वे बहुत इज्जत करते थे और नंद भी लतीफ बाबू की इज्जत करते थे और उनकी समझ की तारीफ करते थे। कारखाने के मालिक को सब पता था और काम किससे और कैसे निकालना है वह बखूबी जानते थे। लतीफ बाबू के बीमार पड़ जाने से नंद पर ज्यादा बोझ कार्यादेश समय से पूरा करने का, तो वह कुछ ज्यादा समय तक कारखाने में रूककर अपनी जिम्मेदारी निभाया करता था।

नंद अगले दिन जरा जल्दी तैयार होकर घर से करखाना जाने को निकल गया और सुबेदिन के बताए पते पर पहुँच कर पूछताछ करने लगा। पूछते हुए वह लतीफ बाबू के घर के दरवाजे पर पहुँचा और दस्तक दी। इस पूछताछ में उसके दस–पन्द्रह मिनट निकल गये थोड़ी देर में दरवाजा एक मोहतरमा ने खोला और पूछा–आप कौन है ? किससे मिलना है ? नंद ने पूछा क्या यह लतीफ बाबू का मकान है ? अभी कुछ कहती कि भीतर से लतीफ बाबू की आवाज आई–कौन है बेगम ? नंद जब जान लिया कि दरवाजे पर खड़ी स्त्री लतीफ बाबू की पत्नी है तो उन्हें नमस्ते किया। नंद ने अपना नाम बताया और यह कि वह उसी कारखाने में काम करते हैं जिसमें उसके शौहर। स्त्री ने नंद को अंदर आने का इशारा किया। नंद ने देखा लतीफ बाबू पलंग पर लेटे थे। नंद को अपने पास देखकर वे बोल उठे, अरे बिहारी साहब ! आपने ख्वामख्वाह क्यों तकलीफ की ? मैं अब पहले से बहुत बेहतर हूँ। थोड़ी कमजोरी रह गई है जो दो–तीन रोज में चली जायेगी और मैं काम पर वापस आ जाऊँगा। डॉक्टर के कहे अनुसार दवा समय पर ले रहा रहा हूँ और उनके बताए अनुसार खाना–पीना भी कर रहा हूँ। नंद बोला सब भगवान की कृपा है। लतीफ बाबू बोल उठे अल्लाह की मेहरबानी तो है ही आप सबों की शुभेच्छा भी तो हमारे साथ है।

पाँच–दस मिनट बाद नंद उठने लगा–बोला–लतीफ बाबू आपको स्वस्थ देखकर बहुत तसल्ली हुई। मैं अब चलूँगा। ऐसे कैसे बिहारी साहब ? आप पहली बार हमारे गरीब खाने पर तशरीफ लाएँ हैं; बिना नाश्ता–पानी भला आपको हम कैसे जाने दे सकते हैं ? नंद ने कहा अरे मैं तो नाश्ता करके ही घर से निकला हूँ और ये देखिए दोपहर का टिफिन भी मेरे साथ है। नंद ये कहकर पुनः उठने को हुआ कि मैं कहीं भागा थोड़े ही जा रहा हूँ ? फिर कभी आऊँगा। मगर लतीफ बाबू भी इतनी आसानी से कहाँ छोड़ने वाले थे ? कहा ठीक है बिहारी साहब, मैं आपको रोकूँगा नहीं, मगर बिना एक प्याली चाय पिये तो जाने भी नहीं दूँगा। नंद को कई वर्ष पहले की घटना याद आ गई। इदरीस के घर में भी तो इसी वाकया से दो–चार होना पड़ा था; मगर यहाँ तो चाय के प्याले को खिड़की से बाहर उड़ेलना नामुमकिन था। नंद के चेहरे का भाव बता रहा था कि वे उधेड़बुन में था। लतीफ मियाँ इस स्थिति को तुरंत ताड़ गये। वे बोले बिहारी साहब यदि आप बुरा न माने तो मैं कुछ कहूँ ? हाँ–हाँ अरे आप भला ऐसी क्या बात कहेंगे जिसका मैं बुरा मानूँगा ? लतीफ बाबू ने बेझिझक कहा–देखिए बिहारी साहब, आप हिन्दू धर्म मानते हैं और मैं मुस्लिम धर्मावलम्बी हूँ। मैं आपकी झिझक/दुविधा अच्छी तरह समझता हूँ। मैं कतई ये नहीं चाहता कि मेरे यहाँ चाय पीने से आपके धर्म में कोई खलल आये। देखिए न बिहारी साहब, मेरी बेगम आपके सामने ही नलके पर चाय का पैन राख

से साफ कर रही है। पानी वही है जो आपके यहाँ भी पाईप से आता है। दूध भी ग्वाला अभी–अभी दे गया है और वह सभी घरों में उसी कैन से देता है। चीनी किराने की दुकान से खरीदी गई है और चाय–बिस्कुट का पैकेट भी जो हम सभी अपने किचन में रखते हैं। सिर्फ अंगीठी को बेगम ने जलाया और चाय बनाई जा रही है। एक बात और कप–प्लेट की सफाई खुद बेगम ने अपने हाथों से किया है। आपको कहाँ पता होगा कि हमारे पुरखे दिल्ली में रहते थे और वे दो–तीन पुश्त पहले आपकी तरह हिन्दू ही थे। हम अभी भी अपने पूर्वजों की बहुत सी बातें मानते हैं जैसे किचन में चप्पल–जूते पहनकर हम नहीं जाते, मांसाहार का बर्तन अभी भी हम अलग रखते हैं। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि हमारे मन के किसी कोने में अभी भी टीस उठती है कि जबरन हमारे पूर्वज इस्लाम धर्म मानने पर विवश हुए होंगे तो उन्हें कैसा लगता होगा ? खैर ! मैंने सभी बातें आपके सामने दिल खोलकर रख दी है। देखिए भगवान, खुदा, वाहेगुरु या ईसा या उस सर्वशक्तिमान को हम जो भी नाम दें उसी ने हम सबको बनाया है, यह तो हम सभी मानते हैं। हम सभी उसी परवरदीगार के बंदे हैं। हमारे जिस्म/शरीर में वही मांस–मज्जा है और लाल–लाल लहू भी धमनियों में वही दौड़ रहा है। सच तो यह है कि विभिन्न मजहब जैसे–हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, जैन, बौद्ध आदि–आदि हममें से ही कुछ लोगों ने बनाया है और हम आपस में बँट गये हैं। जिन्दगी तो महज चार दिनों की है। किसी ने क्या खूब कहा है–है बहारे बाग दुनियाँ चंद रोज, देख ले इसका तमाशा चंद रोज–– ऐ मुसाफिर कूच का सामना कर, जिन्दगी का है ठिकाना चंद रोज–– फिर हम कहाँ और तुम कहाँ ऐ दोस्तो ? इस जहाँ में है बसेरा चंद रोज–– विभिन्न जातियाँ और धर्म हमने ही तो बनाये हैं। ठीक कह रहा हूँ न ? फिर तुरंत लतीफ बाबू कहने लगे–मैं भी कहाँ की सुनाने लगा ? आप तो इतने पढ़े–लिखे हैं और आपके तालीम के सामने तो मेरी कुछ भी नहीं। समझ नहीं आता हमने इस खूबसूरत दुनियाँ के बंदों को इतनी जातियों और मजहबों में क्यों बाँट दिया ?

आज नंद कुछ समझ नहीं पा रहा था। कुछ देर तो उसने मौन रहकर विचारा फिर अचानक बोल उठा–लतीफ बाबू मैं पहले ही देर कर चुका हूँ। भाभी जी को कहिए वे चाय का प्याला जल्द ही ले आयें और हाँ प्लेट में दो बिस्कुट भी अवश्य लेती आएं। मैं चाय पीकर ही कारखाने के लिए निकलूँगा। बेगम ने चाय टेबल पर रख दी। नंद ने बिस्कुट उठाया और चाय पीने लगा। वह चलने को खड़ा हुआ, अभिवादन के बाद स्कूटर उठाया और कारखाने के लिए रवाना हो गया। उसे ऐसा एहसास हो रहा था कि आज उसके मन से एक बोझ उतर गया था।

❑❑❑

हल्के गहने

लघुकथा

सविता दास सवि*

नई दुल्हन पूरे श्रृंगार में किसी देवी समान दिख रही थी। बहुत साधारण गहने और कपड़े में भी उसका चेहरा दमक रहा था। ससुराल वाले दहेज की माँग परोक्ष तरीके से कर चुके थे पर संयुक्ता को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि उसकी शिक्षा ससुराल वालों की मांग को निरथर्क साबित कर देगी। उसे भरोसा था कि एकदिन वह कोई अच्छी सी नौकरी करेगी और उसके पिता जो कुछ दहेज में ना दे सके कभी ना कभी वो सब खुद कमाकर उन्हें भेंट करेगी और अपने पिता का सर गर्व से ऊंचा करेगी। इतना सोचती ही रहती है कि किसी के बुलाने पर उसकी तन्द्रा भंग होती है, देखती है उसकी मौसी सास उसका परिचय एक मेहमान से करवाती है। चूंकि वह मेहमान एक अधेड़ उम्र की महिला है वह संयुक्ता को लगभग सर से पैर तक निरीक्षण करती हैं। मौसी सास भांप लेती हैं कि यह मेहमान किस नजरिए से देख रही दुल्हन को वह तुरन्त उनका ध्यान भटकाने के लिए कहती हैं,

''पता है, हमारी बहु एम.ए पास है और आगे आत्मनिर्भर होने की इच्छा रखती है।''

वह महिला मौसी की बात को अनसुना कर अपने आक्रामक स्वर के साथ मुखरित होती हैं,

''वो सब तो ठीक है पर इसके पिता ने तो बहुत हल्के गहने दिए इसे,हुँह!''

संयुक्ता अपने पिता के विरुद्ध कुछ भी सुनना स्वीकार नही करती और उस महिला के चरण छूकर कहती है,

''मेरे पिता हम बेटियों की भारी–भरकम शिक्षा दिलाने में इतने व्यस्त थे की गहने भारी नही बना पाए।'' आत्मविश्वास से भरी मुस्कान के साथ

उस वक्त संयुक्ता मानो किसी लंबे संघर्षपूर्ण युद्ध का उद्घोष कर रही थी।

❑❑❑

*लचित चौक, तेजपुर, शोणितपुर, असम

गाँव के गले में फाँसी

अंकुश्री*

कहानी

बाजार में वह कुछ देर तक इधर–उधर घूमता रहा। बाजार और उसकी हर दुकान को वह गौर से देख रहा था। वहाँ खरीद–फरोस कर रहे लोगों को भी वह गौर कर रहा था। उसने महसूस किया कि बाजार की जगह भर पहले वाली बची है, उसमें लगी हुई हर दुकान पूरी तरह बदल चुकी है। स्टेशन से बाजार आये हुए उसे आधा घंटा बीत गया। वह कुछ देर और इधर–उधर देखता रहा। उसकी निगाहें बाजार में गाँव के परिचितों को तलाश रही थी लेकिन उसे कोई परिचित दिखाई नहीं दिया। अंत में वह अकेले ही अपने गाँव की ओर बढ़ चला। वह अभी कुछ ही दूर चल पाया था कि रास्ते में उसे रकटू मिल गया। उसने रकटू को रोकते हुए पूछा, "रकटू काका ! क्या हाल है ?" "अरे ! बबुआ ?" उसे देखकर रकटू आश्चर्य में पड़ गया। कोटरों में धँसी अपनी बूढ़ी आँखों से रकटू उसकी ओर निहारते हुए बोला, "हमार ठीक बा, आपन सुनावऽ – – –।" तू ढ़ेर दिन पर गाँवे आवत बाड़ – – –।" रकटू हजाम था। गाँव के लोगों की हजामत बनाया करता था। जब वह गाँव में रहता था तो उसकी हजामत भी रकटू ही बनाता था।

"गाँव का क्या हाल है काका ?" बात के सिलसिले में वह भी रकटू काका की चाल में धीरे–धीरे चलने लगा था। "अरे बबुआ! तुहों का पूछलऽ ?" रकटू के चेहरे पर उदासी और व्यंग्य की रेखायें छा गयीं, "अब त सभे आपन आ अपना परिवार के हाल–समाचार में अझुराइल बा। गाँव के हाल–समाचार के केकरा फिकिर बा ? आ बबुआ एह खातिर केहू के फुरसतो त नइखे – – –।'

बात करते हुए वह गाँव की ओर बढ़ा जा रहा था। रकटू की चाल में चलने के कारण वह बहुत धीरे–धीरे गाँव की ओर बढ़ रहा था। तब तक गाँव के नये–पुराने कुछ और लोग उसके साथ हो लिये थे। साथ चलने वालों में जिस–जिसने उसे पहचान लिया था, वे दूसरों को धीरे से उसका परिचय दे देते हैं।

"काका, मैं देख रहा हूँ कि गाँव में बिजली लग गयी है। कुछ सड़कें भी पक्की हो गयी हैं। " वह गाँव में घुस गया था, "इससे तो गाँव के विकास में बहुत सहायता मिली होगी ?" उसके इस प्रश्न पर रकटू लगभग चीखते हुए बोला, " गाँव में भले शहर लेखा बिजली चौंधिया गइल बा, मोटर धउरे लागल बा, रेडियो घनघनाये आउर टी.वी. टिमटिमाये लागल बा, बाकिर गाँव के ई सब विकास ऊपरे–ऊपर बा। भीतर से त पूरा गाँव खीरा लेखा फाट गइल बा – – –।

रकटू उससे तब तक बात करते रहा, जब तक कि वह अपने दरवाजे पर नहीं पहुँच गया। घर पहुँचने तक उसने गाँव के बारे में बहुत सारी बातें सुन ली। अचानक अपने गाँव के बारे में आशा के विपरीत इतनी सारी बातें सुन कर उसने दाँतों तले अंगुली दबा ली।

घर पहुँचते ही पास–पड़ोस के लोगों से उसने सुना कि गाँव में पिछले साल एक राजपूत की हत्या हो गयी है। किसी ने कहा, "राजेश और सुरेशवा ने भाला गांथ कर सीताराम सिंह को मार दिया।

"उन दोनों ने तो केवल भाला गांथा था। लेकिन हत्या में कुंजवा, शत्रुघना और ललबबुआ ने भी साथ दिया था। " यह दूसरे किसी की आवाज थी, जिसका तुरंत किसी ने खण्डन कर दिया, "नहीं, नहीं ! ऐसी बात नहीं है। कुंजवा, शत्रुघना और ललबबुआ को तो इस केस में झूठमूठ के फँसाया गया है। वे

तीनों तो कांड के समय वहाँ थे भी नहीं। – – – दिन के करीब बारह बजे यह बारदात हुई थी। उस समय वे तीनों रामदेव सिंह के खेत में काम कर रहे थे।" घटना बीच गाँव में घटी थी। रामदेव सिंह का खेत गाँव से बहुत दूर था। इसीलिये कुछ लोग यह संभावना व्यक्त कर रहे थे कि सीताराम सिंह की हत्या करने में कुंजवा, शत्रुघना और ललबबुआ का हाथ नहीं हो सकता।

तथाकथित हत्या के सम्बन्ध में जितने मुँह – उतनी बातें उसे सुनने को मिल रही थीं। लेकिन यह बात निर्विवाद सत्य थी कि तीज व्रत के दिन, जब गाँव के प्रायः घर–घर में पेडूकिया गुँथा और छना रहा था, दिन के बारह बजे के आसपास सीताराम सिंह को भाला गांथ कर मार दिया गया था। गाँव भाला गांथने का काम किसने किया था – वस्तुतः हत्यारे के अलावे यह बात किसी को पता नहीं थी। घटना दोपहर के समय घटी थी। गाँव के मर्द लोग खेत–खलिहान में व्यस्त थे और औरतें पेडूकिया गूँथने–छानने में। लेकिन एक बात सभी स्वीकार कर रहे थे कि सीताराम सिंह को मारने के लिये न तो भाला की जरूरत थी और न इतने सारे लोग की।

* 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, राँची (झारखण्ड)

सीताराम सिंह दुबला–पतला रोगी आदमी था। हाल ही में उसे पीलिया भी हो गयी थी। कहने को तो उसका पीलिया रोग खत्म हो गया था, लेकिन उसकी देह के रंग में पीलापन तब भी बरकरार था। लोगों का कहना था कि उसे प्रायः कोई न कोई रोग लगा ही रहता था। लेकिन असल बात यह थी कि वह आर्थिक रोगी था और उसी रोग से निपटने के प्रयास में पिछड़ कर शारीरिक रूप से रोगी बन गया था। गरीबी और रोगी जीवन जीने के कारण ही उसने शादी नहीं की थी। दरअसल उसकी शादी के लिये कोई अगुआ ही नहीं आया था जिससे उसे कुँआरा रह जाना पड़ा था। वह नहीं समझ पा रहा था कि सीताराम जैसे आदमी को मारने के लिये इतने लोगों की जरूरत क्यों पड़ गयी।

किसी ने उसे बताया कि जब वह घटना घटी उस समय कुंजवा, शत्रुघना और ललबबुआ – तीनों रामदेव बाबू के खेत में काम कर रहे थे। जंगल की आग की तरह फैली हत्या की खबर सुनकर खेत में काम छोड़कर वे तीनों जिज्ञासावश घटना स्थल पर पहुँच गये थे। यह सब रामा साव के दरवाजे पर हुआ था। तीनों के पहुँचने के बाद गाँव के बाकी मर्द लोग वहाँ पहुँचे थे। उन तीनों के हाथ में ऊँचे–ऊँचे आदमकद लाठियों को देख कर गाँव के राजपूतों द्वारा उनके नाम भी घटना के साथ जोड़ दिये गये थे। मृतक सीताराम सिंह राजपूत था। घटना स्थल पर पहुँचने वाला पहला राजपूत महेन्द्र सिंह था। कहा जाता है कि महेन्द्र सिंह का उन तीनों से पुराना खार था। इसीलिये उसने उन तीनों के नाम उस घटना के साथ जोड़ दिया था।

सीताराम सिंह की दिन–दहाड़े हुई हत्या की खबर जिस रफ्तार से गाँव में फैली थी, उसी रफ्तार से बात गाँव के बाहर भी पहुँच गयी थी। एक–दो दिनों में ही दूर–दराज के लोग अपनी जाति की हत्या पर गाँव में क्रोध उगलने आ गये थे। ऐसा लग रहा था कि मरने वाला सीताराम सिंह आदमी नहीं, राजपूत था। इसलिये उसकी हत्या को राजपूतों ने अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया था।

कुंजवा, शत्रुघना और ललबबुआ – वे तीनों नोनिआ जाति के थे। एक ही खानदान के वे तीनों नवयुवक अपनी आर्थिक दुर्बलता के कारण पढ़ नहीं पाये थे। गाँव में दूसरों के खेत–खलिहान और घरों में खट कर वे अपना पेट पाल रहे थे। माता–पिता खुश थे कि उनका बेटा कमासुत हो गया है। हत्या के साथ अपना नाम घसीटे जाने के कारण तीनों कमासुत गाँव छोड़कर भाग गये थे।

सुरेशवा को मुख्य अभियुक्त माना जा रहा था। वह जाति का बढ़ई था। खानदानी पेशा में अपने बूढ़े बाप की सहायता करते हुए उसने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली थी। कहीं नौकरी का जुगाड़ लग जाये, परिवार वाले इसी आशा में थे कि यह घटना घट गयी थी।

घटना बहुत ही साधारण तरीके से घटी थी। सुरेशवा के दरवाजे के निकट पास–पड़ोस के लोग कूड़ा फेंका करते थे। जब वह कुछ बड़ा हुआ तो उसे अपने दरवाजे के पास लोगों का कूड़ा फेंकना खराब लगने लगा। बस, यहीं पर उससे गलती हो गयी थी। एक–दो बार उसने पड़ोसियों को मना भी किया था लेकिन उसके पड़ोसी वहाँ कूड़ा फेंकते रहे थे। वह जब इस बात का विरोध करना चाहता तब उसका बूढ़ा बाप उसे बोलने से दाब देता था। बाप का कहना था, ''बड़े आदमियों से विरोध नहीं करना चाहिये।'' उसके पड़ोसी मुख्यतः राजपूत थे, जो गाँव के बड़े आदमी समझे जाते थे लेकिन सुरेशवा ने एक गलती और कर दी थी। उसकी समझ में यह बात नहीं आ पायी थी कि बड़ा आदमी क्या होता है। वह कहता था कि आदमी बस आदमी है, क्या बड़ा और क्या छोटा ?

उस दिन सुरेशवा जब दरवाजे से निकल रहा था तभी पड़ोस के राजपूत की पत्नी अपने घर से निकली और सुरेशवा के दरवाजे के पास कूड़ा फेंक गयी। चल रही तेज हवा के कारण सुरेशवा का पूरा शरीर कूड़े से भर गया। वह सोचने लगा कि क्या लोगों के कूड़ा फेंकने के डर से व अपने दरवाजे पर उठना–बैठना छोड़ दे ? नहीं, अब वह ऐसा नहीं होने देगा। अपनी स्थिति के बारे में सोचते–सोचते वह गुस्से से आग–बबूला हो गया। उसने गुस्से में जोर–जोर से बोलना शुरू कर दिया, ''यहाँ किसी को कूड़ा नहीं फेंकने दिया जायेगा। – – – देखते हैं, अब कौन यहाँ कूड़ा फेंकता है !''

''कूड़ा यहीं फेंकाता रहा है और यहीं फेंकाता रहेगा – – –।'' यह सीताराम सिंह की आवाज थी। सुरेशवा की आवाज सुनकर उधर से गुजरते समय वह रूक गया था, ''किसकी हिम्मत है जो यहाँ कूड़ा फेंकने से किसी को रोक ले – – –।'' दोनों में बहस छिड़ गयी। बहस शुरू हुई थी कूड़ा फेंकने को लेकर, लेकिन वह जाति की ऊँचता और निम्नता पर आकर टिक गयी थी। सीताराम सिंह ने कहा था, ''तेरे बाप–दादे हमारे यहां नौकरी करते थे और तू हम पर सिर उठाता है! – – – साले, बढ़ई की औलाद ! तेरी यह मजाल कि तू – – –।'' और बस, बात थम नहीं पायी। उफनती उम्र, हीन दिखाने से मन आहत हो गया था। छप्पर में खोंसा हुआ भाला खींचकर सुरेशवा सीताराम सिंह पर झपट पड़ा था।

इस घटना के बाद सुरेशवा गाँव में कभी नहीं आया। कुछ दिनों के बाद लोगों ने यह जरूर सुना था कि सुरेशवा ने कोर्ट में आत्म–समर्पण कर दिया है लेकिन सुरेशवा को गाँव के किसी

ने देखा नहीं। मुकदमा चला और उसे फाँसी की सजा हो गयी। जिस दिन सुरेशवा को फाँसी हुई थी उस दिन गाँव के राजपूतों ने सत्यानारायण स्वामी की कथा सुनी थी और प्रसाद स्वरूप मिठाइयाँ बाँटी थीं।

सुरेशवा के सहयोगी के रूप में राजेश का भी नाम था। राजेश गाँव के लालाजी का बेटा था। वह सुरेशवा के बचपन का साथी था। दोनों साथ–साथ उठा–बैठा करते थे। गाँव के जमींदार साहेब का पोता होने के बावजूद उसमें ऊँच–नीच की भावना नहीं थी। गाँव के सभी तरह के लोगों से उसकी संगत थी। उठने–बैठने में वह कोई जातिगत बंधन नहीं मानता था। इससे गाँव के अन्य कायस्थ उसे अच्छी निगाह से नहीं देखते थे। वह ज्यादातर सुरेशवा के साथ ही रहता था। इसी कारण उस पर सीताराम सिंह की हत्या में सहयोग का अभियोग लगाया गया था। मुकदमा में उसका नाम भी था। लेकिन बाद में वह बरी हो गया था।

उसे राजेश के दादा की याद आ गयी। राजेश के घर के ठीक सामने उसका घर था। जमींदार होते हए भी राजेश के दादा के व्यवहार में कितनी नरमी थी ? वह उन्हें काका कहता था – जमींदार काका। जमींदार काका के दालान में गाँव के लोग एकजुट होकर किसी बात पर विचार–विमर्श किया करते थे। सभी तरह की पंचायतें भी वहीं हुआ करती थीं। किसी का व्यक्तिगत मसला हो या पारिवारिक, किसी को पड़ोसी से झगड़ा हो गया हो या दूसरे किसी से, लोग अपने परिवार वालों से लड़े हों या सम्बन्धियों से – – – सभी तरह के झगड़े जमींदार काका के गैर–पंचायती पंचायत में सुलझ जाते थे।

जमींदार काका के दालान में बैठकर गाँव वाले चीलम फूँका करते थे। गरमी के दिनों में भांग भी छनती थी। लेकिन उसे पता चला कि अब काका के दालान में कोई नहीं जाता है। गाँव के सुरेन्द्र सिंह और पुरुषोत्तम दुबे के पोते, जो इन दिनों कालेज में पढ़ने लगे हैं, अपने–अपने दादा को जमींदार काका के पास बैठने से मना करते हैं।

गाँव में राजपूतों की संख्या सबसे अधिक थी। ब्राह्मणों और कायस्थों की संख्या भी कम नहीं थी। इसके अलावा नोनिया, मुसहर, बढ़ई, तेली, कोइड़ी, सोनार, लोहार, कुम्हार, धोबी, चमार, दुसाध, पासी, डोम, मुसलमान आदि जातियों के लोग भी गाँव में रहते थे। गाँव के सभी लोग एक–दूसरे से सहकारी भावना से जुड़े हुए थे। गाँव में वे जातियाँ भी हैं, वे लोग भी हैं। लेकिन उनके बीच सहकारिता की जो भावना थी, वह खत्म हो गयी है। वह सोचने लगा कि आखिर गाँव वालों की सहकारिता की भावना कहाँ चली गयी और क्यों चली गयी ?

उसे याद है, गाँव में लड़ाइयाँ तब भी हुआ करती थीं, जातियाँ तब भी थीं। मगर उनका संदर्भ दूसरा था। उसे एक घटना अब भी याद है। उन दिनों वह गाँव में रहा करता था। भोलवा की लड़की गाँव के उस पार रामनरेश सिंह के खेत में काम कर रही थी। शाम को अकेली लौट रही थी। रास्ते में पड़ोसी गाँव का कोई युवक उसे छेड़ना चाहा, मगर छेड़ नहीं पाया। जब गाँव वालों को यह बात मालूम हुई तो वे दूसरे दिन ही लाठियाँ लेकर पड़ोसी गांव से आमने–सामने हो गये थे। भाला–गंड़ासा भी निकल गया था। जब पड़ोसी गाँव के मुखिया ने उसके गाँव के मुखिया का पैर पकड़ कर माफी माँगी तब जाकर कहीं बात टल पायी थी।

तब का उसका गाँव अब इतना बदल गया होगा – अमरीका में रहते हुए वह इस बात को सपने में भी नहीं सोच सकता था। वह अपने गाँव और वहाँ के लोगों से मिलने की ललक लिये हुए वहाँ आया था। उसने उच्च विद्यालय की पढ़ाई गाँव में ही पूरी की थी। उसके बाद गाँव छोड़ दिया था। आज वह अमरीका में स्पेस साइंटिस्ट है। अपनी व्यस्ततापूर्ण जिंदगी में वह बहुत मुश्किल से अपने गाँव की यात्रा का कार्यक्रम बना पाया था।

उसने सोचा था कि गांव पहुंचने पर अमरीका–प्रवास का अनुभव सुनने के लिये लोग उसे घेर लेंगे। वह सबों को अमरीका–प्रवास का अपना अनुभव सुनायेगा। वहां के रहन–सहन, उद्योग–धंधों, विज्ञान, शिक्षा आदि के बारे में लोगों को सुनाने के लिये सोचा थास उसने यह भी सोचा था कि वह अमरीका के शहरों और गांवों के बारे में भी लोगों को बतायेगा।

शाम होते–होते पूरे गाँव में यह बात फैल गयी कि अमरीका से दुबेजी आये हुए हैं। उनके स्वागत में गाँव की ओर से एक बैठकी का आयोजन किया गया।

बैठकी का आयोजन गाँव के बाजार पर किया गया था। ईमली के घने–विशाल पेड़ों के नीचे पहले गाँव का साप्ताहिक बाजार लगता था, जो वर्षों से बंद हो गया है। अब बाजार वाली उस सामूहिक जमीन पर गाँव के किसी का व्यक्तिगत अधिकार हो गया है। पहले तो कुछ दिनों तक उस जमीन से हटकर कच्ची सड़क के किनारे बाजार लगता रहा। लेकिन सड़क किनारे लगने वाला हाट अधिक दिनों तक जम नहीं पाया। इस तरह गाँव में लगने वाले साप्ताहिक बाजार की प्रथा धीरे–धीरे खत्म हो गयी। मगर उस स्थान को अब भी 'बाजार पर' कहा जाता है।

देखते–देखते बाजार पर लाउडस्पीकर घनघनाने लगा। छोटी–बड़ी बत्तियों से बाजार और उसके आस–पास का क्षेत्र चकाचौंध हो गया। जब उसने गाँव छोड़ा था, उस समय उसके

गाँव में बिजली तो नहीं ही पहुँची थी, कभी लाउडस्पीकर भी नहीं बजा था। उसका गाँव अंधेरा था लेकिन आज उसके गाँव में प्रायः सभी घरों में बिजली–बत्ती चमक रही है। पहले कूंड़ और रेहट से होने वाली सिंचाई पर ही गाँव की कृषि आश्रित थी किंतु आज सिंचाई और कृषि के तरह–तरह के साधन गाँव में दिखाई दे रहे हैं।

उसे याद है कि जिन दिनों उसने गाँव छोड़ा था, उन दिनों पूरे गाँव में एक नरेश लाल थे, जो बी.ए. तक पढ़े थे। उनकी पढ़ाई की दूर–दूर तक चर्चा थी लेकिन आज गाँव की हालत भिन्न हो गयी है। बोलने का सउर भले न हो, मगर गाँव में सैकड़ों लोगों के पास बी.ए. की डिग्री है। गाँव में एक तरफ शैक्षणिक डिग्रियाँ बढ़ी हैं तो दूसरी ओर व्यावहारिक अज्ञानता में उससे भी ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है। लोगों ने इतिहास को याद करने के चक्कर में वर्तमान को भुला दिया है।

लोगों का रहन–सहन देखकर वह गाँव की आर्थिक स्थिति के बारे में सोचने लगता है। गाँव में गरीबी पहले भी थी, आज भी है। तब और अब की गरीबी को वह गौर करने लगता है। पहले गाँव में धनी मानी व्यक्ति के पास सूती और खादी के अलावा सिल्क के कुछ कपड़े हुआ करते थे। सिल्क के उनके कपड़े किसी खास मौके पर ही बक्सा से बाहर निकला करते थे लेकिन आज गाँव के गरीब कहलाने वालों की देह पर भी जो कपड़े हैं, वे पहले की अपेक्षा अधिक साफ दिखाई दे रहे हैं। सिंथेटिक कपड़ों ने गाँव के सूती, खादी या सिल्क के कपड़ों को अस्तित्वहीन करके बिल्कुल खदेड़–सा दिया है। धोती, खलीता और गमछी वालों की संख्या सीमित हो गयी है। यहाँ तक कि उन्हें अँगुलियों पर गिना जा सकता है। पहले गाँव के कुछ खास लोगों के यहाँ से ही नहाने के साबुन, स्नो–पाउडर, शैम्पू और सेंट की सुगंध आया करती थी और वह भी खास–खास मौकों पर ही लेकिन अब तो साबुन, स्नो–पाउडर, शैम्पू और सेंट की खुशबू जैसे पूरे गाँव की देह से आ रही है। गाँव के युवाओं का यह विशेष शौक हो गया है। इन सामग्रियों का आवश्यकता के लिये नहीं, शौक के लिये उपयोग किया जाता है।

उसे आभास होता है कि गाँव के लोगों का जीवन व्यस्त हो गया है। इस व्यस्तता ने रिश्तों को तोड़ने में अपनी अहम भूमिका निभायी है। उसे दादी बताती हैं कि पैदल या बैलगाड़ी के भरोसे पहले जो रिश्ते नजदीक लगा करते थे, वही बस, कार, मोटरसाइकिल और मोपेड के युग में आज दूर होते जा रहे हैं।

उसे बताया जाता है कि अमरीका–प्रवास की उसकी बातें सुनने के लिये पास–पड़ोस के गाँवों से भी कुछ लोग आये हुए हैं। वह देखता है कि बैठकी में बहुत थोड़े–से लोग आये हुए हैं। आज उसने गाँव में जिन–जिन चेहरों को देखा था, उन परिचित चेहरों में से भी एक–दो चेहरे ही बैठकी में दिखायी दे रहे थे। ''सभी लोगों को नहीं कहा गया है क्या ?'' वह पास बैठे बड़े भाई और चाचा से यूँ ही पूछ लेता है। उसके बड़े भाई ने बताया, ''मालूम तो सभी लोगों को है मगर चूँकि हम ब्राह्मण हैं, इसलिये इस बैठकी में केवल ब्राह्मण ही आये हुए हैं।''

अमरीका–प्रवास के अनुभव का ब्राह्मण से क्या सम्बन्ध हो सकता है – इस बात को वह नहीं समझ सका। किसी बात की जानकारी प्राप्त करने में ऐसा जातिगत बंधन ? स्थिति के बारे में सोचते हुए वह मानसिक उलझन में पड़ गया लेकिन बात उसकी समझ में नहीं आ पायी।

कुछ लोगों की प्रतीक्षा में बैठकी शुरू होने में अभी देर थी। बातचीत के दौरान उसे पता चला कि कुछ दिन पहले गाँव में एक संत आये हुए थे। संत यद्यपि बहुत पहुँचे हुए थे, लेकिन किसी ने गाँव वालों से कह दिया था कि संत अमुक गाँव के राजपूत थे, जो बचपन में ही घर–परिवार छोड़ चुके थे। संत की जाति का पता चलते गाँव के अन्य सभी जाति वालों ने उनके पास जाना छोड़ दिया था। वह संत गाँव में जितने दिनों तक रहे, उनके सत्संग में गाँव के केवल राजपूत ही पहुँचते थे। दूसरी जाति वाले उनकी ओर फिर कभी ताकने भी नहीं गये।

इन्हीं बातों में उलझा हुआ वह बैठकी में बैठा था। लोग बैठकी की तैयारी में लगे हुए थे। बैठकी शुरू होने में अभी देर थी। वह जमींदार काका से बात करने लगा। जमींदार काका उसे बता रहे थे, ''आठ दिन पहले ही गाँव में कुशवाहा सभा हुई थी, जिसमें गाँव के केवल कोईड़ी–महतो ने भाग लिया था। गाँव में आये दिन रैदास सभा, विश्वकर्मा संगत और शौण्डिक सभा जैसे आयोजन होते रहते हैं और बबुआ, एक बात बताऊँ ! यह जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि गाँव में इस तरह की जितनी सभाएँ होती हैं, वे सभी जागरूकता के नाम पर होती हैं।'' जमींदार काका उसे गाँव के बारे में अधिकाधिक जानकारी दे देना चाहते थे।

गाँव में पिछले दिन हुई हत्या के बारे में जमींदार काका उसे बताते हैं, ''पीलिअहवा सीतरमवा तो भाला की नोक सटने से ही मर गया लेकिन उस घटना ने गाँव को टुकड़ा–टुकड़ा कर दिया। गाँव तो उस घटना से पहले ही टुकड़ों में बँट चुका था लेकिन खीरा की तरह यह ऊपर से मिला हुआ दिखायी देता था। गाँव के जो भी टुकड़े थे, वे अंदर ही अंदर थे। ऊपर से सब कुछ ठीक–ठीक लगता था लेकिन अब तो हर बात प्रत्यक्ष हो गयी है।'' बोलते–बोलते जमींदार काका का गला रूंध जाता है। वे गला साफ कर भरी हुई आवाज में बोलते हैं, ''बबुआ, कोर्ट

द्वारा भले एक सुरेशवा को फाँसी दी गयी, लेकिन सांच बात यह है कि इस घटना ने पूरे गाँव को फांसी पर लटका दिया है लेकिन अफसोस तो इस बात का होता है कि गाँव के गले में फाँसी का फंदा अभी कसा ही था कि रस्सा टूट गया। गाँव को फाँसी तो नहीं हो सकी, लेकिन फंदा गला में कसा रह गया। अब देखना यह है कि गाँव के गले में लगा फाँसी का फंदा पूरा कसता है या उसे ढ़ीला कर गाँव को मुक्त किया जाता है।'' आगे कहते–कहते जमींदार काका का गला फिर भर आता है। वे बहुत मुश्किल से कह पाते हैं, ''लगता है, गाँव को न फाँसी होगी, न उसे फाँसी के फंदा से मुक्ति ही मिलेगी। गाँव के गले में फाँसी का फंदा यों ही लगा रहेगा। ''

उसे लगा कि गाँव के गले में सचमुच फाँसी का फंदा लगा हुआ है। गाँव की जातियाँ ही फंदे का रस्सा है। जब से गाँव है, तभी से गाँव की जातियाँ भी हैं लेकिन जाति का नाम पहले शादी–विवाह और पर्व–त्योहारों पर ही लिया जाता था। दैनिक जीवन में जाति का कोई भेद–भाव नहीं था। लड़ाई–झगड़े में तो जाति का संदर्भ ही नहीं आता था। बाहर से वह जिसे गाँव समझ रहा था, वह अब गाँव नहीं रहकर अंदर ही अंदर टुकड़ों में बँट गया है। वह सोचने लगा कि गाँव का वर्तमान विकास जिस विज्ञान की देन है, वह विज्ञान खुद आदमी की देन है। आदमी विज्ञान के विकास में रोज कुछ न कुछ जोड़ते जा रहा है लेकिन आदमी खुद जुड़ते जाने के बजाय टुकड़ों में बँटता जा रहा है।

उसके गाँव में लोग टुकड़ों में बँटकर न केवल एक–दूसरे से अलग हो गये हैं, बल्कि वे एक–दूसरे की अवहेलना भी करने लगे हैं और एक–दूसरे के जानी दुश्मन तक हो गये हैं या होते जा रहे हैं। गाँव के बच्चे–बच्चे को यह पता चल गया है कि वह किस जाति का है और गाँव में उसकी जाति के कौन–कौन से लोग हैं।

बैठकी में जिन–जिन लोगों को आना था, जब वे पहुँच गये तो माईक पर गाँव के नवयुवक कृष्णा तिवारी ने अनाउंस किया, ''आज हमें इस बात की बहुत खुशी है कि हमारे बीच अमरीका से आये हुए हमारे ही गाँव के श्री एस.के. दुबे मौजूद हैं। आप लोगों में से बहुतों को इनके बारे में जानकारी है लेकिन कुछ लोग शायद इनके बारे में प्रत्यक्ष रूप से नहीं जानते हैं। मैं संक्षेप में इनका परिचय देते हुए इनसे अनुरोध करूँगा कि ये अमरीका–प्रवास के अपने कीमती अनुभव से हम सबों को अवगत करावें।''

उपस्थित श्रोताओं में दुबेजी के अमरीका–प्रवास का अनुभव सुनने की उत्कंठा बनी हुई थी। अनाउंसर कृष्णा तिवारी ने दुबेजी का परिचय देते हुए कहा, ''श्री एस.के. दुबे हमारी ब्राह्मण जाति के सदस्य हैं एवं हमारी जाति के लिये नाज है। इनसे हम तमाम ब्राह्मण जाति – –। ''

अपना परिचय सुनकर उसे लगा कि उसके कान फट जायेंगे। वह आगे कुछ नहीं सुन सका। जमींदार काका को साथ लेकर वह धीरे से बैठकी से बाहर चला गया।

❐❐❐

दास्ताने किस्मत

अनीस अहमद खान*

काव्य-कोना

दास्ताने किस्मत किसी को मालूम नहीं,
दावा करते हैं हम सूखे पत्ते में जान डाल दूँ।

जाने कहाँ से निकाल लेते हैं वक्त नफरतों के लिए,
जिन्दगी इतनी कम है मोहब्बत के लिए।

ईश्वर की तस्वीर मैंने देखा नहीं,
इश्क है मुझे तुम्हारी तस्वीर मैंने देखा है।

आस्मां के सायें में रहते हैं हर बसर,
दावा करते हैं सितारों को तोड़ दूँ।

एक फूल हँस रहा था अकेले खुले मैदान में,
हवाओं ने मुस्कराने भी न दिया।

दिल में क्या है देख नहीं सकता कोई,
गमों में भी मुस्करा कर मिला करो।

अनीस के किस्मत में कोई नहीं हमसफर,
एक मिला था, किनारा कर लिया।

❐❐❐

* चालक, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल

तरक्की

डॉ.देवांशु पाल*

कहानी

पंडितजी यानी दयाशंकर मिश्रा। दफतर का सबसे बुजुर्ग चपरासी। स्टॉफ के लोग उसके व्यवहार एवं उम्र का लिहाज करते हुए उसे पंडितजी कहकर बुलाते हैं। आज वह बहुत खुश हैं। क्यों न हो ? नौकरी में तरक्की जो मिली है उसे। सत्ताईस साल की नौकरी में पहली बार तरक्की मिली है। चपरासी से दफ्तरी बन गया है। अब न तो उसे साहब के चेम्बर के बाहर स्टूल पर बैठना होगा और न ही साहब की घंटी सुननी होगी। अब उसे बैठने के लिए अलग से टेबल–कुर्सी मिलेगी। दफ्तर में दफ्तरी का पोस्ट कॉफी महत्वपूर्ण होता है। सारे दफ्तर के फाइलों को अपने जानकारी में तथा उसे संभालकर रखना होता है। कभी किसी फाइल की जरूरत पड़ने पर उसे तुरन्त निकालकर देना होता है। दयाशंकर को इस तरक्की से कोई विशेष आर्थिक लाभ नहीं मिला। उच्च वेतन का लाभ उसे पिछले कई सालों से मिल रहा है। एक लाभ मिला है वह है चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से तृतीय श्रेणी कर्मचारी होने का। दयाशंकर अखिलेश के पास आकर मुस्कुराया। अखिलेश ने उन्हें बधाई दी। दयाशंकर के प्रमोशन के बारे में अखिलेश को चार–पाँच महीने पहले ही पता हो गया था। जब पैनल के लिए उनका नाम उच्च कार्यालय को भेजा जा रहा था। यह बात उन्होंने दयाशंकर को भी बताया था। चूँकि अखिलेश स्थापना खण्ड का बड़ा बाबू है साथ ही कर्मचारी संगठन का अध्यक्ष भी। उन्होंने दयाशंकर को भरोसा दिलाया था कि उसकी पोस्टिंग इसी दफ्तर में हो जाएगी। वैसे भी दफ्तर में एक पोस्ट खाली है। अगर पोस्टिंग दूसरे दफ्तर में या बाहर किसी अन्य शहर में हो जाती है तब भी वह संगठन के अध्यक्ष के नाते मुख्य अभियन्ता साहब से कहकर उसकी पोस्टिंग इसी दफ्तर में करा देंगे। यह सुनकर दयाशंकर बहुत खुश हुए थे। आज दयाशंकर से हाथ मिलाते समय अखिलेश को पुरानी बातें याद आ गई। तभी पास खड़े गिरजाशंकर राव ने दयाशंकर से इस खुशखबरी के लिए मिठाई खिलाने की जिद की। दयाशंकर मान गये।

लंच के थोड़े समय पहले दयाशंकर, अखिलेश से पाँच सौ रुपये माँगने लगे। अखिलेश को बात समझ आ गयी थी, फिर भी उन्होंने पूछा–'' क्या बात है पंडितजी ! आज महीने के पन्द्रह तारीख को पैसों की जरूरत कैसे पड़ गई है। कोई जरूरी काम है क्या.....''। दयाशंकर सहज होकर बोला–'' नहीं बाबू साहब आप लोगों के लिए मिठाई लाने के लिए माँग रहा हूँ। तनख्वाह मिलते ही लौटा दूँगा.....''।

–''वह तो मुझे मालूम है.....'' अखिलेश ने पर्स से पाँच सौ का नोट निकालकर देते हुए कहा। इससे पहले भी कई बार अखिलेश ने दयाशंकर को पैसे जरूरत पड़ने पर दिए हैं। दयाशंकर उसे तनख्वाह की पहली तारीख को लौटा दिया है। उसकी यही आदत अखिलेश को अच्छी लगी। इसलिए वह दयाशंकर को पैसे देने से कभी मना नहीं करते।

दयाशंकर दफ्तर से बाहर निकलकर मिठाई लाने के लिए साइकिल स्टैण्ड पर अपनी पुरानी साइकिल निकालने लगा। आजकल स्टैण्ड पर अधिकतर स्कूटर और मोटर साइकिल खड़ी रहती है, बीच–बीच में दो–चार साइकिलें। साइकिल निकालते वक्त दयाशंकर को एकाएक पत्नी की बातें याद आ गई। कितनी बार उसने इस पुरानी साइकिल को बेचकर एक नई स्कूटर खरीदने के लिए कहा है लेकिन वह नहीं माना। वाँ पुरानी यह साइकिल खटारा हो गयी है। अक्सर वह साइकिल चलाते समय हाँफने लगता है और उसका सारा बदन पसीने से तर–बदर हो जाता है। शहर की सभी सड़कों की हालत भी एक जैसी है, सभी सड़कें इतनी जर्जर हो गई है कि अब तो साइकिल–रिक्शा चलाना ही मुश्किल हो गया है। उसे अपनी पत्नी की बातें तो ठीक लगती है, कई बार उसने नई स्कूटर खरीदने का मन भी बना लिया था, लेकिन यह बात सिर्फ दयाशंकर ही जानता है कि स्कूटर खरीदने से खर्च भी बढ़ जाएगा। पेट्रोल की कीमत दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। एक अकेले की तनख्वाह से घर ज्यों–त्यों चल रहा है। हर बार यह सोचकर टाल देता है कि अभी बच्चे पढ़ रहे हैं। पैसों की जरूरत है। जब बच्चे कॉलेज जाने लगेंगे तब उनके लिए खरीद देंगे। स्कूटरों की भीड़ में से वह किसी तरह अपनी साइकिल को बाहर खींच निकाला। निकालते समय साइकिल की घंटी की कटोरी निकलकर नीचे गिर पड़ा। कटोरी को उठाते समय उसे अपने पुराने दिन की बातें याद आ गई। जिस दिन वह पहली बार इस नई साइकिल को स्टैण्ड पर लाया था। सबकी नजर उस साइकिल पर पड़ी थी। एकाउंटेण्ट पिल्ले जी ने तो अपनी बात कह ही दी–'' पंडितजी अब तो आपकी साइकिल सबसे नई और अच्छी लग रही है। बाकी सभी साइकिलें तो पुरानी हो गई हैं, आज तो आपको मुँह मीठा कराना होगा.....''। उस दिन दयाशंकर का मन खुशी से भर गया था। आज भी वह अपनी साइकिल को

* गायत्री विहार, विनोबा नगर, बिलासपुर–495004, छ0ग0

बच्चों की तरह संभालकर रखता है। रोज सुबह दफ्तर जाने से पहले उसे कपड़े से साफ करता है। कीचड़ लगने से पानी से धोता है। फिर दोनों पहियों का हवा चैक करता है। कम होने पर स्वयं ही पंप से हवा भरता है। कल–पुर्जों पर तेल भी डालता है। घंटी को बजाकर उसकी आवाज को सुनता है क्योंकि आजकल सड़क पर इतनी भीड़ रहती है कि लोगों को घंटी बजाकर सड़क पर जगह माँगनी पड़ती है। कभी–कभी तो लोग साइकिल की घंटी की आवाज सुनने के बाद भी अनसुना कर देते हैं जिससे कि कभी भी दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। दयाशंकर को हमेशा इसी बात की फिक्र रहती है। इसलिए वो अपनी साइकिल हमेशा धीमी रफ्तार से चलाता है। कुछ दूर चलने के बाद दयाशंकर अपनी साइकिल को एकाएक बस्ती की तरफ मोड़ लेता है। इसी बस्ती में उसने अपने लिए एक छोटा–सा मकान खरीदा है, प्रोविडेंट फण्ड से लोन लेकर। रोजमर्रा के खर्च के बाद लोन के पैसे चुकता करने में उसे कई बार परेशानियों का सामाना करना पड़ा। उसकी पत्नी अपना गहना गिरवी रखकर पैसों का बन्दोबस्त की थी। पत्नी के सहयोग को वह कभी नहीं भूला सकता। इसलिए उन्होंने आज अपने प्रमोशन की खुशखबरी को पत्नी को भी सुनाना चाहता है। खबर सुनकर पत्नी बहुत खुश होगी। यही सोचकर उसने अपनी साइकिल बस्ती की गली की तरफ मोड़ लिया। वैसे भी दयाशंकर अपनी पत्नी को दफतर की सारी बातें बताता है। कब नये साहब आए, कब पुराने साहब गए। स्टाफ के बच्चों की शादी, बच्चों के पढ़ाई की खबरें, यहाँ तक कि छट्ठी व दशगात्र की खबरें भी पत्नी को बताता है। एक वही तो है उसकी सबसे अच्छी दोस्त भी और साथी भी।

दोपहर के समय पत्नी अकेली है। बच्चे स्कूल गये हैं। दोपहर के समय वह टी.व्ही. देखती है। बाकी समय उसे फुरसत कहाँ मिलती है। खाना बनाना और बच्चों के पीछे समय कट जाता है। दरवाजे पर दस्तक सुनते ही उसकी पत्नी बाहर निकल आई। दरवाजे पर दयाशंकर को देखकर वह कुछ पल आश्चर्यचकित होकर खड़ी रही। उसे कुछ समझ में नहीं आया कि उसका पति इस वक्त दफ्तर से घर क्यों लौट आया है। उसके चेहरे पर भय और आतंक झलकने लगा। काँपतें स्वर में बोली–'' तुम इस वक्त ! सब ठीक तो है न। दफ्तर में किसी से कोई बात तो नहीं हुई है.....''। पत्नी का इस तरह डरना व आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक है क्योंकि इससे पहले कभी दयाशंकर इस तरह दफ्तर छोड़कर भरी दुपहरी में घर नहीं लौटा। इससे पहले वह एक–दो बार घर जरूर आया है लेकिन तबियत खराब हो जाने की वजह से, पर आज तो ऐसी कोई बात नजर नहीं आ रही है। दयाशंकर ने घर के अंदर प्रवेश कर सहज भाव से पत्नी की तरफ देखकर कहा–'' नहीं भारती ऐसी कोई बात नहीं है। दफ्तर का हाल सब ठीक है। मैं तो तुम्हें एक खुशखबरी सुनाने के लिए आया हूँ कि मेरा प्रमोशन हो गया है। मैं दफ्तरी बन गया हूँ.....''। यह सुनकर उसकी पत्नी खुशी से उछल पड़ी और दयाशंकर के गले से लिपट गई। कई सालों के बाद पत्नी की आँखों में इतनी खुशी और प्यार देखकर दयाशंकर का मन गदगद हो उठा। एकाएक पत्नी को खुद से अलग करते हुए उसने कहा–''भारती अभी मैं जल्दी में हूँ। बाबू साहब लोगों के लिए मिठाई लेने के लिए निकला हूँ, बाजार जाना है। देर हो रही है। मैं शाम को तुम लोगों के लिए मिठाई लेते आऊँगा. .....''। यह कहकर वह बाहर निकल आया। बाजार के रास्ते पर भीड़ लगी थी। चारों तरफ जाम की स्थिति बनी हुई थी। दयाशंकर भीड़ में फँस गया। निकलने के लिए प्रयास किया, लेकिन उतना ही ज्यादा वह भीड़ में फँसता चला गया। किसी ने बताया आगे मंत्री जी का काफिला जा रहा है। मोटर गाड़ियाँ, रिक्शा, ऑटो, बस यहाँ तक पैदल चलने वालों के लिए भी आगे निकलना कठिन हो गया था। धूप तेज थी। पसीने से उसकी शर्ट गीली होती जा रही थी। वह मन ही मन मंत्री जी को कोसने लगा। जनता जिसे चुनकर संसद और विधानसभा में बैठाती है वही मंत्री बनकर जनता को परेशान करते हैं। बेवजह जनता बीच सड़क पर तेज धूप में घंटों खड़े हैं। इस भीड़ में स्कूल के बच्चे होंगे जो सुबह के छः बजे निकले हैं, भूखे–प्यासे घर लौट रहे हैं। मरीज होंगे जिन्हें अस्पताल जाना है इलाज के लिए, ऐसे भी लोग होंगे जिन्हें ट्रेन पकड़नी है, बस पकड़ना है। भीड़ में कामकाजी महिलाएँ भी होंगी। वह सारे लोग मंत्री के वजह से घंटो एक ही जगह पर खड़े हैं और उस मंत्री को कोस रहे हैं। मंत्री को इनकी बातों का कोई असर नहीं होगा क्योंकि मंत्री तो सुरक्षित एयर कंडिशन विदेशी कार के नरम गद्दे में अधलेटे हुए किसी विदेशी संगीत के धून का मजा ले रहे हैं। उन्हें इस भीड़ में फंसे लोगों की फिक्र कहाँ है। भीड़ छटने में देर लगी। जब मिठाई लेकर दयाशंकर दफ्तर पहुँचे उस वक्त लंच का समय खत्म हो गया था। अंदर पहुँचा तो दफ्तर का नजारा देखकर आश्चर्यचकित होकर रह गया। उसके पाँव जमीन पर गढ़ गये। कुछ समझ में नहीं आया। दफ्तर के सारे लोग पार्टी मना रहे थे। सभी के हाथों में नाश्ते की प्लेट थी। आपस में बातें कर रहे थे, हँस रहे थे। दयाशंकर से रहा नहीं गया पास खड़े दूबे जी से पूछा–'' किस बात के लिए यह पार्टी हो रही है.....''। दूबे जी उसकी तरफ देखकर बोले–'' अरे पंडितजी आपको नहीं मालूम हमारे अग्रवाल साहब का प्रमोशन हो गया है। अधीक्षण यंत्री बन गये हैं.....''। ''आर्डर कब आया.....? दयाशंकर ने दबे स्वर में पूछा। दूबे जी ने बताया'–– आर्डर नहीं आया है। फैक्स आया है। लंच के समय.....''। यह सुनते ही दयाशंकर के चेहरे का रंग फीका पड़ गया। नौकरी के बीस साल भी नहीं हुए दूसरा प्रमोशन भी मिल गया। एक दयाशंकर ही है जिसे

नौकरी के सत्ताईस साल में पहला प्रमोशन मिला है। दफ्तर के सभी लोग अग्रवाल साहब के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं। वो कितने भ्रष्ट और लापरवाह अधिकारी हैं। दो बार सस्पेण्ड हुए हैं। पिछले तीन सालों में अनेक गंभीर प्रकरणों में फँसे हैं। दोषी भी पाये गये। लेकिन बड़े अधिकारियों के एवं नेताओं के मीलीभगत से वह बेदाग बरी हो गये। उनकी राजनीतिक पकड़ भी मजबूत है। पिछले दस–बारह सालों से वह इसी दफ्तर में टिके हैं। सभी स्टाफ उनके दबंगपन से भयभीत भी रहते हैं।

दयाशंकर की नजर एकाएक दूबे जी के नाश्ते की प्लेट पर पड़ी। प्लेट खारा–मीठा के अलावा काजू–किसमिस तथा कीमती बिस्कुट से भरा था। वह किसी तरह सबकी नजर बचाकर उल्टे पाँव दरवाजे की तरफ लौटा। जब वह बाहर निकल आया उसके हाथों में लटकती थैली में दो किलो ताजा बूँदी के लड्डू थे जिसे वह शहर के नामी हल्वाई की दुकान से खरीद लाया था। वह बड़ी उम्मीद से यह मिठाइयाँ सारे स्टाफ को खिलाने के लिए खरीदा था लेकिन लकड़ा साहब की पार्टी में कीमती तथा स्वादिष्ट मिठाइयों के सामने बूँदी के लड्डू निहायत देहाती किस्म की मिठाई जैसी थी। दयाशंकर लौट आया साइकिल स्टैण्ड। स्टैण्ड से साइकिल निकालकर पीछे कैरियर में मिठाई के डब्बे को रखकर मन ही मन यह सोचकर मुस्कुराने लगा कि आज बरसों बाद इतनी सारी मिठाइयाँ अपने बीबी और बच्चों के लिए ले जा रहा है। दयाशंकर को बचपन से ही बूँदी के लड्डू बहुत पसंद है। जब वह आठ–दस साल का था, गाँव में स्कूल जाते समय वह सड़क पर देर तक खड़े होकर हलवाई को मिठाई बनाते देखता था। एक दिन उस पर हल्वाई की नजर पड़ी उसने जोर से चिल्लाया। दयाशंकर स्कूल की तरफ भागा। उस दिन स्कूल पहुँचने में देर हो गई थी जिसके कारण उसे मास्टर जी की मार खानी पड़ी थी। दयाशंकर आज जल्दी घर लौट रहा है। वह हमेशा दफ्तर समय खत्म होने के एक–डेढ़ घंटा बाद ही निकलता है। दयाशंकर का मकान पक्की और लेंटर वाला तो है, लेकिन उसने मकान के बाहरी दीवार पर गाँव के मकानों जैसे रंगीन चित्र बना रखा हैं, जिसमें मोर, हाथी, कमलफूल, भगवान विष्णु, लक्ष्मी जैसी नीले–पीले रंगों के चित्र बनाये गये है। आज भी उसे गाँव बहुत पसंद है। कभी–कभी उसे अपने बचपन की बातें याद आती है तो वह बहुत उदास हो जाता है। अगर उसके बापू उसे अपने चाचा के साथ काम करने के लिए गाँव से शहर न भेजा होता तो वह गाँव में ही रहता। कोई मजदूरी कर लेता लेकिन गाँव नहीं छोड़ता। उसकी माँ की मौत बीमारी से और पिता की मौत भूख से हुई थी। गाँव की नदी, खेत, आसमान, नीम–आम, कटहल जैसे फलदार पेड़ उसकी छाया जिसे पाने के लिए वह आज भी तरसते रहता है। दरवाजे के पास साइकिल की घंटी की आवाज सुनकर उसकी

शेष पृष्ठ 35 पर...

क्यों सूरज डूब जाता है...

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव*

काव्य-कोना

तुम्हें स्मरण होगा जब हम सर्वप्रथम मिले थे..
जीवन में खुशियों के कितने फूल खिले थे..
एक–दूसरे को देखकर मुस्कराना..
और फिर एक–दूसरे के प्रति बढ़ता ही गया आकर्षण..
शिष्टाचार का हमने छोड़ दिया आवरण..
अनजान होने के बावजूद लगता..
कि हम एक–दूसरे को कितना जानते हैं..
जैसे वर्षों से पहचानते हैं..
एक–दूजे का साथ बढ़ता गया..
एक–दूजे के प्रति प्यार पनपता गया..
एक–दूजे के आँखों की पढ़ लेते थे भाषा..
शायद यही थी सच्चे प्रेम की परिभाषा..
एक–दूसरे के बिना न रहा जाता था..
रात भर का विछोह न सहा जाता था..
सुबह कॉलेज में मिलते ही कितना सुकूँ मिलता था..
और फिर पढ़ाई के एक दो घंटे छोड़ निकल पड़ते थे..
जहाँ हो झील या नदी का हो किनारा..
एक–दूसरे के जीवन के बनना चाहते थे सहारा..
घंटों नदी के किनारे बैठकर पानी में पत्थर फेंकते थे..
अनगिनत न खत्म होने वाली बातें..
जीवन के प्रति कितना था उमंग..
इक नई दुनिया, इक नई उमंग..
हम सूरज के डूबने तक रहते थे संग–संग..
उसके बाद रुक न सकते थे..
भले ही हम बड़े हो गए थे..
पर घर रात होने के पहले..
पहुँचने का फरमान रहता था..
इसीलिए चाहते थे सूरज न डूबे..
और हमें एक–दूसरे से अलग न होना पड़े...

❑❑❑

*ग्राम–कैतहा, पोस्ट–भवानीपुर, जिला–बस्ती 272124 (उत्तर प्रदेश)

और, रजनीगन्धा मुरझा गये...

महेश कुमार केशरी*

कहानी

'पापा लाईट नहीं है, मेरी ऑनलाइन क्लासेज कैसे होंगी... ..? ..कुछ...दिनों में मेरी सेकेंड टर्म के एग्जाम शुरू होने वाले हैं.. कुछ दिनों तक तो मैनें अपनी दोस्त नेहा के घर जाकर पावर बैंक चार्ज करके काम चलाया, लेकिन अब रोज–रोज किसी से पावर बैंक चार्ज करने के लिए कहना अच्छा नहीं लगता, आखिर, कब आयेगी हमारे घर बिजली ?' संध्या... अपने पिता आदित्य से बड़बड़ाते हुए बोली। 'आ जायेगी, बेटा बहुत जल्दी आ जायेगी।' आदित्य जैसे अपने आपको आश्वस्त करते हुए अपनी बेटी संध्या से बोला, लेकिन, वो जानता है कि वो संध्या को केवल दिलासा भर दे रहा है। सच तो ये है कि अब मखदूमपुर में बिजली कभी नहीं आयेगी। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर ही बिजली विभाग ने यहाँ के घरों की बिजली काट रखी है। पानी की पाइपलाइन खोदकर धीरे–धीरे हटा दी जायेगी और धीर–धीरे मखदूमपुर से तमाम मौलिक नागरिक सुविधाएँ स्वतः ही खत्म हो जायेंगी और सर से छत छिन जायेगा। फिर, वो सुलेखा, संध्या, सुषमा और परी को लेकर कहाँ जायेगा ? बहुत मुश्किल से वो अपने एल. आई. सी. के फण्ड और अपने पिता श्री बद्री प्रसाद जी की रिटायरमेंट से मिले पंद्रह–बीस लाख रुपये से एक अपार्टमेंट खरीद पाया था। तिनका–तिनका जोड़कर। जैसे गौरैया अपना घर बनाती है। सोचा था कि अपनी बच्चियों की शादी करने के बाद वो आराम से अपनी पत्नी सुलेखा के साथ रहेगा। बुढ़ापे के दिन आराम से अपनी छत के नीचे काटेगा, लेकिन, अब ऐसा नहीं हो सकेगा। उसे ये घर खाली करना होगा, नहीं तो, नगर–निगम वाले आकर जे.सी.बी. से तोड़ देंगे। वो दिल्ली से सटे फरीदाबाद के पास मखदूमपुर गाँव में रहता है। पिछले बीस–बाईस सालों से मखदूमपुर में तीन कमरों के अपार्टमेंट में वो रह रहा है। बिल्डर संतोष तिवारी ने घर बेचते वक्त ये बात साफ तौर पर नहीं बताई थी कि ये जमीन अधिकृत नहीं है। यानी वो निशावली के जँगलों के बीच जँगलों और पहाड़ों को काटकर बनाया गया एक छोटा सा कस्बा जैसा था। जहाँ आदित्य रहता आ रहा था, हालाँकि वो अपार्टमेंट लेते वक्त उसके पिता श्री बद्री प्रसाद और उसकी पत्नी सुलेखा ने मना भी किया था–'मुझे तो डर लग रहा है। कहीं..ये जो तुम्हारा फैसला है, वो कहीं हमारे लिए बाद में सिरदर्द ना बन जाये।' तब उसी क्षेत्र के एक नामी–गिरामी नेता रंकुल नारायण ने सुलेखा, आदित्य और बद्री प्रसाद को आश्वस्त भी किया था– 'अरे, कुछ नहीं होगा। आप लोग आँख मूँदकर लीजिए यहाँ अपार्टमेंट। मैनें...खुद अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को दिलाया है, यहाँ अपार्टमेंट। मैं पिछले पंद्रह–बीस सालों से यहाँ विधायक हूँ। चिंता करने की कोई बात नहीं है। 'रंकुल नारायण का बहनोई था बिल्डर संतोष तिवारी। ये बात अगले आने वाले विधानसभा चुनाव में पता चली थी। जब अनधिकृत कॉलोनी के टूटने की बात आदित्य को पता चली। रंकुल नारायण ने

उस साल के विधानसभा चुनाव में सारे लोगों को आश्वासन दिया था कि आप लोगों को घबराने की कोई जरूरत नहीं है। आप लोग मुझे इस विधानसभा चुनाव में जीतवा दीजिये। फिर मैं असेंबली में मखदूमपुर की बात उठाता हूँ, कि नहीं। आप खुद ही देखियेगा। कोई नहीं खाली करवा सकता, ये मखदूमपुर का इलाका। हमने आपके राशन कार्ड बनवाये। हमने आपके घरों में बिजली के मीटर लगवाये। यहाँ कुछ नहीं था, जंगल था जँगल लेकिन, हमने जंगलों को कटवाकर पाईपलाइन बिछाया। आप लोगों के घरों तक पानी पहँचाया, ये कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। अनधिकृत को अधिकृत करवाना, असेंबली में चर्चा की जायेगी और कुछ उपाय कर लिया जायेगा। इस मखदूमपुर वाले प्रोजेक्ट में मेरे बहनोई का कई सौ करोड़ रुपया लगा हुआ है। इसे हम किसी भी कीमत पर अधिकृत करवा कर ही रहेंगे और अंततः रंकुल नारायण की बातों पर लोगों ने विश्वास कर उसे भारी मतों से जीतवा दिया था और रंकुल नारायण के विधानसभा चुनाव जीतने के साल भर बाद ही सुप्रीम कोर्ट का ये आदेश आया था कि मखदूमपुर कस्बा बसने से निशावली के प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यावरण को बहुत ही नुकसान हो रहा है। लिहाजा, जो अनधिकृत कस्बा मखदूमपुर बसाया गया है उसे अविलम्ब तोड़ा जाये और डेढ़–दो महीने का वक्त खुले में रखे कपूर की तरह धीरे–धीरे उड़ रहा था...।

'पापा.. ना हो .. तो .. आप मुझे मेरी दोस्त सुनैना के घर छोड़ आईये। वहाँ मेरी पावर बैंक भी चार्ज हो जायेगी और मैं सुनैना से मिल भी लूँगी। मुझे कुछ नोटस भी उससे लेने हैं। 'आदित्य को भी ये बात बहुत अच्छी लगी कि सुनैना के घर जाने से बच्ची का मन लग जायेगा। कोविड में घर में रहते– रहते बोर हो गई है। आदित्य ने स्कूटी निकाली और, गाड़ी स्टार्ट करते हुए बोला – 'आओ, बेटी बैठो।

थोड़ी देर में स्कूटी सड़क पर दौड़ रही थी। संध्या को सुनैना के घर छोड़कर कुछ जरूरी काम को निपटा कर वो

*श्री बालाजी स्पोर्ट्स सेंटर, मेघदूत मार्केट फुसरो, बोकारो 829144 (झारखंड)

राशन का सामान पहुँचाने घर आ गया था। 'मैं, क्या करूँ, सुलेखा ? तीन– तीन जवान बच्चियों को लेकर कहाँ किराये के मकान में मारा–मारा फिरूँगा और अब उम्र भी ढलान पर होने को आ रही है। आखिर, बुढापे में कहीं तो सिर टिकाने के लिए ठौर चाहिए ही। कुछ मेरे एल.आई.सी. के फण्ड हैं, कुछ बाबूजी के रिटायरमेन्ट का पैसा पड़ा हुआ है। जोड़–जाड़कर कुछ पन्द्रह–बीस लाख रुपये तो हो ही जाएँगे। कुछ, संतोष तिवारी से नेगोशियेट (मोल–भाव) भी कर लेंगे और तब आदित्य ने बीस लाख में वो तीन कमरों वाला अपार्टमेंट खरीद लिया था बिल्डर संतोष तिवारी से लेकिन, तब सुलेखा ने आदित्य को मना करते हुए कहा था– 'पता नहीं क्यों ये संतोष तिवारी और रंकुल नारायण मुझे ठीक आदमी नहीं जान पड़ते। इन पर विश्वास करने का दिल नहीं करता है।' लेकिन आदित्य बहुत ही सीधा–साधा आदमी था। वो किसी पर भी सहज ही विश्वास कर लेता था। तभी उसकी नजर अपनी पत्नी सुलेखा पर गई। शायद आठवाँ महीना लगने को हो आया है। पेट कितना निकल गया है। उसने देखा सुलेखा नजदीक के चापाकल से मटके में एक मटका पानी सिर पर लिये चली आ रही है। साथ में उसकी दो छोटी बेटियाँ, परी और सुषमा भी थीं। वो अपने से न उठ पाने वाले वजन से ज्यादा पानी दो–दो बाल्टियों में भरकर नल से लेकर आ रही थीं। आदित्य ने देखा तो दौड़कर बाहर निकल आया और सुलेखा के सिर से मटका उतारते हुए बोला – 'पानी नहीं.. आ रहा है.. क्या...?' तभी उसका ध्यान बिजली पर चला गया। बिजली तो कटी हुई है। आखिर, पानी चढ़ेगा तो कैसे ?, मोटर तो बिजली से चलता है ना ? 'नहीं पानी कैसे आयेगा..? बिजली कहाँ है... एक बात कहूँ, बुरा तो नहीं मानोगे ना। ना हो तो... मुझे मेरे पापा के घर कुछ दिनों के लिए पहुँचा दो। जब यहाँ कुछ व्यवस्था हो जायेगी तो यहाँ वापस बुला लेना। बच्चा भी ठीक से हो जायेगा और, मुझे थोड़ा आराम भी मिलेगा। यहाँ इस हालत में मुझे बहुत तकलीफ हो रही है। पानी भी नहीं आ रहा है। बिजली भी नहीं आ रही है। सुलेखा चेहरे का पसीना पल्लू से पोंछते हुए बोली। अभी तक सुलेखा और बेटियों को घर टूटने वाला है, ये बात जानबूझकर, आदित्य ने नहीं बताई है। खामखाँ वो, परेशान हो जायेंगी...। 'हाँ, पापा घर में बहुत गर्मी लगती है। पता नहीं बिजली कब आयेगी। हमें नानू के घर पहुँचा दो ना पापा' परी बोली। हाँ बेटा, कोविड कुछ कम हो तो तुम लोगों को नानू के घर पहुँचा दूँगा। 'आदित्य परी के सिर पर हाथ फेरते हुए बोला। तुम हाथ–मुँह धो लो मैं चाय गर्म करती हूँ।' सुलेखा गैस पर चाय चढ़ाते हुए बोली। चाय पीकर वो टहलते हुए नीचे बालकॉनी में आ गया। कॉलोनी में, कॉलोनी को खाली करवाने की बात को लेकर ही चर्चा चल रही थी। कुलविंदर सिंह बोले– 'यहीं, वारे (महाराष्ट्र) के जंगलों को काटकर वहाँ मेट्रो बनाया गया। वहाँ सरकार कुछ नहीं कह रही है, लेकिन हमारी कॉलोनी इन्हें अनधिकृत लग रही है। सब सरकार के चोंचले हैं। मेट्रो से कमाई है, तो, वहाँ वो पर्यावरण संरक्षण की बात नहीं करेगी लेकिन, हमारे यहाँ, निशावली के जँगलों और पर्यावरण को नुकसान पहुँच रहा है। हुँह..पता नहीं कैसी है, सरकार ? फिर, ये हमारा राशन कार्ड, वोटर कार्ड, आधार कार्ड किसलिए बनाये गये हैं ? केवल वोट लेने के लिए। जब कोई बस्ती–कॉलोनी बस रही होती है, बिल्डर उसे लोगों को बेच रहा होता है तब सरकारों की नजर इस पर क्यों नहीं जाती ? हम अपनी सालों की मेहनत से बचाई, पाई–पाई जोड़कर रखते हैं अपने बाल–बच्चों के लिए और कोई कारपोरेट या बिल्डर हमें ठगकर लेकर चला जाता है, तब सरकार की नींद खुलती है। हमें सरकार कोई दूसरा घर कहीं और व्यवस्था करके दे, नहीं तो हम यहाँ से हटने वाले नहीं हैं। घोष बाबू सिगरेट की राख चुटकी से झाड़ते हुए बोले – 'अरे छोड़िये कुलविंदर सिंह। ये सारी चीजें सरकार और इन पूँजीपतियों के साठगाँठ से ही होती है। अगर अभी जाँच करवा ली जाये तो आप देखेंगे कि हमारे कई मिनिस्टर, एम.पी., एम.एल.ए. इनके रिश्तेदार इस फर्जी वाड़े में पकड़े जायेंगे। सरकार के नाक के नीचे इतना बड़ा कांड होता है। करोड़ों के कमीशन बँट जाते हैं और आप कहते हैं कि सरकार को कुछ पता नहीं होता है। कोई मानेगा इस बात को। सब, सेटिंग से होता है। नहीं तो इस देश में एक आदमी फुटपाथ पर भीख माँगता है और दूसरा आदमी केवल तिकड़म भिड़ाकर ऐश करता है... ये आखिर, कैसे होता है ? सब, जगह सेटिंग काम करती है। उसका नीचे बालकॉनी में मन नहीं लगा वो वापस अपने कमरे में आ गया और बिस्तर पर आकर पीठ सीधा करने लगा। तुमसे मैं कई बार कह चुकी हूँ, लेकिन तुम मेरी कोई भी बात मानों तब ना। अगर होटल लाईन नहीं खुल रहा है तो कोई और काम–धाम शुरू करो। समय से आदमी को सीख लेनी चाहिए। कोरोना का दो महीना बीतने को हो आया और सरकार होटलों को खोलने के बारे में कोई विचार नहीं कर रही है। आखिर, और लोग भी अपना बिजनेस चेंज कर रहे हैं लेकिन पता नहीं तुम क्यों इस होटल से चिपके हुए हो..? कौन समझाये, सुलेखा को बिजनेस चेंज करना इतना आसान नहीं होता है।एक बिजनेस को सेट करने में कई–कई पीढ़ियाँ निकल जाती हैं। फिर, उसके दादा–परदादा ये काम कई पीढ़ियों से करते आ रहे थे। इधर नया बिजनेस शुरू करने के लिए नई पूँजी चाहिए। कहाँ से लेकर आयेगा वो अब नई पूँजी..? इधर, होटल पर बिजली का बकाया बिल बहुत चढ़ गया है। स्टाफ का दो–तीन महीने का पुराना बकाया चढ़ा हुआ था ही। रही–सही कसर इस

कोरोना ने निकाल दी। कुल चार–पाँच महीनों का बकाया चढ़ गया होगा। अब तक.. दूकान खोलते–खोलते दूकान का मालिक सिर पर सवार हो जायेगा, दूकान के भाड़े के लिए। दूध वाले, राशन वाले को भी लॉकडाउन खुलते ही पैसे देने होगें। पिछले बीस–बाईस सालों का सम्बन्ध है उनका, इसलिए, वे कुछ कह नहीं पा रहे हैं। आखिर, वो करे तो क्या करे..? पिछले लॉकडाउन में भी.. जब संध्या और सुषमा के स्कूल वालों ने कैम्पस केयर (एजुकेशन ऐप) को लॉक कर दिया था तो, मजबूरन उसे जाकर स्कूल की फीस भरनी पड़ी थी। आखिर, स्कूल वाले भी करें तो क्या करें ? उनके भी अपने खर्चे हैं..। बिल्डिंग का भाड़ा, स्टाफ का खर्चा और स्कूल के मेंटेनेंस का खर्चा कोई भी हवा पीकर थोड़ी ही जी सकता है.। आखिर, कहाँ गलती हुई उससे। वो इस देश का नागरिक है। उसे वोट देने का अधिकार है। वो सरकार को टैक्स भी देता है। सारी चीजें उसके पास थीं। पैन कार्ड, राशन कार्ड, वोटर कार्ड, आधार कार्ड लेकिन जिस घर में वो इधर बीस–बाईस सालों से रहता आ रहा था, वो घर ही अब उसका नहीं था। घर भी उसने पैसे देकर ही खरीदा था। उसे ये उसकी कहानी नहीं लगती बल्कि उसके जैसे दस हजार लोगों की कहानी लगती है। मखदूमपुर दस हजार की आबादी वाला कस्बा था। ऐसा शायद दुनिया के सभी देशों में होता है–नकली पासपोर्ट, नकली वीजा, वैध–अवैध नागरिकता। सभी जगह इस तरह के दस्तावेज पैसे के बल पर बन जाते हैं। सारे देशों में सारे मिडिल क्लास लोगों की एक जैसी परेशानी है। ये केवल उसकी समस्या नहीं है बल्कि उसके जैसे सैंकड़ों, लाखों एवं करोड़ों लोगों की समस्या है। बस, मुल्क और सियासतदाँ बदल जाते हैं। स्थितियाँ कमोबेश एक जैसी ही होती हैं। सबकी एक जैसी लड़ाइयाँ बस लड़ने वाले लोग, अलग–अलग होते हैं। जमीन.. जमीन का फर्क है, लेकिन सारे जगहों पर हालात एक जैसे ही हैं। आदित्य का सिर भारी होने लगा और पता नहीं कब वो नींद की आगोश में चला गया। इधर वो सुलेखा और अपनी तीनों बेटियों को अपने ससुर के यहाँ लखनऊ पहुँचा आया था और बहुत धीरे से इन हालातों के बारे में उसने सुलेखा को बताया था। अरे, बाबूजी अब ये रजनीगन्धा के पौधे को छोड़ भी दीजिये। देखते नहीं पत्तियाँ कैसी मुरझा कर टेढ़ी हो गईं हैं। अब नहीं लगेगा रजनीगन्धा। लगता है इसकी जड़ें सूख गई है। बाजार जाकर नया रजनीगन्धा लेते आइयेगा मैं लगा दूँगा। माली ने आकर जब आवाज लगाई तब जाकर आदित्य की तँद्रा टूटी। 'ऊँ.. क्या..चाचा. आप कुछ कह रहे थे..? 'आदित्य ने रजनीगन्धा के ऊपर से नजर हटाई। करीब–करीब बीस–पच्चीस दिन हो गया है उसे नये किराये के मकान में आये। अगल–बगल से एक लगाव जैसा भी अब हो गया है। शिवचरन माली चाचा भी कभी–कभी उसके घर आ जाते हैं। इधर–उधर की बातें करने लगते हैं, तो समय का जैसे पता ही नहीं चलता। मखदूमपुर से लौटते हुए वो अपने अपार्टमेंट में से ये रजनीगन्धा का पौधा कपड़े में लपेटकर अपने साथ लेते आया था। आखिर कोई तो निशानी उस अपार्टमेंट की होनी चाहिए, जहाँ इतने साल निकाल दिये। 'मैं कह रहा था कि बाजार से एक नया रजनीगन्धा का पौधा लेते आना, लगता... है, इसकी जड़ें सूख गईं हैं। नहीं तो, पत्ते में हरियाली जरूर फूटती। देखते नहीं कैसे मुरझा गयी हैं पत्तियाँ ? कुँभलाकर पीली पड़ गईं हैं। लगता है, इनकी जड़ें सूख गई हैं। बेकार में तुम इन्हें पानी दे रहे हो।' 'हाँ चचा, पीला तो मैं भी पड़ गया हूँ। जड़ों से कटने के बाद आदमी भी सूख जाता है। अपनी जड़ों से कट जाने के बाद आदमी का भी कहीं कोई वजूद बचता है क्या..?.. बिना मकसद की जिंदगी हो जाती है। पानी इसलिए दे रहा हूँ... कि कहीं ये फिर, से हरी–भरी हो जाए। एक उम्मीद है, अभी भी जिंदा है..कहीं भीतर और आदित्य वहीं रजनीगन्धा के पास बैठकर फूट–फूट कर रोने लगा। बहुत दिनों से जब्त की हुई नदी अचानक से भरभराकर टूट गई थी और शिवचरन चाचा उजबकों की तरह आदित्य को घूरे जा रहे थे। उनको कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

❐❐❐

... पृष्ठ 32 का शेष...

पत्नी बाहर निकल आई और आश्चर्यभरी नजरों से दयाशंकर की तरफ देखकर पूछा–'' आज तो तुम घर जल्दी लौट आये हो, क्या तरक्की होने पर काम के समय में भी कटौती हुई है.... .....''। पत्नी का मजाक सुनकर दयाशंकर अपनी हँसी को रोक नहीं सका। साइकिल के कैरियर से मिठाई का डिब्बा निकालकर पत्नी के हाथों में देते हुए कहा–'' तुम लोगों को ताजी मिठाई जो खिलानी है। इसलिए दफ्तर से जल्दी निकल आया हूँ ''। पत्नी डिब्बे से भरे लड्डू देखकर खुशी से बोली–'' यह तो बहुत रुपयों की मिठाई है। क्या तुम हमारे लिए पूरे हल्वाई की दुकान खरीद लाये हो.....''। दयाशंकर ने पत्नी की बातों का मजा लेते हुए कहा–'' पूरे पाँच सौ रुपये की है, अगर मैं साहब होता तो तरक्की मिलने पर पूरे पाँच हजार की मिठाइयाँ खरीद लाता. .....। यह सुनकर पत्नी जोरों से हँस पड़ी और दयाशंकर भी। इतने जोरों से कि दयाशंकर की आँखें भर आई। उसने अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश की पर वह बाहर निकल ही आया। बच्चे लड्डू बड़े मजे से खा रहे थे और नाच रहे थे।

❐❐❐

बादाम

डॉ. रंजना जायसवाल*

कहानी

घड़ी जितनी तेजी से आगे बढ़ रही थी उतनी ही तेजी से श्रद्धा के हाथ...घर में तूफान सा मचा हुआ था। मशीन की तरह कामों को निपटाती श्रद्धा के हाथ न जाने कुछ सोचकर रुक गए, 'मेरी टाई कहाँ है और वो सफेद मोजे कहाँ रख दिये हैं, काले जूते पर वही अच्छे लगते हैं।' 'सब वहीं बिस्तर पर ही तो है' श्रद्धा रितेश की बात का जवाब देते–देते कमरे तक आ गई, 'एक काम नहीं कर सकते आप... सब कुछ तो सामने रखा है पर दिखे तब न... 'रितेश सोच रहे थे सचमुच श्रद्धा न हो तो उनका क्या होगा, एक तो उनकी यादाश्त वैसे ही अच्छी नहीं थी। जब से उससे शादी हुई थी, एक–एक चीज का ध्यान वह ही तो रखती थी। बिजली का बिल हो या बच्चों की फीस, इंश्योरेंस हो या फिर ई एम आई की किश्तें सब उसे उंगलियों पर याद रहते। 'सुनते हो जी...' 'क्या है जल्दी बोलो, मुझे ऑफिस के लिए देर हो रही।' रितेश ने जूते के फीते बाँधते हुए कहा 'ठीक कह रहे हैं, बेटे को कॉलेज के लिए आपको ऑफिस के लिए देर हो रही है, एक मैं ही हूँ जिसे किसी बात के लिए देर नहीं होती।' पता नहीं क्यों श्रद्धा आज उखड़ी–उखड़ी सी लग रही थी, उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर रितेश के हाथ टाई बाँधते–बाँधते रुक गए। 'क्या हुआ मोहतरमा आज मूड कुछ ठीक नहीं लग रहा।' 'आज दीदी की शादी की सालगिरह है, आपको तो कुछ याद ही नहीं रहता। घर देखूँ, रिश्तेदारी निभाऊँ या आप लोगों के नखड़े उठाऊँ... गलती से बधाई देना भूल जाओ तो उसका ताना भी आप मुझे ही देंगे और कल दीदी का दनदनाते हुए फोन आ जाएगा। एक ही ननद है और उसका भी जन्मदिन, सालगिरह याद नहीं रहता। तुम्हारे जीजा जी के सामने कितनी शर्मिंदगी उठानी पड़ती है। बच्चे भी अब बड़े हो गए हैं, वह भी पूछ बैठते हैं मामा–मामी का फोन आया था या नहीं।' 'दीदी ने कुछ गलत तो नहीं कहा... वैसे भी तुम दिन भर करती क्या हो।' रितेश ने चुटकी लेते हुए कहा... उनका शरारत से भरा चेहरा देखकर श्रद्धा सुलग गई, रितेश जानते थे श्रद्धा को इस एक वाक्य से 'कि तुम दिन भर करती क्या हो' से कितनी कोफ्त होती थी।

'सबकी जिम्मेदारी मेरी ही है न... बुढ़ाने को आ गई, दो–चार साल में बहू भी आ जाएगी पर जन्मदिन–सालगिरह पर फोन न पहुँचे तो ताना मारने से बाज नहीं आती। अब तो मैं भी नई–नवेली बहू नहीं रही, मेरे बेटे भी बड़े हो गए हैं। मेरे ऊपर भी न जाने कितनी जिम्मेदारियाँ हैं पर एक फोन नहीं किया तो ऐसी आफत आ जाएगी मानो एलिजाबेथ के जन्मदिन पर बधाई देने से रह गया।' श्रद्धा कहते–कहते रुआँसी सी हो गई, श्रद्धा कुछ गलत तो नहीं कह रही थी। रितेश भी यह बात अच्छी तरह से जानते थे। मधु दीदी रितेश से बड़ी थीं पर रितेश भी अब छोटे तो नहीं रह गए थे। बालों में सफेद चाँदनी झलकने लगी थी। वक्त के साथ व्यवहार में गंभीरता की जगह उनके अंदर बचपना और दिखावा ज्यादा बढ़ गया था। सबकी अपनी–अपनी जिंदगी है, अपनी–अपनी जिम्मेदारियाँ हैं हर आदमी अपनी तरफ से रिश्ते निभाने का प्रयास करता ही है पर दीदी का इस तरह का व्यवहार घुटन से भर देता था। रितेश जानते थे इन छोटी–छोटी बातों के लिए भी श्रद्धा को ही जिम्मेदार माना जाता है, वो तो पुरुष और नौकरी–पेशा होने का नाम पर बाइज्जत बरी हो जाता है पर श्रद्धा रिश्तों की सूली पर हर बार चढ़ा दी जाती है। 'ये काम औरतों का है, पुरुषों से क्या मतलब...परिवार के नाम पर गिनती की एक ननद है और उसके परिवार के सुख–दुख के बारे में भी सोच न सके तो क्या फायदा...भाई और बच्चे सुबह ही कॉले और ऑफिस के लिए निकल जाते हैं। आखिर श्रद्धा दिन भर करती ही क्या है।' रितेश जानते थे इन सब बातों से उसका मन खट्टा हो जाता था। दीदी की सालगिरह उनके बच्चों का जन्मदिन या फिर तीज–त्यौहार इन सब मौकों पर शुभकामनाएँ या बधाई देना उसके लिए सिर्फ एक औपचारिकता ही रह गई थी, भाव जैसी चीज तो न जाने कहाँ गुम हो गई थी। वह घर में किसी तरह का कोई बवाल नहीं चाहती थी, शायद इसीलिए वह उसे काम की तरह ही मानती और निपटाती थी। आखिर इंसान तो वह भी थी, मन तो उसका भी दुखता ही था, कभी–कभी बहुत दुखी होकर वह कहती भी...'आखिर यह कैसे रिश्ते हैं जो अपनों की मजबूरी को समझ न सके। दीदी खुद भी कितनी बार हम लोगों के जन्मदिन को भूल जाती हैं पर हमने तो उनसे कभी कोई शिकायत नहीं की। यह सोचकर चुप हो जाते हैं कि हो सकता हो व्यस्त हो, किसी काम में लगी हो भूल गई हो। क्या खून के रिश्ते इस तरह की शुभकामना और बधाई के मोहताज हैं। अगर किया तो ठीक नहीं किया तो प्रेम के वो धागे एक झटके से टूट जाएंगे। स्नेह का धागा और संवाद की सुई उघड़ते कमजोर पड़ते रिश्तों की तुरपाई कर देते हैं पर हमारी जरा सी अनदेखी जरा सी उपेक्षा उस सियन को एक–एक कर खोल देती है। 'श्रद्धा की आवाज से रितेश अपने सोच के दायरे

*लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही, मिर्जापुर–231001, उत्तर प्रदेश

से बाहर निकल आए, 'रितेश ! गैस सिलेंडर खत्म हो गया है, आपसे कई बार बुक कराने के लिए कह चुकी रहूँ पर आपको तो कुछ ध्यान ही नहीं रहता। दीदी को फोन अभी करना है या शाम को वरना वो फिर.....'

रितेश के माथे पर बल पड़ गए, एक हफ्ते से श्रद्धा उसे गैस बुक कराने के लिए याद दिला रही थी पर वो...'अरे यार ! एक ही बात कितनी बार कहोगी, याद है मुझे बस आजकल ऑफिस में कुछ ज्यादा काम था, समय नहीं मिला। ऑफिस का काम करूँ या फिर तुम्हारा...मेरे पास सिर्फ एक यही काम थोड़े रह गया है। ऐसा करो लंच टाइम के समय याद दिला देना, मैं गैस बुक कर दूँगा।' श्रद्धा के चेहरे पर न जाने क्यों एक बच्चे की तरह शरारत उभर आई, 'अभी याद दिलाया न, वैसे भी आपको तो याद ही था। मैं भी कितना याद दिलाऊँ मेरे पास सिर्फ एक यही काम थोड़े रह गया है।' 'मैं ऑफिस जाता हूँ, वहाँ तुम्हारी दाल–रोटी का हिसाब करने नहीं, खुद कर लिया करो।' श्रद्धा ने एक छोटा सा मजाक भर ही तो किया था पर रितेश न जाने क्यों उखड़ गए, 'तुम औरतों के साथ यही दिक्कत है, हर चीज के लिए सर पर सवार रहती हो।' श्रद्धा की आँख में आँसू छलक आए, यह पुरुष इतने दम्भी क्यों होते हैं। इंसान तो मैं भी हूँ भूल तो मैं भी सकती हूँ पर मेरी भूल भूल नहीं...मुझे तो गलती से भी गलती करने का हक नहीं। जब तक दीदी को सालगिरह की बधाई नहीं दे देंगे तब तक उसकी साँस यूँ ही अटकी रहेगी, दिन भर दिमाग में यही चलता रहेगा कि अभी दीदी को बधाई नहीं दी है। हर बार यही तो होता था वो रितेश के पीछे–पीछे दौड़ती रहती और वह अपने भूलने की आदत के नाम पर हमेशा बच निकलते। कभी–कभी लगता कि सचमुच उन्हें याद नहीं रहता या वह जानबूझकर ऐसा करते हैं, माँ कहती थी कि बादाम खिलाया कर यादाश्त अच्छी होती है। कितने डिब्बे बादाम भी खिला दिए पर बात वहीं की वहीं... एक बार रितेश ने मजाक में कहा भी था 'इंसान की बुद्धि बादाम खाने से नहीं ठोकर खाने से आती है' पर ऐसी ठोकर शायद उन्होंने कभी सोचा भी न होगा।

जिंदगी बस यूँ ही चलती जा रही थी, बेटे अपने बेहतर भविष्य की तलाश में दूसरे शहर में बस गये और इस घर में कहने के लिए सिर्फ दो प्राणी ही रह गए रितेश और श्रद्धा... आज भी उन दोनों के बीच ऐसी ही नोंक–झोंक हुआ करती थी पर रितेश अब वह पहले वाले रितेश नहीं रह गए थे। दिन भर घर के कामों से जूझती श्रद्धा के साथ अब वो भी हाथ बँटा दिया करते थे पर भूलने की आदत....! बड़ा बेटा विदेश जो गया तो उसने कभी पलट कर भी नहीं देखा पर छोटा वो तो देश में ही था। दो–दो साल बीत जाते बेटा घर नहीं आता, 'माँ आने का तो बहुत मन है पर बहुत इंपॉर्टेंट प्रोजेक्ट मिला है मेरा प्रमोशन उसी पर निर्भर करता है। 'रितेश और श्रद्धा अपने बेटे के सपनों के पंखों की जान बनना चाहते थे, उन्हें कतरना नहीं चाहते थे पर कहीं न कहीं वो ये भी चाहते थे उनकी ये उड़ान अकेले न हो वे भी उस उड़ान में शामिल हो। शुरू–शुरू में तो बच्चों के फोन भी आया करते थे पर धीरे–धीरे उनके फोन भी आने बंद हो गए। इन दस सालों में कुछ बदला या नहीं बदला पर एक बात जरूर बदली गई थी। 'श्रद्धा ! दोपहर होने को आ रही है और तुम्हें लाडले का जन्मदिन भी याद नहीं, वह हमारे फोन का इंतजार कर रहा होगा। सुबह से कितनी बार याद दिला चुका हूँ पर तुम्हें तो अपने कामों से फुर्सत नहीं है।' वो चुप थी क्योंकि हमेशा सब कुछ कह देना ही जरूरी नहीं होता कभी–कभी चुप रहना भी बहुत कुछ कह जाता है। वैसे भी क्या कहती वो... कि उनका लाडला तो कल रात में ही अपनी बर्थडे पार्टी सेलिब्रेट कर चुका है। सोशल नेटवर्क पर पार्टी की तस्वीर अपनी दास्तां बयाँ कर रही थी। हाथों में शराब की बोतल और दोस्तों से घिरा उनका लाडला जो बचपन में बड़ी मुश्किल से दूध की बोतल हाथ में पकड़ता था, उसके हाथों में शराब की बोतल, सिगरेट के छल्ले और नशे में धुत देखकर उसका मन न जाने कैसा–कैसा हो गया था। रितेश के सोकर उठने से पहले ही तो उसने उसे फोन किया था, उसके नौकर ने बताया था, 'मेमसाहब तीन बजे तक पार्टी चली है। साहब अभी तक गहरी नींद में सो रहे हैं। साहब बारह–एक बजे से पहले नहीं जागेंगे।' विशाल का वो गवई नौकर श्रद्धा से यह भी नहीं कह पाया कि उनका बेटा किस वजह से गहरी नींद में सो रहा है शायद वह एक माँ का दिल दुखाना नहीं चाहता। श्रद्धा के चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान थी, उसका बेटा किस वजह से गहरी नींद में था वो समझ चुकी थी। यह वही बच्चे थे जिनके बचपन में वो दोनों पति–पत्नी बच्चे बनकर जीना सीख रहे थे, न जाने कब ये बच्चे बड़े हो गए पर वे वहीं के वहीं रह गए। श्रद्धा सोच रही थी, बच्चे हमें बच्चा बनाकर छोड़कर कितने दूर चले गये। बच्चों की एक–एक पसंद रितेश को उंगलियों पर याद थी। याद है उसे जब यही बच्चे उनका मजाक बनाया करते थे, 'माँ न हो तो पापा को तो हमारा जन्मदिन भी याद नहीं रहता, किसे क्या पसंद है यह तो उन्हें पता भी नहीं होगा।' कभी–कभी मन करता कि जोर से चीखूँ और उन्हें बताऊँ देखो, तुम गलत थे तुम्हारे पापा को सब कुछ याद रहता था बस वो तुम्हारी माँ की तरह अपने प्यार को तुम्हारी पसन्द के खाने, आँखों में आँसू, प्यार की थपकियों, नींद की लोरियों, मंदिर में मन्नतों और तुम्हारे लिए निर्जला व्रत में भूखे–प्यासे रहकर के जता नहीं पाते पर तुमने भी तो अपनी ब्रांडेड शर्ट और स्टाइलिश जूतों की माँग के

बीच जतन से इकट्ठा की हुई पूँजी के पीछे रितेश की फटी हुई बनियान और अपने पिता के चार साल से घिसे जूतों को नहीं देखा। तुम्हें उस महँगी बाइक को दिलाने के लिए वे वर्षों तक उस खड़–खड़िया स्कूटर को खींचते रहे, क्या तुम इस चीज को कभी देख पाये। ऐसा कोई दिन नहीं होगा जब उन्होंने तुम्हें याद न किया हो। तुम्हारी पैदाइश के वक्त पचास कदम की गलियारें में डेढ़ घण्टे तक तुम्हारे वजूद की पुष्टि के लिए तरसते हुए उनके कान आज भी सिर्फ उस कल्पना मात्र से खुशी से खिल उठते है। पहली बार तुम्हें स्कूल के लिए छोड़ते वक्त डर से उनका कलेजा मुँह को आ रहा था, तुम्हारी छोटी–छोटी आँखों में मोटे–मोटे आँसू देखकर उनका कलेजा कटकर रह गया था। हरदम उनकी उंगली पकड़ कर चलने वाला उनके जिगर के टुकड़े को भरी दुनिया में यूँ अजनबियों के बीच छोड़ना जाना उनके लिए कभी आसान नहीं था। तुम्हारे आँखों के सपनों को उन्होंने कब अपना मान लिया, ये तुम्हे पता भी नहीं चला। तुम्हारे सोचने से पहले बाजार से किताबें खरीदकर घर में आ जाती। बोर्ड के इम्तिहान के समय स्कूल के बीच पड़ने वाले हर मंदिर के सामने हाथ जोड़कर उस परमपिता से प्रार्थना भी तो उन्होंने ही की थी। याद है मुझे आज भी वो दिन उस दिन इंजीनियरिंग की परीक्षा का परिणाम आने वाला था, रितेश की उंगलियाँ और आँखें जितनी तेजी से अखबार के पन्नों पर तुम्हारे अनुक्रमांक को ढूँढती हुई रेंग रही थी, उतनी ही तेजी से बीच–बीच में तुम्हारे चेहरे पर उठते–गिरते भावों के ज्वार–भाटा को पढ़ने की कोशिश भी कर रही थी, उस दिन सिर्फ तुमने इंजीनियरिंग की परीक्षा पास नहीं की थी, रितेश भी सफल हुए थे वो भी तुम्हारे साथ बने थे इंजीनियर रितेश कुमार...तुम्हारी पदोन्नति के साथ सिर्फ अकेले तुम खुश नहीं हुए थे बल्कि मैंने भी उनके झुर्रिदार गालों पर खुशी के गुलाब खिलते देखे थे पर आज बच्चे उनसे कितने दूर हो गए थे। वो कहते हैं पापा को कुछ याद नहीं रहता, कोई उन्हें जाकर बताओ, उनके पसंद के लड्डू, मठरी, गजक, मिठाइयाँ उनकी माँ नही उनके पिता ही श्रद्धा से आग्रह कर–करके बनवाते और कोरियर करते है। श्रद्धा रितेश से कभी ये भी न कह पाई कि पिज्जा और बर्गर खाने वाले उनके लाडले को ये सब चीजें ऑयली, फुल कैलोरी और ऑउट डेटेड लगती है। 'माँ कौन खाता है ये सब... तुम ये सब मत भेजा करो। मेरे पास समय नहीं ये सब खाने का और न ही मुझे पसन्द है, रामदीन ही खाता है।' श्रद्धा यह बात कभी भी नहीं कह पाई कि यह सारी चीजें वो नहीं उसके पापा भेजते हैं और न ही यह बात वह रितेश से कह पाई कि प्यार से भेजी गई उनकी सौगात नौकरों के हाथ लगती है, उनका लाडला तो इसे छूता भी नहीं। वह रितेश का भ्रम तोड़कर उनका दिल नहीं दुखाना चाहती थी। बच्चे सोचते हैं जब वो छोटे थे तब वे थे, वक्त था पर पापा नहीं थे, आज रितेश थे, वक्त भी था पर बच्चे नहीं। कल ऐसा न हो कि कल वक्त हो, बच्चे हो पर हम न हो। आज बच्चों को जीवन का सफर इतना आसान लगता है, वो सिर्फ उनकी मेहनत की वजह से नहीं बल्कि उसमे पिता का संघर्ष और माँ की दुआयें भी शामिल हैं। आज बच्चों का जीवन इंद्रधनुषी रंगों से भरा है पर आज बच्चों के बिना उनके माता–पिता के जीवन मे कोई रंग नहीं है बस दूर–दूर तक उदासी पसरी हैं। श्रद्धा यही सोचती रहती जवानी के दिनों में इस यादाश्त को लेकर उन दोनों में कितने झगड़े होते थे। आज वह चाहती थी कि जवानी के वह दिन फिर से वापस आ जाए रितेश फिर से चीजे भूलने लगे और वह उन्हें याद दिलाए पर उतना ही... जितना उन्हें वो बातें दुख न पहुँचाये पर शायद बादाम का कमाल उसे अब दिखने लगा था।

❐❐❐

बचपन की यादें

काव्य-कोना

रामप्रीत*

बचपन का था एक जमाना,
जिसमें था खुशियों का खजाना।
चाँद को पाने की थी चाहत,
पर दिल था तितली का दिवाना।
न थी कुछ सुबह की खबर,
न था शाम का ठिकाना।
स्कूल से थककर आना,
पर खेलने भी था जाना।
बारिश में बनाते कागज की नाव,

हर मौसम था सुहाना।
हर खेल में थे साथी,
हर रिश्ते को था निभाना।
वजह नहीं थी रोने की,
नहीं था हँसने का बहाना।
हम सब क्यूँ हो गये इतने बड़े,
अच्छा तो था वो बचपन का जमाना।

❐❐❐

*प्रक्षेत्र सहायक, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल

डॉ. राजीव गुप्ता*

काव्य-कोना

हँसें ओस की बूँद

पत्तो पर मोती बनी, हंसें ओस की बूँद,
कलियाँ शरमाई खड़ी, अपनी आँखें मूँद।

बगिया में जब से खिला, पीला एक गुलाब,
बेला ने हँसकर कहा, मैं बीबी वह साहब।

नई कली को देखकर, भँवरे हैं बेचैन,
चोरी–चोरी सुबह से, मिला रहे हैं नैन।

धड़कन दिल की बढ़ गई, है भवरों की आज,
कलियाँ जब से लग रही, उनसे कुछ नाराज।

सरसों थोड़ी हँस पड़ी, बाली दी मुस्काए,
खाना लेकर जब चली, भाभी खेतों माए।

❐❐❐

हुई प्यार की जीत

पीले पत्ते झड़ गए, रहीं कोंपले फूट,
नाश और नव–सृजन का, रिश्ता बड़ा अटूट।

जीवन विष का घूँट है, जीवन अमृत पान,
जैसे जिसने है जिआ, जैसी की पहचान।

बरिये दीपक ज्ञान का, जाए अँधेरा दूर,
सबकी आँखें में दिखे, एक ज्ञान का सूर।

घृणा की बदरी छँटी, हुई प्यार की जीत,
आखिर काँटों ने रचा, एक फागुनी गीत।

जीवन बहता हुआ जल, क्या समझाऊँ और,
आज खड़ा हूँ मैं यहाँ, कल जाऊँ किस ठौर।

❐❐❐

*5/11, बागकूँचा, फर्रुक्खाबाद – 209625 (उ.प्र.)

पाठकों की प्रतिक्रिया

हिंदी पत्रिका "रेशमवाणी" के 53–54 (संयुक्तांक) की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। हिन्दी पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज–सज्जा हमेशा की तरह अत्यन्त आकर्षक एवं मनोरम हैं। हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियाँ और कविताएँ पठनीय, उत्कृष्ट, एवं प्रासंगिक हैं। श्री राजेन्द्र परदेसी द्वारा लिखित लेख – "युगानुभूति के चितेरे मैथिलीशरण गुप्त", श्री ओम प्रकाश मंजुल द्वारा लिखित लेख – "कुछ अक्षर अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में", सुश्री चक्रपाणि द्वारा लिखित तकनीकी आलेख – "तसर खाद्य पौधों पर जैविक खाद का प्रभाव", श्री देवांशु पाल द्वारा लिखित कहानी "खिड़की से पार झाँकती जिन्दगी" तथा कविता के क्षेत्र में डॉ. राजीव गुप्ता द्वारा लिखित कविता– "नेहा भरा अनुबंध", प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय द्वारा लिखित कविता "एक औरत का रोजनामचा", एवं अन्य सभी रचनाएँ भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ और शुभेच्छाएँ है।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशा.), कार्यालय, महा निदेशक लेखा परीक्षा (इस्पात), राँची।

रेशम वाणी का संयुक्तांक (2021) को पढ़ने का मौका मिला, आभार। राँची तसर संस्थान मेरी मात्र संस्था है। यदा–कदा जब भी मुझे इंटरनेट के माध्यम से इस संस्थान की रचनात्मक प्रगति का कोई संदेश मिलता है, पढ़कर प्रसन्नता होती है। मेरी मात्र संस्था प्रगति कर रही है और करती रहे। रेशम वाणी गागर में सागर है जिसमें वैज्ञानिक, तकनीकी आलेखों से लेकर हिन्दी साहित्य का भी समावेश है। डॉ. जितेन्द्र सिंह द्वारा लिखित वैज्ञानिक लेख सड़क निर्माण एवं प्रदूषण तथ्यों पर आधारित है। इस पत्रिका में उत्तर–पूर्वी हिमालय राज्य का मनोरम चित्रण बिहू आसाम का प्राणोत्सव है तो दूसरी ओर उत्तर–पश्चिम की देव भूमि से राष्ट्रीय भावनाओं को संयोए आजादी का अमृत महोत्सव पर अनीस अहमद खान की कविता भी पूरे भारत को रेशमी धागों में पिरोते रेशम वाणी के सम्पादक मंडल को बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

सत्यभान सारस्वत, पूर्व संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, देहरादून।

आपके द्वारा प्रेषित रेशम वाणी संयुक्तांक 53–54 समय पर मिली; आभार। आपका संस्थान तसर रेशम के विकास में सतत् योगदान दे रहा है और प्रकाशंतर से देश की अर्थ व्यवस्था को मजबूती भी, जो प्रशंसनीय है। प्रशिक्षण और अनुसंधान की जानकारियाँ पत्रिका में प्रकाशित तकनीकी लेखों से हमें मिलती रहती है। इस महती कार्य के अलावा आप राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी सतत् सेवा कर रहे हैं तथा इसके विकास, प्रसार–प्रचार में पूरे लगन से लगे हुए हैं जो सराहनीय है। पत्रिका में चयनित रचनाएँ स्तरीय तो हैं ही, जानकारियों से भी भरी हैं। 'बिहू' के विषय में हममें से अधिकतर जानते हैं किन्तु बिहू–असम का प्राणोत्सव आलेख बहुत विस्तार से हमें इसकी जानकारी उपलब्ध कराता है जो अत्यंक दुर्लभ है। स्वतंत्रता संग्राम में झारखण्ड के योगदान भी इसकी श्रेणी में है। परफ्यूम की शीशी एक अच्छा व्यंग्य लेख है। औरत की जिन्दगी अमूमन वैसी ही होती है जैसा 'एक औरत का रोजनामचा' में कवि ने व्यक्त किया है। खराब पर्यावरण और प्रदूषण का हमारे वातावरण पर बहुत बुरा असर होता है जिसकी बानगी श्री मोहन दत्त तिवारी के आलेख में परिलक्षित होती है। मैथिलीशरण गुप्त पर श्री राजेन्द्र परदेसी एवं कुछ अक्षर अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में आलेख भी सुन्दर है। मन में उठते द्वंद्व और एक बुजुर्ग की स्थिति कैसी हो सकती है तथा व्यक्ति क्या–क्या सोचने लगता है इसकी झलक खिड़की से पार झाँकती जिन्दगी में मिलती है। आप सतत् विकास पथ पर बढ़ते रहें इन्हीं कामनाओं के साथ।

नवीन कुमार सिन्हा, फ्लैट सं.2–सी, अंजली अपार्टमेंट, हातमा, काँके रोड, राँची–834008

रेशमवाणी का संयुक्तांक 53–54 (जून, 2021–दिसंबर, 2021) मिला। सामाजिक विषमता की युगानुभूति के कवि मैथिलीशरण गुप्त के विषय में *राजेन्द्र परदेसी* का आलेख आज के जातिगत बंटवारे के पूर्वानुमान पर आधारित अति उत्तम आलेख है। अनुवाद की बारीकियों पर आधारित *ओम प्रकाश 'मंजुल'* का आलेख ध्यान खिंचता है। देवांशु पाल की कहानी *खिड़की से पार झांकती जिन्दगी* अच्छी लगी। कोरोना ग्रसित मरीजों का जीवन बहुत कष्टमय और नाटकीय ढ़ंग से बिता, इस विषयक नवीन कुमार सिन्हा का व्यंग्य पढ़कर कोरोना दौर की याद आ गई। पर्यावरण को लोग धरती, जंगल, नदी, पहाड़, हवा, पानी आदि से जोड़ कर देखते हैं, मगर प्रतिमा कुमारी ने इससे जुड़े लोगों के आस–पास के घरेलू पक्ष को उजागर किया है। तकनीकी आलेखों की रोचक प्रस्तुति बेहतर और स्वीकार्य हैं। केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा सम्मानित किए जाने के समाचार से खुशी हुई। संस्थान से जुड़े सभी लोगों को बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनाएँ।

अंकुश्री, 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल, नामकुम, राँची

'रेशम वाणी' का जून, 2021–दिसम्बर, 2021,संयुक्तांक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अच्छा लगा। अंक में उद्यम, भाषा और साहित्य की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। साहित्यकारों एवं उद्योग कर्मियों दोनों को कृतज्ञेण श्रेयप्रदायी संतुलित, 'संपादकीय' स्वाभाविक रूप से मन को अच्छा लगने वाला है। रेशम उद्योग से संदर्भित सारे ही लेख न केवल सारगर्भित, तथ्यनिष्ठ एवं उपयोगी हैं, अपितु उनकी विशुद्ध हिंदीवादिता को देखकर उनमें शुद्ध हिंदी के प्रयोग का प्रबल आग्रह अनुभूत होता है। श्री राजेन्द्र परदेसी का लेख, 'युगानुभूति के चितेरे मैथिलीशरण गुप्त' गुप्त जी की काव्य–प्रवृतियों का यथार्थपरक प्रतिनिधित्व करता है। स्वतंत्रता संग्राम में प्राणों की आहुति देने वाले झारखंड के शहीदों की याद दिलाने वाला, श्री अंकुश्री का लेख,'स्वतन्त्रता संग्राम में झारखंड का योगदान' अच्छा लेख है। श्री मोहन दत्त तिवारी का लेख,'पर्यावरण प्रदूषण का हमारे वातावरण पर प्रभाव' उपयोगी लेख है। पर, अंक में सर्वाधिक उपयोगी रचना, सुश्री प्रतिमा कुमारी की 'पर्यावरण सुरक्षा के घरेलू नुस्खे' है। सुश्री सविता दास सवि के लेख, 'बिहू–असम का प्राणोत्सव', जिसमें असम के लोकप्रिय लोकोत्सव, बिहू का सांगोपांग वर्णन है, शीर्षक से सामग्री और भाव से भाषा तक, एक प्रशंसनीय आलेख है। पर, कहानी और व्यंग्य दोनों ही विधाओं की रचनाएँ अपनी छाप छोड़ने में असफल रही हैं। 'खिडकी से पार झांकती जिंदगी––––' में शीर्षक के अतिरिक्त पाठकों को चमत्कृत करने वाला कुछ भी नहीं है। ऐसे ही,'परफ्यूम की शीशी' एक सामान्य व्यंग्य कहा जा सकता है। मुझे यह कहने में बिल्कुल संकोच नहीं है, कि काव्य के क्षेत्र में अंक नितांत निशक्त है। हालाँकि रचनाओं में समसामयिक विविध विषयों को स्पर्श किया गया है, तथापि अधिकतर प्रयास कविता तो दूर सशक्त तुकबंदी भी नहीं कहे जा सकते। (हालांकि हिंदी के प्रचार और प्रेरणा को कृतसंकल्प किसी पत्रिका में ऐसी रचनाओं का छापा जाना भी उतना ही प्रासंगिक, आवश्यक और उपयोगी है।) कुल मिलाकर हिंदी के प्रयोग–प्रचार की दृष्टि से यह सराहनीय अंक है। बधाई।

ओम प्रकाश 'मंजुल', प्रधानाचार्य, कामायनी काय स्थान, पूरनपुर–262122, जिला–पीलीभीत (उ.प्र.)

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका रेशम वाणी, अंक 53–54 के विमोचन का एक दृश्य।

संस्थान में आयोजित अमृत महोत्सव कार्यक्रम की अध्यक्षता करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण। कार्यक्रम में मुख्य के अतिथि के रूप में नगड़ी प्रखण्ड के प्रखण्ड पदाधिकारी सुश्री नूतन कुमारी उपस्थित थीं।

संस्थान में आयोजित अमृत महोत्सव कार्यक्रम का एक दृश्य।

संस्थान में आयोजित अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची के साथ तसर क्षेत्र में अनुसंधान एवं विस्तार पर समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किए गए।

संस्थान में आयोजित अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक में तसर विकास संघ, देवघर के साथ तसर क्षेत्र में अनुसंधान एवं विस्तार पर समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किए गए।

संस्थान में आयोजित संयुक्त समन्वय समिति (जेसीसी) की अध्यक्षता करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.व.से. साथ में हैं हस्तकरघा, हस्तशिल्प एवं रेशम, झारखण्ड सरकार की निदेशक आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से. एवं संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान भ्रमण पर आये वस्त्र मंत्रालय के सचिव श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, भा.प्र.से. द्वारा तसर धागा का अवलोकन। साथ में हैं केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव, श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.व.से. एवं संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

वस्त्र मंत्रालय के सचिव श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, भा.प्र.से.ने संस्थान में बनाये जा रहे मशरूम लैब का निरीक्षण किया।

वस्त्र मंत्रालय के सचिव श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, भा.प्र.से. को बी.एण्ड जी. अनुभाग के प्रभारी द्वारा विभिन्न प्रकार के तसर कोसा के बारे में जानकारी दी गई।

वस्त्र मंत्रालय के सचिव श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, भा.प्र.से., केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव, श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.व.से., बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ओंकार नाथ सिंह एवं संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण के साथ संस्थान के अन्य अधिकारी/कर्मचारी।

संस्थान में आयोजित अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक की अध्यक्षता करते प्रो. ओंकार नाथ सिंह, कुलपति, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राँची।

संस्थान द्वारा प्रकाशित तकनीकी बुलेटिनों के विमोचन का एक दृश्य।